रा० बा०
१

॥ ६० ॥ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीरामकृष्णाभ्यां नमः ॥ अथ रामचरित्र स्वामी तुलसीदासकृत लिष्यते ॥ वर्णानामर्थसंघानां रसानां छंदसा
मपि ॥ मंगलानां च कर्त्तारौ वंदे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥ भवानीशंकरौ वंदे श्रद्धाविस्वासरूपिणौ ॥ याभ्यां विना न पश्यंति सिद्धाः स्वांतस्थमीस्वरं ॥ २ ॥ वं
दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणं ॥ यमाश्रितो हि वक्रोपि चंद्रः सर्वत्र वंद्यते ॥ ३ ॥ सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ ॥ वंदे विशुद्धविज्ञानौ कवी
स्वरकपीस्वरौ ॥ ४ ॥ उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीं ॥ सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोहं रामवल्लभां ॥ ५ ॥ यन्मायावशवर्त्तिविश्वमखिलं ब्र
ह्मादिदेवासुरा यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ॥ यत्पादप्लवमेकमेव हि भवांभोधेस्तितीर्षावतां वंदेहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिं
॥ नानापुराणनिगमागमसंमतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोपि ॥ स्वांतः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथाभाषानिबंधमतिमंजुलमातनोति
॥ ७ ॥ सोरठा ॥ जो सुमिरत सिधि होइ गणनायक करिवरवदन ॥ करौ अनुग्रह सोइ बुधिरासि सुभगुणसदन ॥ १ ॥ मूक होइ वाचाल पंगु चढै गि
रिवर गहन ॥ जासु कृपा सो दयाल द्रवौ सकल कलिमलदहन ॥ २ ॥ नील सरोरुह स्याम तरुण अरुण वारिजनयन ॥ करौ सो मम उर धाम राम
सदा छीरसागर शयन ॥ ३ ॥ कुंद इंदु सम देह उमारमण करुणायतन ॥ जाहि दीन पर नेह करौ कृपा मर्दनमयन ॥ ४ ॥ वंदौ गुरुपदकंज कृ १
पासिंधु नररूप हरि ॥ महामोह तमपुंज जासु वचन रविकरनिकर ॥ ५ ॥ चौ० ॥ वंदौ गुरुपदपद्मपरागा ॥ सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ॥
अमीयमूरिमय चूरण चारू ॥ समन सकल भवरुजपरिवारू ॥ सुकृत शंभुतन विमल विभूती ॥ मंजुल मंगलमोदप्रसूती ॥ जनमन मंजुमु

करमलहरणी॥ कियेंतिलकगुणगणवसकरणी॥ श्रीगुरुपदनखमणिगणजोती॥ सुमिरतदिव्यदृष्टिहियहोती॥ दलनमोहत
मसोमप्रकासू॥ वडेभागउरआवतजासू॥ उघरहिविमलविलोचनहीके॥ मिटहिदोषदुषभवरजनीके॥ सूझहिंरामचरितमणिमाणिक
क॥ गुप्तप्रगटजहांजोजेहिखानिक॥ दोहरा॥ यथासुअंजनअंजदृगसाधकसिद्धसुजान॥ कौतकदेषतशैलवनभूतलभूरिनिधान॥
चौपई॥ गुरुपदरजमृदुमंजुलअंजन॥ नयनअमीदृगदोषविभंजन॥ तेहिकरविमलविवेकविलोचन॥ वरणौरामचरितभवमोचन॥ वंदौ
प्रथममहीसुरचरणा॥ मोहजनितसंशयसवहरणा॥ सुजनसमाजसकलगुणखानी॥ करौंप्रणामसुप्रेमसुवानी॥ साधुचरितसुभ
चरितकपासू॥ निरसविसदगुणमयफलजासू॥ सोसहिदुखपरिछिद्रदुरावा॥ वंदनीयजेहिजगजसपावा॥ मुदमंगलमयसंतसमा
जू॥ जोजगजंगमतीर्थराजू॥ रामभक्तिजहांसुरसरिधारा॥ सरस्वतिब्रह्मविचारप्रचारा॥ विधिनिषेधमयकलिमलहरणी॥ कर्मक
थारविनंदनिवरणी॥ हरिहरकथाविराजतवेनी॥ सुनतसकलमुदमंगलदेनी॥ वटविश्वासअचलनिजधर्मा॥ तीर्थराजसमाज
सुकर्मा॥ सवहिसुलभसवदिनसवदेसा॥ सेवतसादरसमनकलेसा॥ अकथअलौकिकतीरथराऊ॥ देइसर्वफलप्रगटप्रभाऊ
दोहरा॥ सुनिसमुझहिजनमुदितमनमज्जहिंअतिअनुराग॥ लहहिचारिफलअछततनसाधसमाजप्रयाग॥ चौ०॥ मज्जनफ
फलपेषियततकाला॥ काकहोइपिकवकहुमराला॥ सुनिआश्चर्यकरैजिनिकोई॥ सतसंगतिमहिमानहिगोई॥ वालमीकनारदघट

रा० बा० जोनी॥ निजनिजमुखनिकहीनिजहोनी॥ जलचरथलचरनभचरनाना॥ जेजडचेतनजीवजिहाना॥ मतिकीरतिगतिभूतिभलाई॥
२ जवजिहिजतननजहाजिहिपाई॥ सोजाननसतसंगप्रभाऊ॥ लोकहुवेदनआंनउपाऊ॥ विनुसतसंगविवेकनहोई॥ रामकृपाविनुसुल
भनसोई॥ सतसंगतिमुदमंगलमूला॥ सोईफलसिधिसवसाधनफूला॥ सठसुधरहिसतसंगतपाई॥ पारसपरसकुधातसुहाई॥ विधिव
ससुजनकुसंगतिपरहीं॥ फनिमनिसमनिजगुणअनुसरहीं॥ विधिहरिहरकविकोविदवानी॥ कहतसाधमहिमासकुचानी॥ सो
मोपैकहिजाततकैसें॥ साकवनिकमनिगनगुणजैसे॥ दोहरा॥ वंदौसंतसमाजचितहितअनहितनहिकोइ॥ अंजुलिगतसुभ
सुमनजिमिसमसुगंधकरदोइ॥ ३॥ संतसरलचितजगतहितजानिसुभावसनेह॥ वालविनयसुनिकरिकृपारामचरणरतिदे
ह॥ ४॥ चौपई॥ वहुरिवंदिखलगणसतभायें॥ जेविनुकाजदाहिनेवायें॥ परिहितहांनिलाभजिनिकेरे॥ उजरेहरषविषादवसे
रे॥ हरिहरजसराकेसराहुसे॥ परअकाजभटसहसवाहुसे॥ जेपरदोषलखहिंसहसांखी॥ परहितघ्रततिन्हकेमनमांखी॥ तेज राम
कृसानुरोषमहिसेशा॥ अघअवगुणधनधनीधनेशा॥ उदयकेतसमहितसवहीके॥ कुंभकरणसमसोवतनीके॥ परअकाज २
लगितनपरिहरहीं॥ जिमिहिमउपलकृषीदलिगरहीं॥ वंदौखलजससेशसरोषा॥ सहसवदनवरनहिंपरदोषा॥ पुनिप्रणवौं
पृथुराजसमाना॥ परअघसुनहिंसहसदसकाना॥ वहुरिसक्रसमविनवौंतेही॥ संततसुरानीकहितजेही॥ वचनवज्रसमस

दायियारे॥ सहसनयनपरदोषनिहारे॥ दोहरा॥ उदासीनअरिमीतहितसुनतजरहिखलरीति॥ जानुपानिजुगजोरिजसविनतीकरतसप्री
ति॥ ४॥ चौपई॥ मैंअपनीदिसिकीन्हनिहोरा॥ तेजिनऔरलगावहुखोरा॥ वायसपालियअतिअनुरागा॥ होहिनिरामिषकवहुकिकागा॥ रव
वंदोसंतअसज्जनचरणा॥ दुखप्रदउभयवीचकछुवरणा॥ विछुरतएकप्राणहरिलेहीं॥ मिलतएकदारूणदुखदेहीं॥ उपजहिएक
संगजगमाहीं॥ जलजजोंकजिमिगुणविलगाहीं॥ सुधासुरासमसाधअसाधू॥ जनकएकजगजलधिअगाधू॥ भलेअनभलनिज
निजकरतूती॥ लहतसुजसअपलोकविभूती॥ सुधासुधाकरसुरसरिसाधू॥ गरलअनलकलिमलसरिव्याधू॥ गुणअवगुणजान
तसवकोई॥ जोजेहिभावनीकतेहिसोई॥ दोहरा॥ भलोभलाईपैलहतलहतनिचाईनीच॥ सुधासराहियअमरतागरलसराहियमीच॥
चौपई॥ खलअघअगुणसाधगुणगाहा॥ उभयअपारउदधिअवगाहा॥ तेहितेकछुगुणदोषवखाने॥ संग्रहत्यागनविनुपहिचाने॥ भ
लेउपोचसवविधिउपजाये॥ गनिगुणदोषवेदविलगाये॥ कहहिवेदइतिहासपुराना॥ विधिप्रपंचगुणअवगुणसाना॥ दुखसुखपापपुण्य
दिनराती॥ साधअसाधसुजातिकुजाति॥ दानवदेवऊचअरुनीचू॥ अमीयसजीवनमाहुरमीचू॥ मायाब्रह्मजीवजगदीसा॥ लच्छिअ
लच्छिरंकअवनीसा॥ कासीमगसुरसरिकर्मनासा॥ मारूमालवमहिदेवगवासा॥ स्वर्गनर्कअनुरागविरागा॥ निगमआगमगुणदो
षविभागा॥ दो०॥ जडचेतनगुणदोषमयविश्वकीन्हकरतार॥ संतहंसगुणगहहिपयपरिहरवारिविकार॥ ७॥ चौपई॥ असविवेकजवदेइ

बा॰ का विधाता॥ तव तजि दोष गुणहिं मन राता॥ काल सुभाव करम वरियाई॥ भलौ प्रकृति वस चूक भलाई॥ सो सुधारि जिमि हरिजन लेहीं॥ दलि दुख दोष वि
३ मल जस देहीं॥ खलउ करहि भल पाइ सुसंगू॥ मिटै न मलिन सुभाव अभंगू॥ खलि सुवेष जग वंचक जेऊ॥ वेष प्रताप पूजियत तेऊ॥ उघरहि अंत
न होइ निवाहू॥ कालनेमि जिमि रावण राहू॥ कीयेउ कुवेष साधु सनमाना॥ जिमि जग जामवंत हनुमाना॥ हानि कुसंग सुसंगति ला
हू॥ लोकहू वेद विदित सव काहू॥ गगन चढत रज पवन प्रसंगा॥ कीचहिं मिलत नीच जल संगा॥ साधु असाधु सदन सुक सारी॥ सुमिरहिं राम देहिं ग
नि गारी॥ धूम कुसंगति कारिष होई॥ लिखिय पुराण मंजु मसि सोई॥ सोई जल अनल अनिल संघाता॥ होइ जलद जग जीवन दाता॥ दोहरा॥
ग्रह भेषज जल पवन पट पाई कुजोग सुजोग॥ होइ कुवस्तु सुवस्तु जग लखहिं सुलक्षण लोग॥ ८॥ सम प्रकास तम पाख दोउ नाम भेद विधि
कीन्ह॥ ससि पोषक सोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह॥ ९॥ जड चेतन जग जीव जे सकल राममय जानि॥ वंदौं सव के पद कमल स
दा जोरि जुग पानि॥ १०॥ देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्व॥ वंदौं किन्नर रजनिचर कृपा करहु अव सर्व॥ ११॥ चौ॰॥ आकर चारि लाख
चौरासी॥ जाति जीव जल थल नभ वासी॥ सीयराममय सव जग जानी॥ करत प्रणाम जोरि जुग पानी॥ जानि कृपाकरि किंकर मोहू॥ स राम ३
व मिलि करहु छाडि छल छोहू॥ निज बुधि भरोस मोहि नाहीं॥ तातें विनय करत सव पांही॥ करण चहत रघुपति गुणगाहा॥ लघु मति
मोरि चरित अवगाहा॥ सूझ न एकउ अंग उपाउ॥ मन मति रंक मनोरथ राउ॥ मति अति नीच ऊंचि रुचि आछी॥ चाह अमिय जग जुर

तन छाछी ॥ छमिहैं सज्जन मोरि ढिठाइ ॥ सुनहहिं वालवचन मन लाई ॥ जौं वालक कहै तोतरि वाता ॥ सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता ॥ हसि
हहिं कूर कुटिल कुविचारी ॥ जे परदूषनभूषण धारी ॥ निज कवित्त केहि लाग न नीका ॥ सरस होइ अथवा अति फीका ॥ जे पर भनित सुनत हरषाहीं ॥
ते वर पुरुष वहुत जग नाहीं ॥ जग वहु नर सुरसरि सम भाई ॥ जे निज वाढि वढहि जल पाई ॥ सज्जन सुकृति सिंधु सम कोई ॥ देषि पूरण विधु वाढ
त सोई ॥ दो० ॥ भाग छोट अभिलाष वट करउं एक विस्वास ॥ पैहहिं सुख सुनि सुजन सव खल करहिं उपहास ॥ ८ ॥ चौ० ॥ खल उपहास होइ
हित मोरा ॥ काक कहहिं कलकंठ कठोरा ॥ हस हहिं वक दादुर चातक ही ॥ जिमि खल मलिन विमल वतकही ॥ कवित न रसिक राम प
द नेहू ॥ तिन कहुं सुखहास रस एहू ॥ भाषा भनित मोरि मति भोरी ॥ हसवे जोग हसें नहि खोरी ॥ प्रभु पद प्रीति न सामुझ नीकी ॥ तिनहि क
था सुनि लागे फीकी ॥ हरिहर कथा रति मति न कुतरकी ॥ तिन्ह कहु मधुर कथा रघुवर की ॥ राम भक्ति भूषित जिय जानी ॥ सुनि
हहिं सुजन सराहि सुवानी ॥ कवि न होउं नहि वचन प्रवीना ॥ सकल कला सव विद्या हीना ॥ अक्षर अरथ अलंकृत ना
ना ॥ छंद प्रवंध अनेक विधाना ॥ भाव भेद रस भेद अपारा ॥ कवित्त दोष गुण विविध प्रकारा ॥ कवित्त विवेक एक नहि मोरे ॥
सत्य कहों लिखि कागद कोरे ॥ दो० ॥ भनित मोरि सव गुण रहित विस्व विदित गुण एक ॥ सो विचारि सुनिहहि सुमति जिन्ह के वि
मल विवेक ॥ ९ ॥ चौ० ॥ एहि मे रघुपति नाम उदारा ॥ अति पावन पुराण श्रुति सारा ॥ मंगल भवन अमंगल हारी ॥ उमा सहित जे

बा०कां०
४

हिजपतपुरारी॥ भनितबिचित्रसुकविकृतजोई॥ रामनामबिनसोहनसोइ॥ विधुवदनीसवभांतिसवारी॥ सोहनवसनविनावरनारी॥ सवगुण
रहितकुकविकृतवानी॥ रामनामजसअंकितजानी॥ सादरकहहींसुनहिंबुधताही॥ मधुकरसरिससंतगुणग्राही॥ जदपिकवितरसएकोनाही॥ रा
मप्रतापप्रगटएहिमांही॥ सोईभरोसमोरेमनआवा॥ केहिनसुसंगवडपनपावा॥ धूमउतजनसहजकरुवाई॥ अगरप्रसंगसुगंधवसाई॥ भनितभदेस
वस्तुभलिवरनी॥ रामकथाजगमंगलकरनी॥ छं०॥ मंगलकरणीकलिमलहरणीतुलसीकथारघुनाथकी॥ गतिकूरकवितासरितकीजौंस
रितपावनपाथकी॥ प्रभुसुजससंगतिभनितभलिहोईहिसुजनमनभावनी॥ भवअंगभूतिमसानकीसुमिरनसुहावनिपावनी॥ दो०॥ प्रि
यलागिहिअतिसवहिममभनतिरामजससंग॥ दारुविचारुकिकरइकोउवंदियमलयप्रसंग॥ स्यामसुरभिपयविसदअतिगुनंक ८
रहिसवपान॥ गिराग्राम्यसियरामजसगावहिसुनहिसुजान॥ १०॥ चौ०॥ मनिमानिकमुकुताछविजैसी॥ अहिगिरिगजसिरसोह
नतैसी॥ न्रपकिरीटतरुणीतनपाई॥ लहहिसकलसोभाअधिकाई॥ तैसेहिसुकविकवितबुधकहही॥ उपजहिअनतअनतछवि
विलहही॥ भगतिहेतुविधिभवनविहाई॥ सुमिरतसारदआवतिधाई॥ रामचरितसरविनुअन्हवाए॥ सोस्रमजाइनकोटिउपाए॥ राम ४
कविकोविदअसहृदयविचारी॥ गावहिहरिजसकलिमलहारी॥ कीन्हेप्राकृतजनगुनगाना॥ सिरधुनिगिरालगतिपछिताना॥
हृदयसिंधुमतिसीपसमाना॥ स्वातिसारदकहहिसुजाना॥ जौवरषैवरवारिविचारू॥ होहिकवितमुकुतामणिचारू॥ दो०॥ जुगुतिवे

धिपुनिपोइय॰रामचरितवरताग॥पहिरहिंसज्जनविमलउरसोभाअतिअनुराग॥११॥चौ०॥जेजनमेकलिकालकराला॥करतववायसवे
षमराला॥चलतकुपंथवेदमतछाडे॥कपटकलेवरकलिमलभांडे॥वंचकभगतकहावैरामके॥किंकरकंचनकोहकामके॥तिन्हमहप्रथमरेखर
जगमोरी॥धंगधर्मध्वजधंधकधोरी॥जौअपनेअवगुनसवकहहूं॥वाढहिकथापारनहिलहहूं॥तातैमैअतिअलपवखाने॥थोरेमहजानिहहि
सयाने॥समुझिविविधिविधिविनतीमोरी॥कोउनकथासुनिलावृङ्खोरी॥एतेहुपरजोकरहिंअसंका॥मोतेअधिकजेजडमतिरंका॥कविनहो
उंनहिंचतुरकहावौं॥मतिअनुरूपरामगुनगावौं॥कहारघुपतिकेचरितअपारा॥कहामतिमोरिनिरतसंसारा॥जेहिमारुतगिरिमेरुउडाहीं॥क
हहूतूलकेहिलेखेमाहीं॥वेदकहहिंअसहैरघुराई॥चहहिभक्तिरतिनहिचतुराई॥समुझतअमितरामप्रभुताई॥करतकथामनअतिकद
राई॥दो०॥सारदसेसमहेसविधिआगमनिगमपुरान॥नेतिनेतिकहिजासुगुणकरहिंनिरंतरगान॥१७॥चौ०॥सवजानतप्रभुप्रभुतासोई॥तदप
पिकहेविनरहानकोई॥तहांवेदअसकारणराषा॥भजनप्रतापविविधिकरिभाषा॥एकअनीहअरूपअनामा॥अजसच्चिदानंदपरधामा
व्यापकविस्वरूपभगवाना॥सोईधरिदेहचरितकरनाना॥सोकेवलभक्तनहितलागी॥परमकृपालप्रणतअनुरागी॥जेहिंजनपरममताअ
रुछोहा॥तेहिकरुणाकरकिन्हनकोहा॥गईवहोरिगरीवनिवाजू॥सरलवसलसाहिवरघुराजू॥वुधवरनहिंहरिजसअसजानी॥कर
हिंपुनीतसुफलनिजवानी॥तेहिवलमैरघुपतिगुणगाथा॥करहोंनायरामपदमाथा॥मुनिनप्रथमहरिकीरतिगाई॥तेहिमगचलतसुग

वा॰का
५

ममोहिभाई ॥दो॥ अति अपार जे सरित वर जो नर सेतु कराहिं ॥ चढि पिपिलिका परम लघु बिनु श्रम पारहिं जाहिं ॥१८॥ चौ॥ एहि प्रकार बल
मनहि दिढाई ॥ करहौं रघुपति कथा सुहाई ॥ व्यास आदि कवि पुंगव नाना ॥ जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना ॥ चरण कमल बंदौं तिन्ह केरे ॥
पुरवहु सकल मनोरथ मेरे ॥ कलि के कविन्ह करहुं परनामा ॥ जिन्ह वरणे रघुपति गुण ग्रामा ॥ जे प्राकृत कवि परम सयाने ॥ भाषा जिन्ह
हरि चरित बखाने ॥ भये जे अहहिं हो इहैं पुनि आगे ॥ प्रणवौं सब हि कपट छल त्यागें ॥ होहु प्रसन्न देहु बरदानू ॥ साधु समाज भनित सनमानू ॥ यो
प्रबंध बुध नहिं आचरहीं ॥ सो श्रम बादि बाल कवि करहीं ॥ कीरति भनित भूति भलि सोइ ॥ सुरसरि सम सब कर हित होइ ॥ राम सुकीरति भनि
त भदेसा ॥ असमंजस अस मोहि अंदेसा ॥ तुम्हरी कृपा सुलभ सोई मोरे ॥ सियनि सुहावनि टाट पटोरें ॥ करहु अनुग्रह अस जिय जानी ॥
विमल जसहि अनुहरई सुवानी ॥दो॥ सरल कवित कीरति विमल सोइ आदरहिं सुजान ॥ सहैं बैर विसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान ॥ ज
सो न होय बिनु विमल मति मोहि बुधि बल अति थोरि ॥ करहु कृपा हरि जस कहौं पुनि पुनि करहुं निहोरि ॥२०॥ कवि कोविद रघुवर चरन नमा राम
नस मंजु मराल ॥ बाल विनय सुनि सुरुचि लखि मोपर होहु कृपाल ॥२१॥ सोरठा॥ वंदौं मुनि पद कंज रामायण जेहि निरमयउ ॥ मधुर सको ५
मल मंजु दोष रहित दूषण सहित ॥२२॥ वंदौं चारहुं वेद भव वारिधि बोहित सरिस ॥ जिनहि न सुपनेहु खेद वरनत रघुवर विसद जस ॥ वंदौं विधि
पद रेनु भव सागर जेहि कीन्ह यह ॥ संत सुधा शशि धेनु प्रगटे खल विष वारुणी ॥दो॥ विबुध विप्र बुध ग्रह चरण वंदि कहौं कर जोर ॥ होइ प्रसन्न पुर

वडुसकलमंजुमनोरथमोर॥चौ॥पुनिवंदौसारदसुरसरिता॥जुगलपुनीतमनोहरचरिता॥मज्जनपानपापहरएका॥कहतसुनतएकहर
अविवेका॥गुरुपितुमातुमहेसभवानी॥प्रणवौंदीनवंधहितदानी॥सेवकस्वामिसरवासियपियके॥हितनिरूपसवविधितुलसीके॥कलिवि
लोकिजगहितहरगिरिजा॥शावरमंत्रजालजिहिशिरजा॥अनमिलअक्षरअरथनजाए॥प्रगटप्रभावमहेसप्रतापए॥सोमुहेसमोहिपरअ
नुकूला॥करौकथामुदमंगलमूला॥सुमिरिशिवाशिवपाइपसाउ॥वरणौरामचरितचितचाउ॥भनितमोरिशिवकृपाविभाति॥शशिसमाजमिलि
मनहुंसुराती॥योजोहिकथहिसनेहसमेता॥कहिहैंसुनिहैसमुझिसचेता॥होइहैरामचरणअनुरागी॥कलिमलरहितसुमंगलभागी॥दो॥सपने
हुंसाचेहुंमोहिपरजोहरगौरिपसाउ॥तौफुरहोउजोकहेउसवभाषाभनितप्रभाउ॥चौ॥वंदौअवधिपुरीअतिपावनि॥सरजूसरितकलिकलुष
नसावनि॥प्रणवौंपुरनरनारिवहोरी॥ममताजिन्हपरप्रभुनहिथोरी॥सियनिंदकअघओघनसाये॥लोकविसोकवनायवसाये॥वंदौकौसल्या
दिशिप्राची॥कीरतिजासुसकलदिसिमाची॥प्रगटेउजहांरघुवरशशिचारू॥विश्वसुखदखलकमलतुसारू॥दशरथराउसहितसवरा
नी॥सुकृतसुमंगलमूरतजानी॥करौप्रणामकरममनवानी॥करहुकृपासुतसेवकजानी॥जिनहिंविरंचिवडभयेउविधाता॥महिम
माअवधिरामपितुमाता॥सो॥वंदौअवधिभुवालसत्यप्रेमजेहिंरामपद॥विछुरतदीनदयालप्रियतनतणइवपरिहरेउ॥चौ॥प्रणवौंपरिज
नसहतविदेहू॥जहिरामपदगूढसनेहू॥जोगभोगमहुंराखेउगोई॥रामविलोकतप्रगटेउसोई॥प्रणवौंप्रथमभरतकेचरणा॥जासुनेमव्र

बा॰कां॰ तजाइ न वरणा॥ राम चरण पंकज मन जासू॥ लुब्ध मधुप इव तजत न पासू॥ वंदौं लक्ष्मण पद जलजाता॥ सीतल सुभग भक्त सुखदाता॥ रघुप
६ तिकीरति विमल पताका॥ दंड समान भयेउ जस जाका॥ शेष सहस्र सीस जग कारन॥ जो अवतरेउ भूमि भय टारन॥ सो सदा सानुकूल रहो मो
पर॥ कृपासिंधु सौमित्र गुणाकर॥ रिपुसूदन पद कमल नमामी॥ सूर सुसील भरत अनुगामी॥ महावीर विनवौं हनुमाना॥ राम जासु जस आ
पवखाना॥ सो॥ वंदौ पवनकुमार खल वन पावक ज्ञानघन॥ जासु हृदय आगार वसहिं राम सर चाप धर॥ चौ॥ कपिपति रीछ निशाचर राजा॥
अंगदादि सव कीस समाजा॥ वंदौ सव के चरण सुहाये॥ अधम सरीर राम जिन्ह पाये॥ रघुपति चरण उपासक जेते॥ खग मृग सुर नर असु
र समेते॥ वंदौ पद सरोज सव केरे॥ जे विनु काम राम के चेरे॥ शुक सनकादि भक्त मुनि नारद॥ जे मुनिवर विज्ञान विसारद॥ प्रणवौं सवहि धर
निधर सीसा॥ करहु कृपा जन जानि मुनीसा॥ जनकसुता जग जननि जानकी॥ अतिसय प्रिय करुणानिधान की॥ ताके जुग पद क
मल मनावौं॥ जासु कृपा निरमल मति पावौं॥ पुनि मन वचन करम रघुनायक॥ चरण कमल वंदौ सव लायक॥ राजीवनयन धरे धनु राम
सायक॥ भक्त विपति भंजन सुखदायक॥ दो॥ गिरा अर्थ जल वीच सम कहियत भिन्न न भिन्न॥ वंदौं सीता राम पद जिनहिं परम प्रिय ६
खिन्न॥ चौ॥ वंदौ राम नाम रघुवर को॥ हेतु कृसानु भानु हिमकर को॥ विधि हरि हरमय वेद प्राण सो॥ अगुण अनूपम गुण निधान सो॥ म म१
हामंत्र जो जपत महेसू॥ काशी मुक्ति हेत उपदेसू॥ महिमा जासु जान गणराउ॥ प्रथम पूजियत नाम प्रभाउ॥ जान आदिकवि नाम प्रतापू

भयेउअशुद्धकरिउलटाजापू॥सहस्त्रनामसमसुनिशिववानी॥जपतजाहिप्रियसंगभवानी॥हरषिहेतुहेरिहरहीयको॥कियेभूषणतियभूष
णतियको॥नामप्रभावजानशिवनीको॥कालकूटफलदीन्हअमीको॥दो॥वरषारितुरघुपतिभगतितुलसीसालिसुदास॥रामनामवर
वरणजुगसांवनभादौंमास॥चौ॥अक्षरमधुरमनोहरदोउ॥वरणविलोचनजनजियजोउ॥सुमिरतसुलभसुखदसवकाहू॥लोक
लाहुपरलोकउछाहू॥कहतसुनतसुमिरतसुठिनीके॥रामलक्षमननसमप्रियतुलसीके॥वरणतवरणप्रीतिविलगाती॥ब्रह्मजीवइ
वसहजसंघाती॥नरनारायणसरससुभ्राता॥जगपालकविशेषजनत्राता॥भक्तिसुतियकलकरणविभूषण॥जगहितहेतविमलविधु
पूषण॥स्वादतोषसमसुगतिसुधाके॥कमठशेषसमधरवसुधाके॥जनमनकंजमंजुमधुकरसे॥जीहजसोमतिहरिहलधरसे॥दो॥
एकछत्रएकमुकटमणिसववरणनिपरजोउ॥तुलसीरघुवरनामकेवरणविराजतदोउ॥चौ॥समुझतसरसनामअरुनामी॥प्रीतिप
रस्परप्रभुअनुरागी॥नामरूपदोउईशउपाधी॥अकथअनादिसुसामुझिसाधी॥कोवडछोटकहतअपराधू॥सुनिगुणभेदसमुझ
िहहिंसाधू॥देषियतरूपनामअधीना॥रूपनजानहिनामविहीना॥रूपविशेषनामविनुजाने॥करतलगतनपरहिपहिचाने॥
सुमरहिंनामरूपविनुदेखें॥आवतहृदयसनेहविशेखें॥नामरूपगतिअकथकहानी॥समुझतसुखदनपरतवखानी॥अगुणस
गुणविचनामसुसाखी॥उभयप्रवोधकचतुरदुभाषी॥दो॥रामनाममणिदीपधरजीभदेहरीद्वार॥तुलसीभीतरवाहरैंजोचाहसउजिया

वा॰का॰ र॥ चौ॥ नामजीभजपिजागतजोगी॥ विरतिविरंचिप्रपंचवियोगी॥ ब्रह्मसुखहिंअनुभवहिंअनूपा॥ अकथअनामयनामनरूपा॥ जाना
७ चहतगूढगतिजेऊ॥ नामजीहजपिजानहिंतेऊ॥ साधकनामजपहिंलवलायें॥ होहिंसिद्धिअणिमादिकपाये॥ जपहिंनामजनआरतभारी
मिटहिंकुसंगतिहोंहिंसुखारी॥ रामभक्तजगचारिप्रकारा॥ सुकृतिचारउंअनघउदारा॥ चहुंचतुरकहुंनामअधारा॥ ज्ञानीप्रभुहिंविशेष
पियारा॥ चहुंजुगचहुंश्रुतिनामप्रभाऊ॥ कलिविशेषनहिंआनउपाऊ॥ दो॥ सकलकामनाहीनजेरामभक्तिरसलीन॥ नामसोप्रेमपी
यूषनदतिनहुंकियेमनमीन॥ चौ॥ अगुणसगुणदोउब्रह्मस्वरूपा॥ अकथअगाधअनादिअनूपा॥ मोरेमतवडनामदुहूंनतें॥ कियेजेहि(
जुगनिजवसनिजवूते॥ प्रौढसुजनजनजानहिंजनकी॥ कहौंप्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी॥ एकदारुगतिदेखियएकू॥ पावकसमजुगब्रह्मविवे
कू॥ उभयअगमजगसुगमनामतें॥ कहहुंनामवडब्रह्मरामतें॥ व्यापकएकब्रह्मअविनासी॥ सतचेतनघनआनंदरासी॥ असप्रभुहृदय
अछतअविकारी॥ सकलजीवजगदीनदुखारी॥ नामनिरूपननामजतनतें॥ सोउप्रगटैजिमिमोलरतनतें॥ दो॰॥ निरगुणतेयहिभांति राम
वडनामप्रभाउअपार॥ कहहुंनामवडरामतेंनिजविचारअनुसार॥ चौ॥ रामभक्तहितनरतनधारी॥ सहिसंकटकियेसाधसुखारी॥(७
नामसुप्रेमजपतअनयासा॥ भक्तहोइमुदमंगलवासा॥ रामएकतापसतियतारी॥ नामकोटिखलकुमतिसुधारी॥ रिषिहितरामसुकेत(
सुताकी॥ सहितसैनसुतकियेविवाकी॥ सहितदोषदुखदाससदुरासा॥ दलहिनामजिमिरविनिशिनासा॥ भंजेउरामआपभवचाप॥ भवभयभंज

ननामप्रतापू॥दंडकवनप्रभुकीन्हसुहावन॥जनमनअमितनामकियेपावन॥निशिचरनिकरदलेरघुनंदन॥नामसकलकलिकलुषनिकंदन
दो॥सवरीगीधसुसेवकहिंसुगतिदीन्हरघुनाथ॥नामउधारेअमितखलवेदविदितगुणगाथ॥चौ॥रामसुकंठविभीषणदोउ॥राखेसरणजानसवकोउ
नामगरीवअनेकनिवाजे॥लोकवेदवरविरदविराजे॥रामभालुकपिकटकवटोरा॥सेतुहेतुश्रमकीन्हनथोरा॥नामलेतभवसिंधसुकाहीं॥करहु
विचारसुजनमनमाहीं॥रामसकुलरणरावणमारा॥सीयसहितनिजपुरपगधारा॥राजारामअवधिरजधानी॥गावतगुणसुरमुनिवरवानी॥से
वकसुमिरतनामसुप्रीती॥विनुश्रमप्रवलमोहदलजीती॥फिरतसनेहमगनसुखअपने॥नामप्रसादसोचनहिसपने॥दो॥ब्रह्मरामतेनामवड
वरदायकवरदानि॥रामचरितसतकोटिमेंलियेमहेसजियजानि॥चौ॥नामप्रसादशंभुअविनासी॥साजअमंगलमंगलरासी॥सुकसनकादि
साधमुनिजोगी॥नामप्रतापब्रह्मसुखभोगी॥नारदजानेउनामप्रतापू॥जगप्रियहरिहरिहरप्रियआपू॥नामजपतप्रभुकीन्हप्रसादू॥भक्तिसिरो
मणिभयेप्रह्लादू॥ध्रुवसगलानिजपेउहरिनामू॥पायेउअचलअनूपमठामू॥सुमिरिपवनसुतपावननामा॥अपनेवसकरिराखेरामा॥अ
परअजामिलगजगनिकाऊ॥भयेउमुक्तिहरिनामप्रभाऊ॥कहहुकहालगिनामवडाई॥रामनसकहिंनामगुणगाई॥दो॥नामरामको
कल्पतरूकलिकल्याणनिवास॥जोसुमिरतभयोभागतेतुलसीतुलसीदास॥चौ॥चहुंजुगतीनकालतिहुलोका॥भयेउनामजपिजीव
विसोका॥वेदपुराणसंतमतएहू॥सकलसुकृतफलरामसनेहू॥ध्यानप्रथमजुगमखविधिदूजे॥द्वापरपरितोषतप्रभुपूजे॥कलिकेवलमल

बा॰का॰ ८ मूलमलीना॥ पापपयोनिधिजनमनमीना॥ नामकामतरुकालकराला॥ सुमिरतसकलसमनजेजाला॥ रामनामकलिअभिमतदा
ता॥ हितपरलोकलोकपितुमाता॥ नहिकलिकर्मनधर्मविवेकू॥ रामनामअवलंबनएकू॥ कालनेमिकलिकपटनिधानू॥ नामसुमतिस
मरथहनुमानू॥ दो॥ रामनामनरकेहरीकनककस्यपकलिकाल॥ जापकजनप्रहलादजिमिपालहिदलिसुरसाल॥ चौ॥ भायकुभायअनष
आलसहूं॥ नामजपतमंगलदशादिशहूं॥ सुमिरिसोनामरामगुणगाथा॥ करहूंनायरघुनाथहिमाथा॥ मोरिसुधारहिसोसवभांती॥ जा
सुकृपानहिंकृपाअघाती॥ रामसुस्वामिकुसेवकमोसे॥ निजादेशिदेषिदयानिधिपोसे॥ प्रभुप्रतापमहिमाजियजासू॥ मोररुचिरउहउह
रुचितासू॥ लोकहुवेदसुसाहिवरीती॥ विनयसुनतपहिचानतप्रीती॥ गनीगरीवग्रामनरनागर॥ पंडितमूढमलीनउजागर॥ सुकवि
कुकविनिजमतिअनुहारी॥ नृपहिंसराहतसवनरनारि॥ साधुसुजानसुसीलनृपाला॥ ईशअंसभवपरमकृपाला॥ सुनिसनमानहिसवहि
सुवानी॥ भनितभक्तिमतगतिपहिचानी॥ यहप्राकृतमहिपालसुभाउ॥ जानशिरोमणिकोशलराउ॥ रीझतरामसनेहनिसोतें॥ कोजगमं राम ८
दमलिनमतिमोतें॥ दो॥ सठसेवककीप्रीतिरुचिराखहिंरामकृपाल॥ उपलकियेजलजानजिहिंसचिवसुमतिकपिभाल॥ होंहुकहावत
सवकहतरामसहतउपहास॥ साहिवसीतानाथसोसेवकतुलसीदास॥ चौ॥ अतहिमोरिढिठाईखोरी॥ सुनिअघनरकहुनाकसकोरी
समुझिसहममोहिअपडरअपने॥ सोसुधिरामकीन्हनहिंसुपने॥ सुनिअवलोकिसुचितचखचाही॥ भक्तिमोरिमतिस्वामिसराहि॥ क

हतन साइ होइ हिय नीकी॥ रीझत राम जानि जन जी की॥ रहत न प्रभु चित चूक किये की॥ करत सुरति सत वार हिये की॥ जिहिं अघ व-
वधेउ व्याध जिमि वाली॥ फिरि सुकंठ सोई कीन्ह कुचाली॥ सोइ करतूति विभीषण केरी॥ सुपनेउ सो न राम हिय हेरी॥ ते भरतहि भेटत सनमाने
राजसभा रघुवीर वखाने॥ दो॥ प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किये आप समान॥ तुलसी कहु न राम से साहिव सील निधान॥ २९॥ राम निकाइ राव-
री है सवही को नीक॥ जौ यह साची है सदा तौ नीको तुलसीक॥ इहि विधि निज गुण दोष कहि सवहि वहुरि सिर नाइ॥ वरनौ रघुवर विसद जस सुनि व
कलि कलुष नसाइ॥ ३०॥ चौ॥ जाग्यवलिक जो कथा सुहाइ॥ भारद्वाज मुनि वरहि सुनाइ॥ कहिहौं सोइ संवाद वखानी॥ सुनहु सकल सज्ज-
न सुख मानी॥ शंभु कीन्ह यह चरित सुहावा॥ वहुरि कृपा करि उमहिं सुनावा॥ सोइ संवाद भुसुंडहि दीन्हा॥ राम भक्त लोमस जव चीन्हा॥ तिहि स-
न जाज्ञवलक मुनि पावा॥ जेहि पुनि भारद्वाज प्रति गावा॥ औरो जे हरि भक्त सुजाना॥ कहहिं सुनहिं समुझहिं विधि नाना॥ दो॥ मै पुनि निज गु-
रु सन सुनी कथा सो सुकरखेत॥ समुझ नहि तस वालपन तव अति रहे उ अचेत॥ ३१॥ श्रोता वकता ज्ञाननिधि कथा राम की गूढ॥ किमि
समझौ मैं जीव जड॥ कलि मल ग्रसत विमूढ॥ चौ॥ तदपि कही गुरु वारहि वारा॥ समुझि परी कछु मति अनुसारा॥ भाषावंध करव मैं सोइ॥ मोरे म-
न प्रवोध जिमि होइ॥ अस कछु वुद्धि विवेक वल मोरे॥ तस कहिहौं हिय हरि के प्रेरे॥ निज संदेह मोह भ्रम हरनी॥ करौ कथा भव सागर तरनी॥ वुध विश्रा-
म सकल जन रंजनी॥ राम कथा कलि कलुष विभंजनी॥ राम कथा कलि पन्नग भरनी॥ पुनि विवेक पावक का जिमि अरनी॥ राम कथा कलि काम-

न

वा०का० धुगाइ॥ सुजनसजीवनमूरिसुहाई॥ सोइवसुर्धलसुधातरंगनी॥ भयभंजनीभ्रमभेकभुअंगनी॥ असुरसेनसमनरकनिकंदनी॥ साधविवु
१९ धकुलहितागिरिनंदनी॥ संतसमाजपयोधिरमासी॥ विस्वभारभरअचलछमासी॥ जमगनमुहजसजगयमुनासी॥ जीवनमुक्तहेतुजनुकासी॥
१ हिय रामहिप्रियपावनितुलसीसी॥ तुलसीदासहितेंहुलसीसी॥ शिवप्रियकमलसेलसुतासी॥ सकलसिद्धिसुखसंपतिरासी॥ सदगुणसुरगणअंव
आदितिसी॥ रघुवरभक्तिप्रेमपरिमितिसी॥ दो०॥ रामकथामंदाकिनीचित्रकूटचितिचारु॥ तुलसीसुभगसनेहवनश्रीरघुवीरविहारु॥ चौ॥ रामचरित्र
चिंतामणिचारु॥ संतसुमतितियसुभगसिंगारु॥ जगमंगलगुणग्रामराके॥ दानिमुक्तिधनधर्मधामके॥ सदगुरुज्ञानविरागजोगके॥ विवुधवैदभवभीम
रोगके॥ जननिजनकसीयरामप्रेमके॥ वीजसकलव्रतधर्मनेमके॥ समनपापसंतापसोकके॥ प्रियपालकपरलोकलोकके॥ सचिवसुभ
टभूपतिविचारके॥ कुंभजलोभउदधिअपारके॥ कामकोहकलिमलकरिगनके॥ केहरिसावकजनमनवनके॥ अतिथिपूजिप्रिय
तमपुरारिके॥ कामदघनदारिदवारिके॥ मंत्रमहामणिविषयव्यालके॥ मेटतकठिनकुअंकभालके॥ हरनमोहतमदिनकरकरसे॥ से राम
ते सेवकसालिपालजलधरसे॥ अभिमतदानिदेवतरुवरसे॥ सेवतसुलभसुखदहरिहरसे॥ सुकविसरसरदनभमनउडगणसे॥ रामभक्त १९
जनजीवनधनसे॥ सकलसुकृतफलभूरिभोगसे॥ जगहितनिरुपाधिसाधलोगसे॥ सेवकमनमानसमरालसे॥ पावनगं ह
गतरंगमालसे॥ दो॥ कुपथकुतर्ककुचालिकलिकपटदंभपाषंड॥ दहनरामगुणग्रामजिमिईंधनअनलप्रचंड॥४२॥ राम

चरितराकेसकरसरससुखदसवकाहु॥ सज्जनकुमुदचकोरचितहितविशेषवडलाहु॥ चौ॰॥ कीन्हप्रसन्नजिहिभांतिभवानी॥ ति
हिविधिसंकरकहेवखानी॥ सोसवहेतकहवमैगाइ॥ कथाविचित्रप्रवंधवनाई॥ जिहिआरंभसमापतिजेही॥ कहिहौंप्रथमसुकारणतेही॥ अ
तिविचित्रसुंदरसंवादा॥ सुनतसकलमिटिजाइविषादा॥ जिन्हयहकथासुनीनहिंहोई॥ जिनिआचर्यकरहुसुनिकोइ॥ कथाअलोकसुन
हिजेज्ञानी॥ नहिआचर्यकरहिंअसजानी॥ रामकथाकीमितिजगनाही॥ असप्रतीतिजिन्हकेमनमाहीं॥ नानाभातिरामअवतारा॥ रामायण
शतकोटिअपारा॥ कलपभेदहरिचरितसुहाये॥ भांतिअनेकमुनीशनगाये॥ करियनसंशयअसउरआनी॥ सुनियकथासादररतिमानी॥
दो॰॥ रामअनंतअनंतगुणअमितकथाविस्तार॥ सुनिआचर्यनमानहींजिन्हकेविमलविचार॥ ४४॥ चौ॰॥ एहिविधिसवसंशैकरिदूरी॥ सिर
धरिगुरुपदपंकजधूरी॥ पुनिसवहीविनवौंकरजोरी॥ करतकथाजिहिंलागनखोरी॥ सादरशिवहिनायअबमाथा॥ वरणौंविशदरामगु
णगाथा॥ संवतसोरहसैएकतीसा॥ करौकथाहरिपदधरिसीसा॥ नवमीभौमवारमधुमासा॥ अवधिपुरीयहचरितप्रकासा॥ जिहिदि
नरामजनमश्रुतिगावै॥ तीरथसकलतहांचलिआवैं॥ असुरनागनरखगमुनिदेवा॥ आयकरहिंरघुनायकसेवा॥ जनममहोत्सवर
चहिसुजाना॥ करहिंरामकलकीरतिगाना॥ दो॰॥ मज्जहिंसज्जनवृंदवहुपावनसरजूनीर॥ जपहिंरामधरिध्यानउरसुंदरस्यामशरी
र॥ ४५॥ चौ॰॥ दरसपरसमज्जनअरुपाना॥ हरहिंपापकहैंवेदपुराना॥ नदीपुनीतअमितमहिमाअति॥ कहिनसकैसारदाविमलमति॥

वा० का०
१०

रामधामदापुरीसुहावनि॥ लोकसमस्तविदित अतिपावनि॥ चारिखानिजगजीवअपारा॥ अवधितजेतननहिंसंसारा॥ सवविधिपुरीम
नोहरजानी॥ सकलसिद्धिप्रदमंगलखानी॥ विमलकथाकरकीन्हअरंभा॥ सुनततनसांहिंकाममददंभा॥ रामचरितमानसयेहिनामा॥ सु
नतश्रवणपावहिंविश्रामा॥ मनकरिविषयअनलवनजरही॥ होइसुखीजोइहसरपरही॥ रामचरितमानसमनभावन॥ विरचेउशंभुसु
हावनपावन॥ त्रिविधदोषदुषदारिददावन॥ कलिकुचालकलिकलुषनशावन॥ रचिमहेशनिजमानसराखा॥ पाइसुसमयशिवासन
भाषा॥ तातेरामचरितमानसवर॥ धरेउनामहियहेरिहरषिहर॥ कहहुंकथासोइसुखदसुहाइ॥ सादरसुनहुंप्रसन्नमनलाई॥ दो॥ जसमा
नसजेहिविधिभयेउजगप्रचारजेहिहेतु॥ अवसोइकहहुंप्रसंगसवसुमिरउमावृषकेतु॥ ३६॥ चौ॥ शंभुप्रसादसुमतिहियहुलसी
रामचरितमानसकवितुलसी॥ करहुंमनोहरमतिअनुहारी॥ सुजनसुचितसुनिलेहुसुधारी॥ सुमतिभूमिथलहृदयअगाधू॥ वेद
पुराणउदधिघनसाधू॥ वरषहिंरामसुजसवरवारी॥ मधुरमनोहरमंगलकारी॥ लीलासगुनजोकहहिंवखानी॥ सोइ[illegible]सुताकरतम राम १०
लहानी॥ प्रेमभक्तिजोवरनिनजाइ॥ सोईमधुरताशीतलताई॥ सोजलसुकृतसालिहितहोइ॥ रामभक्तिजनजीवनसोई॥ मेधामहिग
तसोजलपावन॥ सिमिटिश्रवणमगचलेसुहावन॥ भरेउसुमानससिथलथिराना॥ सुखदसीतरुचिचारुचिराना॥ दो॥ सुठिसुंदरसं
वादवरविरचेउवुद्धिविचारि॥ तेएहिपावनसुभगसरघाटमनोहरचारि॥ चौ॥ सप्तप्रवंधसुभगसोपाना॥ ज्ञाननयननिरषतमनमाना॥

रघुपतिमहिमाअगुनअगाधा॥ वरनवसोइवरवारिअगाधा॥ रामसीयजससलिलसुधासम॥ उपमावीचविलासमनोरम॥ पुरइनसघ
नचारुचौपाई॥ जुगतिमंजुपतिसीयसुहाई॥ छंदसोरठासुंदरदोहा॥ सोइवहुरंगकमलकुलसोहा॥ अर्थअनूपसुभावसुधभाषा॥ सोइपरागमक
२ रंदसुवासा॥ सुकृतपुंजमंजुलअलिमाला॥ ज्ञानवैरागविचारमराला॥ ध्वनिअवरेवकवितगुणजाती॥ मीनमनोहरतेवहुभांती॥ अर्थधर्मकामादि
कचारी॥ कहवज्ञानविज्ञानविचारी॥ नवरसजपतपजोगवैरागा॥ तेसवजलचरचारुतडागा॥ सुकृतसाधनामगुणगाना॥ तेविचित्रजलविहं
गसमाना॥ संतसभाचहुंदिशिअमराई॥ सरधारितुवसंतसमगाइ॥ भक्तिनिरूपनविविधिविधाना॥ छमादयादमलताविताना॥ संजमनियमफू
लफलज्ञाना॥ हरिपदरतिरसवेदवखाना॥ औरजकथाअनेकप्रसंगा॥ तेईसुकपिकवहुवरनविहंगा॥ दो॥ पङुपवाटिकावागवनसुख
सोविहंगविहारु॥ मालीसुमनसनेहजलसींचतलोचनचारु॥ ३७॥ चौ॥ जेगावहियेचरितसंभारे॥ तेइहितालचतुररखवारे॥ सदासुनहिसाद
रनरनारी॥ तेईसुरवरमानसअधिकारी॥ अस्कृतिअरुविचित्रइतिहासा॥ सोइसुंदरवरवीचिविलासा॥ अतिसेजेविषईवगकागा॥
येहिशरानिकटनजाहिअभागा॥ संवुकभेकसिवारसमाना॥ इहानविषयकथारसनाना॥ तेहिकारणआवतहियहारे॥ कामीका
कवलाकविचारे॥ आवतइहिसरअतिकठनाई॥ रामकृपाविनआयनजाई॥ कठिनकुसंगकुपंथकराला॥ तिनकेवचनव्याघ्र
हरिव्याला॥ ग्रहकारजनानाजंजाला॥ तेइअतिदुर्गमसैलविसाला॥ वनवहुविषममोहमदमाना॥ नदीकुतर्कभयंकरनाना॥ दो॥

बा०का ॥ जेश्रद्धासंबलरहितनहींसंतनकरसाथ॥तिनकहुंमानसअगमअतिजिन्हहिनप्रियरघुनाथ॥४९॥चौ॥जौकरिकष्टजायपुनि
कोई॥जातहींनीदजुडाईहोई॥जडताजाडविषमउरलागा॥गयेहुनमज्जनपावअभागा॥करिनजायसरमज्जनपाना॥फिरिआवहिस
हितअभिमाना॥जौवहोरिकोईपूछनआवा॥सरनिंदाकरिताहिबुझावा॥सकलविघनव्यापहिनहितेही॥रामकृपालविलोकहिंजा
हीं॥सोईसादरसरमज्जनकरहीं॥महाघोरत्रयतापनजरहीं॥तेनरयहसरतजहींनकाऊ॥जिन्हकेरामचरणभलभाऊ॥जोनहाइच
हैइहिसरभाई॥सोसतसंगकरौमनलाई॥दो॥इहिसरमज्जनपानकरिजेसुखलहहींसुजान॥तिन्हभ्रमहिमृगजलनिरखिजिमिज
गफिरतभुलान॥५०॥चौ॥असमानसमानसचषचाहीं॥भइकविबुद्धिविमलअवगाहीं॥भयेउहृदयआनंदउछाहू॥उमगेउप्रेमप्रमोदप्रवा
हू॥चलीसुभगकविताप्सरितासों॥रामविमलजसजलभरितासों॥सरजूनामसुमंगलमूला॥लोकवेदमतमंजुलकूला॥नदीपुनीतसुमान
सनंदिनी॥कलिमलतृनतरूमूलनिकंदिनी॥दो॥श्रोतात्रिविधसमाजपुरग्रामनगरदुहुंकूल॥संतसभाअनुपमअवधिसकलसुमंग राम
लमूल॥चौ॥रामभक्तिसुरसरितहांजाई॥मिलीसुकीरतिसरजूसुहाई॥सानुजरामसमरजसपावन॥मिलेउमहानदसोनसुहावन ॥
जुगविचभक्तिदेवधुनिधारा॥सोहतसहितसुविरतिविचारा॥त्रिविधतापत्रासककतिमुहानी॥रामसरूपसिंधुसमुहानी॥मानसमूल
मिलीसुरसरिहीं॥सुनतसुजनमनपावनकरहीं॥विचविचकथाविचित्रविभागा॥जनुसरितीरतीरवनवागा॥उमामहेसविवाहवरा

ती॥ तेजलचरअगनितवहुभांती॥ रामजनमआनंदवधाइ॥ भवरतरंगमनोहरताइ॥ दो॥ वालचरितचहुवंधकेवनजविपुलवहुरंग॥
न्रपरानीपरिजनसुक्रतमधकरवारिविहंग॥५२॥ चौ॥ सीयस्वयंवरकथासुहाइ॥ सरितसुहावनिसोछविछाई॥ नदीनावपटप्रश्नअने
का॥ केवटकूलउतरसविवेका॥ सुनिअनुकथनपरसपरहोइ॥ पथिकसमाजसोहसरिसोइ॥ घोरधारभ्रगुनाथरिसानी॥ घाटसुवु
द्दरामवरवानी॥ सानुजरामविवाहउछाहु॥ सोसुभउमगसुखदसवकाहू॥ कहतसुनतहरषहिंपुलकाहीं॥ तेसुक्रतीमनमुदितनहाहीं॥
रामतिलकहितमंगलसाजा॥ परमजोगजनुजुरेसमाजा॥ काइकुमतिकेकइकेरी॥ परीजासुफलविपतिघनेरी॥ दो॥ शमनअमितउ
तपातसवभरतचरितजपजाग॥ कलिअघखवअवगुणकथनतेजलमलवककाग॥५३॥ चौ॥ कीरतिसरितछहुंरितुरूरी॥ समयसुहावनि
ले पावनिभूरी॥ हिमहिमशैलसुताशिवव्याहू॥ शिशिरसुखदप्रभुजनमउछाहू॥ वरनामरामविवाहसमाजू॥ सोमुदमंगलमयरितुराजू॥ ग्री
षमदुशहरामवनगमनू॥ पंथकथावरआतपपवनू॥ वरषाघोरनिशाचरधारी॥ सुरकुलसालिसुमंगलकारी॥ रामराजसुखविनयव
डाइ॥ विसदसुखदसोईसरदसुहाई॥ शतीशिरोमणिसियगुणगाथा॥ सोईगुणअमलअनूपमपाथा॥ भरतसुभावसुशीतलताइ॥ स
दाएकरसवरनिनजाइ॥ दो॥ अवलोकनिवोलनिमिलनिप्रीतिपरसपरहास॥ भायपभलिचहुंवंधकीजसमाधुरीसुवास॥ चौ॰॥
आरतिविनयदीनतामोरी॥ लघुताललितसुवारिनथोरी॥ अदभुतशलिलसुनतगुणकारी॥ आसपियासमनोमलहारी॥ रामसुप्रे

बा०कां महिंपोषतपानी॥हरतसकलकलिकलुषगलानी॥भवश्रमसोषकतोषकतोषा॥शमनदुरितदुषदारिददोषा॥कामक्रोधमदमोहनसावन॥
१२ बिमलबिबेकबैरागबढावन॥सादरमज्जनपानकियेतें॥मिटहिंपापपरितापहियेतें॥जिन्हइहिबारिनमानसधोये॥तेकायरकलिकालबिगोये॥
तृषितनिराषिरबिकरभववारी॥फिरहिंमृगजिमिजीवदुखारी॥दो०॥मतिअनुहारिसुवारिगुनगननिमनअन्हवाइ॥सुमिरिभवानी
संकरहिंकहकबिकथासुहाइ॥५५॥अबरघुपतिपदपंकरुहहियेधरिपायप्रसाद॥कहवजुगलमुनिवरकरमिलनसुभगसंवाद॥५६
भारद्वाजजिमिप्रश्नकरिजागबलकमुनिपाय॥प्रथममुखसंवादसोईकहिहौंहेतबुझाय॥५७॥चौ०॥भारद्वाजमुनिवसहिप्रयागा॥तिन्ह
न्हहिरामपदअतिअनुरागा॥तापसशमदमदयानिधाना॥परमारथपथपरमसुजाना॥माघमकरगतरविजबहोई॥तीरथपतिहिंआ
वसबकोई॥देवदनुजकिन्नरनरस्रेनी॥सादरमज्जहिंसकलत्रिवेनी॥पूजहिंमाधवपदजलजाता॥परसिअषैवटहरषहिंगाता॥भारद्वा
जआश्रमअतिपावन॥परमरम्यमुनिवरमनभावन॥तहांहोइमुनिरिषिसमाजू॥जाहिंजेमज्जनतीरथराजू॥मज्जहिंप्रातसमेतउ राम
छाहा॥कहहिंपरसपरहरिगुणगाहा॥दो०॥ब्रह्मनिरूपनधर्मविधिवरनहितत्वविभाग॥कहहिंभक्तिभगवंतकीसंजुतज्ञानवैराग॥५७ १२
चौ०॥इहिप्रकारभरिमाघनहांहीं॥पुनिसबनिजनिजआश्रमजाहीं॥प्रतिसंबतअसहोइअनंदा॥मकरमज्जिगवनहिंमुनिबृंदा॥एक
वारभरिमकरनहाये॥सबमुनितबआश्रमनिसिधाये॥याज्ञवल्कमुनिपरमबिबेकी॥भारद्वाजराषेउपदटेकी॥सादरचरनसरोजपषारे॥अ

तिपुनीतआसनवैठारे॥ करिपूजामुनिसुजसवषानी॥ बोलेअतिविनीतिमृदुवानी॥ नाथएकसंशयवडमोरै॥ करगतवेदतत्वसवतोरे॥
कहतसोमोहिलगतभयलाजा॥ जौनकहौंवडहोइअकाजा॥ दो॰ संतकहहिंअसनीतिप्रभुश्रुतिपुरानमुनिगाव॥ होइनविमलविवेकउर
गुरुसनकियेदुराव॥ ४५॥ चौ॰ असविचारिप्रगटेउनिजमोहा॥ हरहुनाथकरिजनपरछोहा॥ रामनामकरअमितप्रभावा॥ संतपुराणउप
निषदगावा॥ संततजपतशंभुअविनासी॥ शिवभगवानज्ञानगुणरासी॥ आकरच्यारिजीवजगअहही॥ कासीमरतपरमपदलहही॥ सोपिरा
ममहिमामुनिराया॥ शिवउपदेशकरतकरिदाया॥ रामकवनप्रभुपूछौंतोही॥ कहहुवुझायकृपानिधिमोही॥ एकरामअवधेसकुमारा॥ ति
नकरचरितविदितसंसारा॥ नारिविरहदुखलहेउअपारा॥ भयेउरोषवसरावणमारा॥ दो॰ प्रभुसोइरामकिअपरकोउजाहिजपतत्रिपुरा
रि॥ सत्यधामसरवज्ञतुमकहहुविवेकविचारि॥ ४६॥ चौ॰ जैसेमिटहिमोरभ्रमभारी॥ कहहुसोकथानाथविस्तारी॥ याज्ञवलकिवोलेमुसकाई॥
तुमहिविदितरघुपतिप्रभुताई॥ रामभगततुममनक्रमवानी॥ चतुराईतुम्हारिमैजानी॥ चाहतसुनेउरामगुनगूढा॥ कीन्हेउप्रश्नमनहुंअ
तिमूढा॥ तातसुनहुंसादरमनलाई॥ कहहुरामकीकथासुहाई॥ महामोहमहिषेशविशाला॥ रामकथाकालिकाकराला॥ रामक
थाशशिकिरनसमाना॥ संतचकोरकरहिजेपाना॥ ऐसैंइसनकीन्हभवानी॥ महादेवतवकहेउवखानी॥ दो॰ कहौसोमतिअनुहा
रिअवउमाशंभुसंवाद॥ भयेउसमयजेहिहेतुसोइसुनिमुनिमिटहिविषाद॥ चौ॰ एकवारत्रेताजुगमाही॥ शंभुगयेकुंभजरिषिपाही॥ सं

रासतीजगज ननिभवानी॥ पूजेरिषिअखिलेस्वरजानी॥ रामकथामुनिवरजवखानी॥ सुनीमहेसपरमसुखमानी॥ रिषिपूछीहरिर
भगतिसुहाइ॥ कहीशंभुअधिकारीपाइ॥ कहतसुनतरघुपतिगुणगाथा॥ कछुदिनतहांरहेंगिरिनाथा॥ मुनिसनविदामागित्रिपुरारि॥
चलेभवनसंगदक्षकुमारी॥ तेहिअवसरभंजनमहिभारा॥ हरिरघुवंशलीन्ह अवतारा॥ पितावचनतजिराजउदासी॥ दंडकवनबिचर
तअविनासी॥ दो॥ हृदयविचारतजातहरकिहिविधिदरसनहोइ॥ गुप्तरूपअवतरेउप्रभुगयेजानसवकोइ॥ सो॥ शंकरमनअतिछोभ
सतीनजानहिमरमसोइ॥ तुलसीदरसनलोभमनअरुलोचनलालची॥ चौ॥ रावणमरणमनुजकरजाचा॥ प्रभुविधिवचनकीन्ह
चहसांचा॥ जोनहिजांउरहहिंपछतावा॥ करतविचारनवननवनावा॥ इहिंविधिभयेउसोचवशईशा॥ तवतेहिसमयजायदशसीसा
लीन्हनीचमारीचहिसंगा॥ भएउकपटसोइतुरतकुरंगा॥ करिछलमूढहरीवैदेही॥ प्रभुप्रभावतसविदितनतेही॥ मृगवधिवंधसहितह
रिआये॥ आश्रमनिरषिनयनजलछाये॥ विरहविकलइवनररघुराई॥ षोजतविपनफिरतदोउभाइ॥ कवहुंजोगवियोगनजाके
देष्याप्रगटविरहदुखताके॥ दो॥ अतिविचित्ररघुपतिचरितजानहिपरमसुजान॥ जोमतिमंदविमोहवसहृदयधरहिंकछुआन॥
चौ॥ शंभुतेहिसमयरामहिदेषा॥ उपजाहियअतिहरषविशेषा॥ भरिलोचनछविसिंधुनिहारी॥ कुसमयजानिनहिकीन्हचिन्हारी॥
जयसच्चिदानंदजगपावन॥ असकहिचलेउमनोजनसावन॥ चलेजातशिवसतीसमेता॥ पुनिपुनिपुलकितकृपानिकेता॥ सती

दशाशंभुकीदेषी॥उर उपजासंदेहविशेषी॥शंकरजगतवंद्यजगदीसा॥सुरनरमुनिसवनावहिसीसा॥तिन्हन्रपसुतनकीन्हप
रिनामा॥कहीसच्चिदानंदपरधामा॥भयेमगनछविताासुविलोकी॥अजहुंप्रीतिउररहैतनरोकी॥दो०॥ब्रह्मजोव्यापकविरजअजअक
लअनीहअभेद॥सोकिदेहधरिहोइनरजाहिनजानतवेद॥चौ॥विस्नुजोसुरहितनरतनधारी॥सोउसर्वज्ञयथात्रिपुरारी॥षोजैसोः
किअज्ञइवनारी॥ज्ञानधामश्रीपतिअसुरारी॥शंभुगिरापुनिम्रषानहोइ॥शिवसर्वज्ञजानसवकोई॥असंसंशयमनभयेउअपा
रा॥होइनहृदयप्रवोधप्रचारा॥यद्यपिप्रगटनकहेउभवानी॥हरअंतरजामीसवजानी॥सुनहुसतीतवनारिसुभाउ॥असंसंशयउः
रधरियनकाऊ॥जासुकथाकुंभजरिषिगाइ॥भक्तिजासुमैंमुनिहिसुनाई॥सोइममइष्टदेवरघुवीरा॥सेवतजाहिसदामुनिधीरा॥छं
मुनिधीरजोगीसिद्धिसंततविमलमनजेहिधावहि॥कहिनेतिनिगमपुराणआगमजासुकीरतिगावहिं॥सोइरामव्यापकब्रह्मभुवन
निकायपतिमायाधनी॥अवतरेउअपनेभक्तिहितनिजतत्रनिजरघुकुलमनी॥सोरठा॥लागनउरउपदेसजद्यपिकहेउशिववार
वहु॥वोलेउविहसिमहेसहरिमायावलजानिजिय॥चौ॥जोतुम्हरेमनअतिसंदेहू॥तौकिनजायपरीछालेहू॥तवलगिवैठवहोवटछा
हीं॥जवलगितुमआवहुमोहिपाहीं॥जैसैंजायमोहभ्रमभारी॥करहुसोजतनविवेकविचारी॥चलीसतीशिवआयसुपाइ॥करतविचा
रकरौंकामाई॥इहाशंभुअसमनउनमाना॥दछसुताकरनहींकल्याना॥मोरेकहेनसंशयजाही॥विधिविपरीतिभलाइनाही॥होइ

बा० हैसोइजोरामरचिराषा॥कोकरितर्कवढावैसारवा॥असकहिलगेजपनहरि नामा॥गईसतीजहांप्रभुसुखधामा॥ ॥दोहरा॥पुनिपु
१४ निहृदयाविचारकरिधरिसीताकररूप॥आगेहोइचलीपंथतेहिजेहिआवतनरभूप॥चौ॥लछिमनदेषिउमाकृतवेषा॥चलतभयेअ
तिभ्रमहृदयविशेषा॥कहिनसकतकछुअतिगंभीरा॥प्रभुप्रतापजानतमतिधीरा॥सतीकपटजानेसुरस्वामी॥सवदरसीसवअंतरजा
मी॥सुमिरतजाहिमिटैअज्ञाना॥सोइसर्वज्ञरामभगवाना॥सतीकीन्हचहताहि दुराऊ॥देषहुनारिसुभावप्रभाऊ॥निजमायाव
लहृदयवषानी॥वोलेविहसिराममृदुवानी॥जोरिपानिप्रभुकीन्हप्रनामू॥पितासमेतलीन्हनिजनामू॥कहेउवहोरिकहावृषकेतू॥
विपनअकेलिफिरतकेहिहेतू॥दो॥रामवचनमृदुगूढसुनिउपजाअतिसंकोच॥सतीसभीतमहेशपहिचलीहृदयवडसोच॥
चौ॥मैशंकरकरकहानमाना॥निजअज्ञानरामपरआना॥जायउतरअवदैहोंकाहा॥उरउपजाअतिदारुणदाहा॥
रा जानाराम सतीदुखपावा॥निजप्रभावकछुप्रगटदिषावा॥सतीदीषकौतुकमगजाता॥आगेरामसहितलघुभ्राता॥फिरि राम
चितवापाछेप्रभुदेषा॥सहितवंधुसियसुंदरवेषा॥जहांचितवततहांप्रभुआसीना॥सेवहिसिद्धमुनीशप्रवीना॥देषेशिवविधिविस्नु १४
अनेका॥अमितप्रभावएकतेंएका॥वंदतचरनकरतप्रभुसेवा॥विविधिवेषदेषेसवदेवा॥दो॥सतीविधात्रीइंदिरादेषीअमितअनूप॥जि
हिंजिहिवेषअनादिसुरतिहिंतिहिंतनअनुरूप॥६६॥चौ॥देषेजहांतहांरघुपतिजेते॥शक्तिनसहितसकलसुरतेते॥जीवचराचर

जेसंसारा॥ देषेसकलअनेकप्रकारा॥ पूजतप्रभुहिदेववहुवेषा॥ रामरूपदूसरनहिदेषा॥ अवलोकेरघुपतिवहुतेरे॥ सीतासहितन
नवेषघनेरे॥ सोईरघुपतिलछमनसोईसीता॥ देषिसतीअतिभईसभीता॥ हृदयकंपतनसुधिकछुनाही॥ नयनमूंदिवैठीमगमाहीं
वहुरिविलोकेउनयनउघारी॥ कछुनदीखनहिदछकुमारी॥ पुनिपुनिनायरामपदसीसा॥ चलीजहातहारहेगिरीसा॥ दो०॥
गईसमीपमहेशतवहसिपूछीकुशलात॥ लीन्हपरीछाकवनविधिकहहुसत्यसववात॥ ६७॥ चौ०॥ सतीसमुझिरघुवीरप्रभाऊ
भयवसशिवसनकीन्हदुराऊ॥ कछुनपरीछीलीन्हगुसांई॥ कीन्हप्रनामतुहारीनाई॥ जोतुम्हकहासोमृषानहोई॥ मोरेमनप्रतीतिअ
तिसोइ॥ तवशंकरदेषेउधरिध्याना॥ सतीजोकीन्हचरितसवजाना॥ वहुरिरामपायहिसिरुनावा॥ प्रेरिसतीजेहिझूठकहावा॥ हरि
इछाभावीवलवाना॥ हृदयविचारतशंभुसुजाना॥ सतीकीन्हसीताकरवेषा॥ शिवउरभयेउविषादविशेषा॥ जोअवकरौंसतीसनप्रीती
मिटहिभक्तिपथहोइअनीती॥ दो०॥ परमपुनीततिनजायनजिकियेप्रेमवडपाप॥ प्रगटनकहतमहेशकछुहृदयअधिसंताप॥ ६८
चौ०॥ तवशंकरप्रभुपदसिरुनावा॥ सुमिरतरामहृदयअसआवा॥ इहितनसतिहिभेटमोहिनाही॥ शिवसंकल्पकीन्हमनमाहीं॥ अ
सविचारिशंकरमतिधीरा॥ चलेभवनसुमिरतरघुवीरा॥ चलतगगनभईगिरासुहाइ॥ जयमहेशभलिभक्तिदृढाई॥ असपनतुमविन
कोकरैआना॥ रामभक्तसमरथभगवाना॥ सुनिनभगिरासतीउरसोचा॥ पूछाशिवहिसमेतसंकोचा॥ कीन्हकवनपनकहहुकृपा

बा०कां० ला॥सत्यधामप्रभुदीनदयाला॥यद्यपिसतीदुरावबहुभाती॥तदपिनकहेउतिपुरआराती॥दो॥सतीहृदयअनुमानकरिसवजानेउसर्ब
१५ ज्ञ॥कीन्हकपटमैंशंभुसननारिसहजजडअज्ञ॥सोरठा॥जलपयसरसविकायदेषहुप्रीतिकीतिभल॥विगलहोइरसजायकपटख
टाईपरतही॥चौ॥हृदयसोचसमुझतनिजकरनी॥चिंताअमितजायनहिवरनी॥क्रपासिंधुशिवपरमअगाधा॥प्रगटनकहेउमोरअ
पराधा॥शंकरसुखअवलोकिभवानी॥प्रभुमोहितजेउहृदयअकुलानी॥निजअघसमुझिनकछुकहिजाई॥तपैअवाइवउरअधिका
ई॥सतीहिससोचजानिवृषकेतू॥कहीकथासुंदरसुखहेतू॥वरनतपंथविविधिइतिहासा॥विस्वनाथपहुंचेकैलासा॥तहांपुनि
शंभुसमुझिपनआपन॥वैठेवटतरकरिकमलासन॥शंकरसहजसरूपसंभारा॥लगीसमाधिअखंडअपारा॥दो॥सतीवस
हिकैलासतवअधिकसोचमनमाहि॥मरमनकोउजाननकछुजुगसमदिवशशिराहि॥७०॥चौ॥नितनवसोचसतीउरभा
रा॥कवजैहोंदुखसागरपारा॥मैंजुकीन्हरघुपतिअपमाना॥पुनिपतिवचनम्रषाकरिजाना॥सोफलमोहिविधातादीन्हा राम
जोकछुउचितरहासोकीन्हा॥अवविधिअसनवूझियेतोही॥शंकरविमुखजिवावतमोही॥कहीनजायकछुहृदयगला १५
नी॥मनमहिरामहिसुमुझिसयानी॥जोप्रभुदीनदयालकहावा॥आरतहरनवेदजसगावा॥तौमैंविनयकरौंकरजोरी॥छु
टहिदेहवेगयहमोरी॥जोमेरेशिवचरणसनेहू॥मनक्रमवचनसत्यव्रतएहू॥दो॥तौसमदरसीसुनियेप्रभुकरौसोवेगिउपा

य॥ होइमरनजिहिविनहिश्रमदुसहविपतिसविहाय॥५१॥ चौ॥ इहिविधिदुखितप्रजेशकुमारी॥ अकथनीयदारुनदुखभा(
री॥ वीतेसंवतसहससतासी॥ तजीसमाधिशंभुअविनासी॥ रामनामशिवसुमिरनलागे॥ जानेसतीजगतपतिजागे॥ जायशं
भुपदवंदनकीन्हा॥ सनमुखशंकरआसनदीन्हा॥ लगेकहनहरिकथारसाला॥ दक्षप्रजेशभयेउतेहिकाला॥ विधिविचा(
रिदेखासवलायक॥ दक्षहिकीन्हप्रजापतिनायक॥ वडअधिकारदक्षजवपावा॥ अतिअभिमानहृदयतवआवा॥ नहिकोउ
असजनमाजगमाही॥ प्रभुतापायजाहिमदनाही॥ दो॥ दक्षलियेमुनिवोलसवकरनलगेउवडजाग॥ निवतेसादरसकल
सुरजेपावतमखभाग॥५२॥ चौ॥ किन्नरनागसिद्धगंधर्वा॥ वधुनसमेतचलेसुरसर्वा॥ विष्णुविरंचिसुरेसविहाई॥ चलेसक
लसुरजानवनाई॥ सतीविलोकेव्योमविमाना॥ जातचलेसुंदरविधिनाना॥ सुरसुंदरीकरहिकलगाना॥ सुनतश्रवन(
छुटहिंमुनिध्याना॥ पूछेउशिवतवकहावखानी॥ पितायज्ञसुनिकछुहरषानी॥ जोमहेशमोहिआयसुदेही॥ कछुदिन
जायरहुमिसिएही॥ पतिपरित्यागहृदयदुखभारी॥ कहैननिजअपराधविचारी॥ वोलीसतीमनोहरवानी॥ भयसंकोचप्रे
मरससानी॥ दो॥ पिताभवनउत्सवपरमजोप्रभुआयसहोय॥ तोमैंजाउंकृपायतनसादरदेषनसोय॥५३॥ चौ॥ कहेउना
कमोरेउमनभावा॥ यहअनुचितनहीनेवतपठावा॥ दक्षसकलनिजसुताबुलाइ॥ हमरेवैरतुमतुमहिबिसराई॥ ब्रह्मसभा

वा०का०
१६

हमसनदुरवमाना॥ तेहितेंअजहुंकरतअपमाना॥ जोविनवोलेजाहुभवानी॥ रहैनसीलसनेहनकानी॥ यद्यपिमित्रपि
तुप्रभुगुरुगेहा॥ जाइयेविनवोलेनसंदेहा॥ तदपिविरोधमानजहांकोई॥ तहांगयेकल्याननहोइ॥ भांतिअनेकशंभुसमुझावा॥
भावीवसनज्ञानउरआवा॥ कहिशिवजाहुजोविनहिंवुलाये॥ नहींभलीवातहमारेभाये॥ दो॥ कहिदेखाहरजतनवहुरहैन
दक्षकुमारि॥ दियेमुष्यगनसंगतवविदाकीन्हत्रिपुरारि॥ चौ॥ पिताभवनतवगईभवानी॥ दक्षत्रासकाहुनसनमानी॥ सा
दरभलहिंमिलीएकमाता॥ भगनीमिलीवहुतमुसकाता॥ दक्षनकछुपूछीकुसलाता॥ सतिहिविलोकिजरेसवगाता॥ सतीजा
यदेखेउसवयागा॥ कतहुंनदीषशंभुकरभागा॥ तवचितचढेउजोसंकरकहेऊ॥ प्रभुअपमानसमुझिउरदहेउ॥ पाछिलदुरव
नहृदयअसव्यापा॥ जसयहभयेउमहापरितापा॥ यद्यपिजगदारुनदुरवनाना॥ सवतेंकठिनजातिअपमाना॥ समुझि
सोसतीभयेउअतिक्रोधा॥ वहुविधिजननीकीन्हप्रवोधा॥ दो॥ शिवअपमाननजायसहिहृदयनहोयप्रवोध॥ सकलसभहि राम
हठहटकितववोलीवचनसक्रोध॥ ७५॥ चौ॥ सुनहुसभासदसकलमुनिंदा॥ कहीसुनीजिन्हशंकरनिंदा॥ सोफलतुरत १६
लहवसवकाहु॥ भलीभांतिपछितावपिताहु॥ संतशंभुश्रीपतिअपवादा॥ सुनियेंजहांतहांअसमरजादा॥ काटियतासुजीभजुव
साई॥ श्रवणमूदिनतचलियेपराइ॥ जगदात्मामहेशपुरारी॥ जगतजनकसवकेहितकारी॥ पितामंदमतिनिंदततेही॥ दक्ष

सुकृत संभव यह देही॥ तजिहौं तुरित देह तेहि हेतु॥ उर धर चंद्रमौलि वृषकेतु॥ अस कहि जोग अगनि तन जारा॥ भये उ सकल मख हा-
हाकारा॥ दो॥ सती मरन सुनि शंभु गन लगे करन मख खीस॥ यज्ञविध्वंस विलोकि भृगु रक्षा कीन्ह मुनीश॥ ७६॥ चौ॥ समा-
चार सब शंकर पाये॥ वीरभद्र करि कोप पठाये॥ यज्ञविध्वंस जाय तिन कीन्हा॥ सकल सुरन विधिवत फल दीन्हा॥ भई यवि-
दित दक्ष गति सोई॥ जस कछु शंभु विमुख कर होई॥ यह इतिहास सकल जग जाना॥ तातें मैं संक्षेप बखाना॥ सती मर-
त हरि सन वर मागा॥ जन्म जन्म हर पद अनुरागा॥ तिहि कारण हिमगिरि ग्रह जाई॥ जनमी पारवती तन पाई॥ जब तें उमा-
सैल ग्रह जाई॥ सकल सिद्धि संपति तहां छाई॥ जहां तहां मुनिन सु आश्रम कीन्हे॥ उचित वास हिमभूधर दीन्हे॥ दो॥ सदा सुम-
न फल [illegible] सहित द्रुम सब नव नाना जाति॥ प्रगटी सुंदर सैल परि मनि आकर बहु भांति॥ ७७॥ चौ॥ सरिता सब पुनीत जल
बहहीं॥ खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं॥ सहज वयर सब जीवन त्यागा॥ गिरि पर सकल करहिं अनुरागा॥ सोह सैल गि-
रिजा ग्रह आयें॥ जिमि जन रामभक्ति के पायें॥ नित नूतन मंगल ग्रह तासू॥ ब्रह्मादिक गावहिं गुण जासू॥ नारद समाचा-
र सब पाये॥ कौतुकही गिरि गेह सिधाये॥ सैलराज बड़ आदर कीन्हा॥ पद पखारि जब आसन दीन्हा॥ नारि सहित मुनि प-
द सिर नावा॥ चरण सलिल सब भवन सिंचावा॥ निज सौभाग्य बहुत विधि वरना॥ सुता बोलि मेली मुनि चरना॥ दो॥ त्रि-

बा०कां
१७

कालज्ञसर्वज्ञतुमगतिसर्वत्रतुम्हारि॥कहहुसुताकेदोषगुणमुनिवरहृदयविचारि॥७८॥चौ॥कहिमुनिविहसिगूढमृदुवा
नी॥सुतातुम्हारिसकलगुणखानी॥सुंदरिसहजसुसीलसयानी॥नामउमाअंबिकाभवानी॥सवलक्षणसंपन्नकुमारी
होइहैसंततपियहिपियारी॥सदाअचलइहिकरअहिवाता॥इहितेंजसपइहैंपितुमाता॥होइहैंपूज्यसकलजगमाहीं॥इहि
सेवतकछुदुर्लभनाहीं॥इहिकरनामसुमिरिसंसारा॥त्रियचढिहहिंपतिव्रतअसिधारा॥सैलसुलक्षणसुतातुम्हारी॥सुन
हुजेअवगुणहैंद्वैचारी॥अगुनअमानमातुपितुहीना॥उदासीनसवसंशयछीना॥दो॥जोगीजटिलअकाममननगनअ
मंगलवेष॥अससवामीइहिकोंमिलिहिपरीहस्तअसरेष॥७९॥चौ॥सुनिमुनिगिरासत्यजीयजानी॥दुखदंपतिहिंउमाह
रखानी॥नारदहूंयहभेदनजाना॥दशाएकसमुझिविलगाना॥सकलसखीगिरिजागिरिमैना॥पुलकसरीरभरेज
लनैना॥होइनमृषादेवरिषिभाषा॥उमासुवचनहृदयधरिराषा॥उपजाशिवपदकमलसनेहू॥मिलनकठिनमन
भासंदेहू॥जानिकुअवसरप्रीतिदुराई॥सखीउछंगवैठिपुनिजाई॥झूठिनहोइदेवरिषिवानी॥सोचहिंदंपतिसखी
सयानी॥उरधरिधीरकहतगिरिराऊ॥कहहुनाथकाकरियेउपाऊ॥दो॥कहमुनीशहिमवंतसुनिजोविधिलिखिलि
लार॥देवदनुजमुनिनागनरकोउनमेटनहार॥चौ॥तदपिएकमैंकहहुंउपाइ॥करहुंहोइजौंदेवसहाई॥जसवर

राम
१७

मैंवरनेउतुमपाहीं॥मिलहिउमहितससंशयनाहीं॥जेजेवरकेदोषवखाने॥तेसवशिवपहिमैंअनुमाने॥जोविवाहशंकरसनहोइ॥
दोषहुंगुनसमकहसवकोउ॥जोअहिसेजशयनहरिकरही॥वुधकछुतिन्हकरदोषनधरहीं॥भानकृसानसर्वरसखाहीं॥तिन्हक
हुंमंदकहतकोउनाहीं॥सुभअरुअसुभसलिलसववहहीं॥सुरसरिकोउअपुनीतनकहहीं॥समरथकहुंनहिदोषगुसांईं॥रवि
पावकसुरसरिकीनाईं॥दो॥जोअससंकाकरहिनरजडअविवेकअभिमाना॥परहिकलपभरिनरकमहिजीवकिइससमा
न॥६१॥चौ॥सुरसरिजलकृतवारुनिजानी॥कवहुंनसंतकरतहितेहिपाना॥सुरसरिमिलतसुपावनजैसें॥ईशअनीसहि
अंतरतैसें॥शंभुसहजसमरथभगवाना॥इहिविवाहसवविधिकल्याना॥दुराराध्यपैअहहिमहेसू॥आसतोषपुनिकीयेकलेसू॥
जोतपकरहिकुमारितुम्हारी॥भावीमेटिसकहित्रिपुरारी॥यद्यपिवरअनेकजगमाहीं॥इहिकहुंशिवतजिदूसरनाहीं॥वरदायकप्र
णतारतिभंजन॥कृपासिंधसेवकमनरंजन॥इछतफलविनशिवअवराधें॥लहहिनकोटिजोगजपसाधें॥दो॥असकहिनार
दसुमिरहरिगिरजहिंदीन्हअसीस॥होइहैइहिकल्याणअवसंशयतजहुगिरीस॥६२॥चौ॥असकहिव्रह्मभुवनमुनिगयेउ
आगिलाचरितसुनहुजसभयेउ॥पतिहिंएकांतपाइकहेमैना॥नाथनमैंसमुझेउमुनिवैना॥जोघरवरकुलहोइअनूपा॥
करियेविवाहसुताअनुरूपा॥नतुकन्यावररहहुकुमारी॥कंतउमाममप्राणपियारी॥जोनमिलहिवरगिरिजहिजोगू॥गिरिज

वा०का० उसहजकहहिसवलोगू॥सोइविचारिपतिकरियेविवाहू॥जिहिनवहोरिहोइउरदाहू॥असकहिपरीचरणधरिसीसा॥वोलेसहित
१८ सनेहगिरीशा॥वरुपावकप्रगटैशशिमाही॥नारदवचनअन्यथानाही॥दो॥प्रियासोचपरहरहुसवसुमिरहुश्रीभगवान॥पारवतीजि
हिन्हिरमईसोइकरहहिकल्यान॥७३॥चौपई॥अवजोतुमहिसुतापरनेहू॥तोअसजायसिखावनदेहू॥करहिसोतपजिहिमिलहिमहे
सू॥आनउपायनमिटहिकलेसू॥नारदवचनसगर्भसहेतू॥सुंदरिसवगुणनिधिवृषकेतू॥असविचारितुमतजहुअसंका॥सवहिभां
तिशंकरअकलंका॥सुनिपतिवचनहरषिमनमांही॥गईतुरतउटिगिरिजापांही॥उमहिविलोकिनयनभरिवारि॥सहितसनेहगो
देवैगारि॥वारहिवारलैतउरलाई॥गदगदकंठनकछुकहिजाई॥जगतमानसर्वज्ञभवानी॥मातसुखदवोलीम्रदुवानी॥दो०॥सुनहु
मातुमैंदीखअससुपनसुनावहुंतोहि॥सुंदरविप्रसुगौरवरअसउपदेसमोहि॥चौ॥करहुजायतपसैलकुमारी॥नारदक
हासोसत्यविचारी॥मातुपितहिपुनियहमतभावा॥तपसुखप्रदहुखदोषनसावा॥तपवलरचतप्रपंचविधाता॥तपवलविस्णुस राम
कलजगत्राता॥तपवलशंभुकरतसंघारा॥तपवलशेशधरतमहिभारा॥तपअधारसवसृष्टिभवानी॥करहुजायतपअस १८
जियजानी॥सुनतवचनविस्मितमहतारी॥सुपनसुनायेउगिरिहिहंकारी॥मातुपितहिवहुविधिसमुझाई॥चलीउ
मातपहितहरखाई॥प्रियपरिवारपितअरुमाता॥भयेउविकलमुखआवनवाता॥दो०॥वेदगिरासुनिआयतवसवहिकहा

समुझाइ॥ पारवतीमहिमासुनतरहेप्रवोधहिपाइ॥८५॥चौ०॥ उरधरिउमाप्राणपतिचरना॥ जाइविपिनलागीतपकर
ना॥ अतिसकुमारिनतनतपजोगू॥ पतिपदसुमिरितजेउसवभोगू॥ नितिनवचरनउपजअनुरागा॥ विसरीदेहतपहिमनला
गा॥ संवतसहससमूलफलखाये॥ सागखायशतवरखगवाये॥ वेलपातमहिपरेसुखाइ॥ तीनसहस्रसंवतसोइषाइ॥ पुनिपरह
रेपुराणेपरना॥ उमानामतवभयेउअपरना॥ कछुदिनभोजनवारिवतासा॥ कियेकठिनकछुदिनउपवासा॥ देखिउमहितपछीनसरी
रा॥ ब्रह्मगिराभइगगनगंभीरा॥दो॥ भयेउमनोरथसुफलतवसुनिगिरिराजकुमारि॥ परिहरिदुसहकलेससवअवमिलिह
हित्रिपुरारि॥८६॥चौ॥ असतपकाहुनकीन्हभवानी॥ भयेउअनेकधीरमुनिज्ञानी॥ अवउरधरहुब्रह्मवरवानी॥ सदासत्यसं
ततसुचिजानी॥ आवैपितावुलावनजवही॥ हठपरिहरिघरजावहुतवही॥ मिलहितुमहिजवसप्तऋषीसा॥ जानेउतवप्रमाण
वागीशा॥ सुनतगिराविधिगगनवखानी॥ पुलकिगातगिरिजाहरखानी॥ उमाचरितसुंदरमैगावा॥ सुनहुशंभुकरचरि
तसुहावा॥ जवतेंसतीजायतनत्यागा॥ तवतेंशिवमनभयेवैरागा॥ जपहिसदारघुनायकनामा॥ जहांतहांसुनहिरामगु
णग्रामा॥दो॥ चिदानंदसुखधामशिवविगतमोहमदमान॥ विचरतमहिधरिहृदयहरि॥ अखिललोकअभिराम॥८७॥चौ
कतहुमुनिनउपदेसहिज्ञाना॥ कतहुरामगुनकरहिवखाना॥ जदपिअकामतदपिभगवाना॥ भक्तविरहदुखदुखितसुजा

बा॰ कां॰ ना॥ इहिविधिगयेकालवहुवीती॥ नितिनइहोइरामपदप्रीती॥ नेमप्रेमशंकरकरदेखा॥ अविचलहृदयभक्तिकीरेखा॥
१९ प्रगटेरामकृतज्ञकृपाला॥ रूपशीलनिधितेजविशाला॥ वहुप्रकारशंकरहिसराहा॥ तुमविनअसव्रतकोनिरवाहा॥ वहुवि
धिरामशिवहिसमुझावा॥ पारवतीकरजनमसुनावा॥ अतिपुनीतगिरिजाकीकरणी॥ विस्तरसहितकृपानिधिवरणी॥५
दो॥ अवविनतीममसुनहुशिवजोमोपरनिजनेहु॥ जायविवाहहुसैलजिहियहमोहिमागेउदेहु॥८८॥ चौ॥ कहशिवज
दपिउचितअसनाहीं॥ नाथवचनपुनिमेटिनजाहीं॥ सिरधरिआयसकरियेतुम्हारा॥ परमधर्मयहनाथहमारा॥ मातपिता
गुरुप्रभुकीवानी॥ विनहिविचारकरियेअसजानी॥ तुमसवभांतिपरमहितकारी॥ अज्ञासिरपरनाथतुम्हारी॥ प्रभुतोषेसु
निशंकरवचना॥ भक्तिविवेकधर्मजुतरचना॥ कहप्रभुहरतुम्हारप्रणरहेऊ॥ अवउररारवहुजोहमकहेऊ॥ अंतरध्यान
भयेअसभारवी॥ शंकरसोईमूरतिउररारवी॥ तवहिसप्तऋषिशिवपहिआये॥ वोलेप्रभुअतिवचनसुहाये॥ दो॥ पारवतीपहजा राम
हुतुमप्रेमपरीछालेहु॥ गिरिहिप्रेरिपठवहुभुवनदूरिकरहुसंदेहु॥८९॥ चौ॥ ऋषिनगौरिदेषीतहांकैसी॥ मूरतिवंततपस्या १९
जैसी॥ वोलेमुनिसुनिसैलकुमारी॥ करहुकवनकारनतपभारी॥ केहिअवराधिहुकातुमचहहु॥ हमसनसत्यमरमसव
कहहु॥ सुनतऋषिनकेवचनभवानी॥ वोलीगूढमनोहरवानी॥ कहतमरममनअतिसकुचाई॥ हसिहोसुनिहमरीजड

ताई॥ मनहठपरानसुनतसिषावा॥ चहतवारिपरभीतिउठावा॥ नारदकहासत्यसोइजाना॥ विनपंरवनहमचहतउडाना॥ देषहुमुनि
अविवेकहमारा॥ चाहतसदाशिवहिंभरतारा॥ दो॥ सुनतवचनविहसेऋषिगिरिसंभवतवदेह॥ नारदकरउपदेससुनिवसेउकवन
करगेह॥८०॥ चौ॥ दक्षसुतउपदेसेउजाई॥ तिन्हिंपुनिभुवनदेषेउआई॥ चित्रकेतकरघरउनघाला॥ कनककशिपुकरपुनिअस
हाला॥ नारदसिरवजेसुनहिनरनारी॥ अवसिभुवनतजिहोइभिषारी॥ मनकपटीतनसज्जनचीन्हा॥ आपसरिससवहिचहकी
न्हा॥ तिन्हकेवचनमानविस्वासा॥ तुमचाहतपतिसहजउदासा॥ निर्गुणनिलज्जकुवेषकपाली॥ अकुलअगेहदिगंवरव्याली॥ क
हहुंकवनसुरवअसवरपायें॥ भलन्हलीठगकेवौराये॥ पंचकहेशिवसतीविवाही॥ पुनिअवडेरिमरायेउताही॥ दो॥ अवसुरवसोवतसो व
चनहिंभीषमागिकरिषाइ॥ सहजएकाकिनकेभवनकवहुकिनारिरवटाइ॥८१॥ चौ॥ अजहुंमानिन्हकहाहमारा॥ हमतुमकहुंवर
नीकविचारा॥ अतिसुंदरसुचिसुरवदसुशीला॥ गावहिंवेदजासुजसलीला॥ दूषणरहितसकलगुणरासी॥ श्रीपतिपुरवैकुंठनिवासी॥
असवरतुमहिमिलाउवआनी॥ सुनतवचनकहविहसभवानी॥ सत्यकहेउऋषिभवतनएहा॥ हठनछूटछूटहिवरुदेहा॥ कनकहुंपुनिप
षानतेंहोई॥ जारेउसहजनपरिहरिसोइ॥ नारदवचननमैंपरिहरिहों॥ वसेभवनउजरेंनहिंडरिहौं॥ गुरुकेवचनप्रतीतिनजेही॥ सुपनेउ
सुगमनसुरवसिधितेहीं॥ दो॥ महादेवअवगुणभवनविस्नुसकलगुणधाम॥ जेहिकरमनलगिजाहिसनताहितेंहीसनकाम॥८२॥ चौपई

वा०कां० जोतुममिलतेउप्रथममुनीशा॥ सुनतीसीखतुम्हरीधरिसीसा॥ अवमैजनमशंभुहितहारा॥ कोगुणदूषणकरहिविचारा॥ जोतुम्ह
२० रेहटहृदयविशेषी॥ रहिनजायविनकियेंवरेषी॥ तौकौतुकियनआलसनाहीं॥ वरकंन्याअनेकजगमाही॥ जन्मकोटिलगिरह
निहमारी॥ वरौंशंभुनतिरहवकुमारी॥ तजौंननारदकरउपदेशा॥ आपकहहिसतवरउमहेशा॥ मैंपायपरौंकहतजगदंवा॥ तुमग्रहग
मनहुंभयेउविलंवा॥ देखिप्रेमवोलेमुनिज्ञानी॥ जयजयजगदंविकाभवानी॥ दो॥ तुममायाभगवानशिवसकलजगतपितुमात॥ ना
यचरनसिरमुनिचलेपुनिपुनिहरषतगात॥८३॥ चौ॥ जायमुनिनहिमवंतपठाये॥ करिविनतीगिरिजहिंग्रहल्याये॥ वहुरिसप्तऋ
षिशिवपहिजाई॥ कथाउमाकीसकलसुनाई॥ भयेमगनशिवसुनतसनेहा॥ हरषिसप्तऋषिगवनेगेहा॥ मनथिरकरितवशंभुसुजा
ना॥ लगेकरनरघुनायकध्याना॥ तारकअसुरभयेउतेहिकाला॥ भुजप्रतापवलतेजविसाला॥ तेहिसवलोकलोकपतिजीते॥ भएदेवसु
खसंपतिरीते॥ अजरअमरसोजीतनजाई॥ हारेसुरकरिविविधलराई॥ तवविरंचिसनजायपुकारे॥ देखेविधिसवदेवदुखारे॥ दो॥ राम
सवसनकहावुझायविधिदनुजनिधानतवहोय॥ शंभुशुक्रसंभूतसुतइहिजीतैरनसोय॥८४॥ चौ॥ मोरकहासुनिकरहुउपाई॥ हो २०
यहैईश्वरकरिहैसहाई॥ सतीजोतजीदक्षमखदेहा॥ जनमीजायहिमाचलगेहा॥ तेहितपकीन्हशंभुहितलागी॥ शिवसमाधिवैठेसव
त्यागी॥ यदपिअहेअसमंजसभारी॥ तदपिवातएकसुनहुहमारी॥ पठवहुकामजायशिवपाहीं॥ करहिंछोभशंकरमनमाहीं॥ तव

हमजायशिवहिसिरुनाई॥करवाउववविवाहवरिजाई॥इहिविधिभलेहिदेवहितहोई॥मतअतिनीककहतसवकोई॥अस्तुतिसु

रनकीन्हअसहेतू॥प्रगटेविषमवानझषकेतू॥दो॥सुरनकहीनिजविपतिसवसुनिमनकीन्हविचार॥शंभुविरोधनकुशलमोहिविहं

सिकहेउअसमार॥८५॥चौ॥तदपिकरवमैंकाजतुम्हारा॥श्रुतिकहपरमधरमउपकारा॥परहितलागितजतजोदेही॥संततसंतप्र

संसतेही॥असकहिचलेउसवहिसिरुनाई॥सुमनधनुषकरसहितसहाई॥चलतमारअसहृदयविचारा॥शिवविरोधध्रुवमरनह

स

मारा॥तवआपनप्रभावविस्तारा॥निजवसकीन्हसकलसंसारा॥कोपेउजवहिवारिचरकेतू॥छिनमेंमिटेउसकलश्रुतिसेतू॥व्र

ह्मचर्यव्रतसंजमनाना॥धीरजधर्मज्ञानविज्ञाना॥सदाचारजपयोगवैरागा॥सवयविवेककपटसवभागा॥छंद॥भागेउविवेकसहाय

सहितसोसुभटसंजुगमहिमुरे॥सदग्रंथपर्वतकंदरनिमंहुंजायतेहिअवसरदुरे॥होनहारकाकरतारकोरखवारजगखरभरपरे

होइमाथकेरतिनाथजानेकोपिकरसरधनुधरे॥दो॥येसजीवजगचरअचरनारिपुरुषअसनाम॥तेनिजनिजमरजादतजि

भयेसकलवसकाम॥८६॥चौ॥सवकेहृदयमदनअभिलाषा॥लतानिहारिनवहिंतरुसाषा॥नदीउमगिअंवुधिकहुंधाई

संगमकरहिंतलावतलाई॥जहांअसदसाजडउकीवरनी॥कोकहिसकतसचेतनकरनी॥पशुपंछीनभजलथलचारी॥भयेउका

मवससमयविसारी॥मदनअंधव्याकुलसवलोका॥निसिदिननहिंअवलोकहिंकोका॥देवदनुजनरकिन्नरव्याला॥प्रेत

न

बा॰का पिशाचभूतवेताला॥ इन्हकीदशानकहेउवखानी॥ सदाकामकेचेरेजानी॥ सिद्धविरक्तमहामुनियोगी॥ तेपिकामवसभयेउवियोगी
२१ छंद॥ भयेकामवसयोगीसतापसपावरनकीकोकहे॥ देखहिंचराचरनारिमय्येब्रह्ममयदेषतरहे॥ अवलाविलोकहिंपुरुषमयजग
पुरुषसवअवलामयं॥ दुइदंडभरिब्रह्मांडभीतरकामकृतकौतुकअये॥ सो॥ धरेनकाहुधीरसवकेमनमनसिजहरे॥ येराखेरघुवीरतेउ
वरेतेहिकालमह॥ चौ॥ उभयघरीअसकौतुकभयेउ॥ जवलगिकामशंभुपहिगयेउ॥ शिवविलोकिसंसाकेउमारू॥ भयेउयथाथितिसव
संसारू॥ भएउतुरतजगजीवसुखारे॥ जिमिमदउतरिगयेमतवारे॥ रुद्रहिदेषिमदनभयमाना॥ दुराधर्षदुर्गमभगवाना॥ फिरतलाजक
छुकरिनहिंजाई॥ मरनठानिमनरचीउपाई॥ प्रगटसितुरतरुचिररतुराजा॥ कुसुमितनवतरुराजविराजा॥ वनउपवनवाटिकातडागा
परमसुभगसवदिशाविभागा॥ जहांतहांजनुउमगतअनुरागा॥ देषिमुएउमनमनसिजजागा॥ छंद॥ जागेउमनोभवमुएउमन
वनसुगतानपरैकही॥ सीतलसुगंधसुमंदमारुतमदनअनिलसखासही॥ विकसेसरनिवहुकंजगुंजतपुंजमंजुलमधुकरा॥ कल राम
हंसपिकसुकसरसरवकरिगाननाचहिंअपछरा॥ दो॥ सकलकलाकरिकोटिविधिहारेउसैनसमेत॥ चलीनअचलसमाधिशि २१
वकोपेउहृदयनिकेत॥ ८७॥ चौ॥ देषिरसालविटपवरुशाखा॥ तेहिपरचढेउमदनमनमाखा॥ सुमनचापनिजसरसंधाने॥ अ
तिरिसिताकिश्रवनलगिताने॥ छाडेउविषमविसिषउरलागे॥ छुटीसमाधिशंभुतवजागे॥ भयेउईशमनछोभविशेषी॥ नयनउघा

रिसकलदिसिदेषी॥ सौरभपल्लवमदनविलोका॥ भयेउकोपकंपेउत्रैलोका॥ तवशिवतीसरनयनउघारा॥ चितवतकामभयेउजरिछा
रा॥ हाहाकारभयोजगभारी॥ डरपेसुरभयेअसुरवारी॥ समुझिकामसुखसोचहिंभोगी॥ भयेअकंटकसाधकयोगी॥ छंद॥ जोगीअकंटक
सुर भयेपतिगतिसुनतरतिमुरछितभई॥ रोदतिवदतिवहुभांतिकरुनाकरतशंकरपहिंगई॥ अतिप्रेमकरिविनतीविविधिविधिजोरिकरसनमु
खरही॥ प्रभुआसतोषकृपालशिवअवलानिरषिवोलेसही॥ दो॥ अवतेंरतितवनाथकरहोइहैनामअनंग॥ विनवपुव्यापकहिस
कलजगसुनिनिजमिलनप्रसंग॥८८॥ चौ॥ जवजदुवंशकृस्नअवतारा॥ होइहैहरनमहामहिभारा॥ कृस्नतनयहोइपतितोरा॥ व
चनअन्यथाहोयनमोरा॥ रतिगवनीसुनिशंकरवानी॥ कथाअपरअवकहोंवखानी॥ देवनसमाचारसवपाये॥ व्रह्मादिकवैकुंठसि
धाये॥ सवसुरविस्नुविरंचिसमेता॥ गयेजहांशिवकृपानिकेता॥ पृथकपृथकतिनकीन्हप्रसंसा॥ भयेप्रसन्नचंद्रअवतंसा॥ वोले
कृपासिंधुवृषकेतू॥ कहहुअमरआयेकेहिहेतू॥ कहविधितुमप्रभुअंतरजामी॥ तदपिभक्तिवसविनवतस्वामी॥ दो॥ सकलसुरन
केहृदयअसशंकरपरमउछाह॥ निजनयननिदेखाचहतनाथतुम्हारविवाह॥ चौ॥ यहउत्सवदेषहिंभरिलोचन॥ सोईकछुकहहुमद
नमदमोचन॥ कामजारिरतिकहुंवरदीन्हा॥ कृपासिंधुयहअतिभलकीन्हा॥ सासतिकरिपुनिकरहिंपसाउ॥ नाथप्रभुनकरसहजसुभा
उ॥ पारवतीतपकीन्हअपारा॥ करहुतासुअवअंगीकारा॥ सुनिविधिविनयसमुझिप्रभुवानी॥ ऐसेंहिंहोहुकहासुखमानी॥ तवदेवन

वा०कां०
२२

दुंदुभि बजाई॥ बरषि सुमन जय जय सुर सांई॥ अवसर जानि सप्त ऋषि आये॥ तुरतहि विधि गिरिभवन पठाये॥ प्रथम गये जहां र
ही भवानी॥ बोले वचन मधुर छल सानी॥ दो॥ कहा हमार न सुनेउ तव नारद के उपदेश॥ अब भा झूठ तुम्हार पन जारेउ काम महेश॥ १००॥ चौ॥
सुन बोली मुसकाय भवानी॥ उचित कहेउ मुनिवर विज्ञानी॥ तुम्हरे जान काम अव जारा॥ अव लगि शंभु रहे सविकारा॥ हमरे जानि सदा
शिव योगी॥ अज अनवद्य अकाम अभोगी॥ जो मै शिव सेये अस जानी॥ प्रीति समेत कर्म मन वानी॥ तौ हमार पन सुनहु मुनीशा॥
करिहहि सत्य कृपानिधि ईशा॥ तुम जु कहा हर जारेउ मारा॥ सो अति वड अविवेक तुम्हारा॥ तात अनल कर सहज सुभाउ॥ हिम(
तेहि निकट जाय नहि काउ॥ गये समीप सो अवसि नसाई॥ अस मनमथ महेश की नाई॥ दो॥ हिय हरषे मुनि वचन सुनि देषि प्रीति वि
स्वास॥ चले भवानिहि नाय सिर गये उहि मांचल पास॥ १०१॥ चौ०॥ सव प्रसंग गिरिपतिहि सुनावा॥ मदन दहन सुनि अति दुख पावा॥ वहुरि
कहेउ रति कर वरदाना॥ सुनि हिमवंत वहुत सुख माना॥ हृदय विचारि शंभु प्रभुताई॥ सादर मुनिवर लिये वुलाई॥ सुदिन सुनक्षत्र सुघरी सु — राम २२
धाई॥ वेगि वेद विधि लगन धराई॥ पत्री सप्त ऋषिन सोइ दीन्ही॥ गहि पद विनय हिंमांचल कीन्ही॥ जाय विधिहि सो दीन्ही पाती॥ वाचत प्रीति
न हृदय समाती॥ लगन वांचि अज सवहि सुनाई॥ हरषे उमुनि सव सुर समुदाई॥ सुमन वृष्टि नभ वाजन वाजे॥ मंगल कलस दसहु दिशि सा
जे॥ दो॥ लगे सवारन सकल सुर वाहन विविध विमान॥ होंहिं सगुन मंगल परम करहिं अपछरा गान॥ १०२॥ शिवहि शंभुगन करहिं सिं — चै०॥१

गारा॥ जटामुकट अहि मौर सवारा॥ कुंडल कंकन पहिरे व्याला॥ तन विभूति पट केहरि छाला॥ ससि ललाट सुंदर सिर गंगा॥ नयन तीन

उपवीत भुजंगा॥ गरल कंठ उर नर सिर माला॥ असिव वेष सिव धाम कृपाला॥ कर त्रिसूल अरु डमरु विराजा॥ चले उ वृषभ चढि वाजहिं वाजा।

देषि सिवहि सुरत्रिय मुसकाहीं॥ वर लायक दुलह नि जग नाहीं॥ विस्नु विरंचि आदि सुर व्राता॥ चढि चढि वाहन चले उ वराता॥ सुर समाज

सव भांति अनूपा॥ नहि वरात दुलह अनुरूपा॥ दो॥ विहसि कहा अस विस्नु तव वोलि सकल दिसि राज॥ विलगि विलगि होइ चलहु सव निज

निज सहित समाज॥ ९२॥ चौ॥ वर अनुहारि वरात न भाई॥ हासी करिहहि पर पुर जाई॥ विस्नु वचन सुनि सुर मुसकाने॥ निज निज सेन सहित

विलगाने॥ मन नहिं मन महेस मुसकाहीं॥ हरि के विंग वचन नहिं जाहीं॥ अति प्रिय वचन सुनत हरि केरे॥ भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे॥ शि

व अनुसासन सुनि सव आये॥ प्रभु पद जलज सीस तिन्ह नाये॥ नाना वाहन नाना वेषा॥ विहसे शिव समाज निज देखा॥ कोउ मुख हीन

विपुल मुख काहू॥ विन पद कर कोउ वहु पद वाहू॥ विपुल नयन कोउ नयन विहीना॥ रिष्टपुष्ट कोउ अति तन छीना॥ छंद॥ तन छीन

कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन तन धरैं॥ भूषण कराल कपाल कर सव सद्य श्रोणित तन भरैं॥ खर स्वान सूकर काक मुख गन वेष

अगनित को गनैं॥ वहु जाति प्रेत पिशाच जोगनि जमाति वरनत नहिं वनैं॥ सो॥ नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सव॥ देषत अति विपरीत

वोलहिं वचन विचित्र अति॥ चौ॥ जस दुलह तस वनी वराता॥ कौतुक विविधि होंहिं मग जाता॥ इहां हिमांचल रचे विताना॥ अति विचित्र नहिं

जाय वखाना॥ सैल सकल जहां लगि जग माहीं॥ लघु विसाल नहि वरनि सिराहीं॥ वन सागर सव नदी तलावा॥ हिमिगिरि सव कों निवत पठा

वा॰का॰ वा॥ कामरूपसुंदरतनधारी॥ सहितसमाजसहितवरनारी॥ गयेउसकलहिंमाचलगेहा॥ गावहिमंगलसहितसनेहा॥ प्रथमहिगिरिवहु
२३ ग्रहसमराये॥ यथाजोगजहांतहांसवछाये॥ पुरसोभाअवलोकसुहाई॥ लागतलघुविरंचिनिपुनाइ॥ छंद॥ लघुलागिविधिकीनिपु
नताअवलोकिपुरअतिसोहही॥ वनितापुरुषसुंदरचतुरछविदेषिमुनिमनमोहही॥ वनवागकूपतडागसरितासुभगसरसवको
कही॥ मंगलविपुलतोरनपताकाकेतुग्रहग्रहसोहही॥ दो॥ जगदंवाजहांअवतरीसोपुरवरनिनजाय॥ रिधिसिधिसंपतिसकलसुख
नितिनूतनअधिकाय॥१०४॥ चौ॥ नगरनिकटवरातसुनिआइ॥ पुरखरभरसोभाअधिकाई॥ करिवनावसजिवाहननाना॥ चलेउले
नसादरअगवाना॥ हियहरषेसुरसेननिहारी॥ हरिहिदेषिअतिभयेसुखारी॥ शिवसमाजजवदेषनलागे॥ विडरिचलेवाहनसवभागे॥ धरिधी
रजतहांरहेसयाने॥ वालकसवलैजीवपराने॥ गयेभवनपूछहिंपितुमाता॥ कहहिंवचनभयकंपितगाता॥ कहहिंकहाकहिजायनवाता॥
यमकरधारकिकिधौंवराता॥ वरवौराहेवरदअसवारा॥ व्यालकपालविभूषणछारा॥ छंद॥ ननछारव्यालकपालभूषणनगनजटि
लभयेकरा॥ संगभूतप्रेतपिशाचयोगनिविकटमुखरजनीचरा॥ जोजीवतरहहिवरातदेषतपुन्यवडतिन्हकरसही॥ देषहिसोउमा राम
विवाहघरघरवातसोलरकनकही॥ दो॥ समुझिमहेशसमाजसवजननिजनकमुसकाहि॥ वालकवुझायेविविधिविधिनिडर २३
होउडरनाहि॥ चौ॥ लैअगवानवरातहिआये॥ दियेसवहिजनवाससुहाये॥ मैनासुभगआरतीसवारी॥ संगसुमंगलगावहिंनारी॥

कंचनथारसोहवरपानी॥परिछनचलीहरहिहरषानी॥विकटवेषरुद्रहिजवदेखा॥अवलनउरभयभयेउविशेषा॥भागिभवनपैठीअतित्रा
सा॥गयेउमहेसजहांजनवासा॥मैनाहृदयभयउदुखभारी॥लीन्हीवोलिगिरिजेसकुमारी॥अधिकसनेहगोदवैठारी॥स्यामसरोजनयनभ
रिवारी॥जेहिविधितुमहिरूपअसदीन्हा॥तेहिजडवरवौराकसकीन्हा॥छंद॥कसकीन्हवरवौराहविधिजेहितुमहिसुंदरतादई॥जोफलचह
तसुरतरुवरहिसोफलवंबूरहिलागही॥तुमसहितगिरितेंगिरौंपावकजरौंजलनिधिमेंपरौं॥घरजाऊअपजसहोऊजगजीवतविवाहन
हौंकरौं॥दो॥भइविकलअवलासकलदुखितदेषिगिरिनारि॥करिविलापरोदतिवदतिसुतासनेहसंभारि॥१०६॥चौ॥नारदकरमैंक
हाजुविगारा॥भवनमोरजेहिवसतउजारा॥असउपदेसउमहिजिनदीन्हा॥वौरेवरहिलागितपकीन्हा॥साचेउउनकेमोहनमाया॥उदा
सीनधनधामनजाया॥परघरघालकलाजनभीरा॥वांझकिजानप्रसवकीपीरा॥जननीहिविकलविलोकिभवानी॥वोलीजुतविवेक
मृदुवानी॥असविचारिसोचहिमतिमाता॥सोनटरैजोरचेउविधाता॥कर्मलिखाजोवावरनाहू॥तौकतदोषलगावहुकाहू॥तुमसन
मिटहिकिविधिकेअंका॥मातुव्यर्थजिनिलेहुकलंका॥छंद॥जिनिलेहुमातुकलंककरुनापरहरहुअवसरनहि॥दुखसुखजोलिखे
उलिलारहमरैजाउंजहांपाउंवतही॥सुनिउमावचनविनीतिकोमलसकलअवलासोचही॥वहुभांतिविधिहिलगायदूषणनयनवारि
विमोचही॥दो॥तेहिअवसरनारदसहितअरुऋषिसप्तसमेत॥समाचारसुनितेहिनगरगवनेतुरतनिकेत॥१०७॥चौ॥तवनारदसवहिसम

बा०का सुनावा॥ एरवकथाप्रसंगसुनावा॥ मैनासत्यसुनहुममवानी॥ जगदंवातवसुताभवानी॥ अजाअनादिशक्तिअविनासिनि॥ सदासं
२४ भुअरधंगनिवासिनि॥ जगसंभवपालनलयकारनि॥ निजइछालीलावपुधारिनि॥ जनमीप्रथमदक्षगृहजाई॥ नामसतीसुंदरतनुपाई
तहहिसतिशंकरहिविवाही॥ कथाप्रसिद्धिसकलजगमाही॥ एकवारआवतशिवसंगा॥ देषेरघुकुलकमलपतंगा॥ भयेउमोहशिवकहा
नकीन्हा॥ भ्रमवसवेषसियाकरलीन्हा॥ छं॥ सियवेषसतीजोकीन्हतिहि अपराधशंकरपरहरी॥ हरविरहजायवहोरिपितुकेयज्ञयोगान
लजरी॥ अवजन्मतुम्हरेभवननिजपतिलागिदारुणतपकिया॥ असजानिसंशयतजहुगिरिजासर्वदाशंकरप्रिया॥ दो॥ सुनिनारदके
वचनतवसवकरमिटाविषाद॥ छिनमहुव्यापेसकलपुरघरघरयहसंवाद॥ १०८॥ चौ॥ तवमैनाहिमवंतआनंदे॥ पुनिपुनिपारवतीपदवंदे॥
नारिपुरुषशिशुजुवासयाने॥ नगरलोकसवअतिहरषाने॥ लगेहोनपुरमंगलगाना॥ सजेसवनहाटकघटनाना॥ भांतिअनेकभईजिवना
रा॥ सूपशास्त्रजसकछुव्यवहारा॥ सोजिवनारकीजायवखानी॥ भवनवसतजेहिमातुभवानी॥ सादरवोलेसकलवराती॥ विस्नुविरंचिदे
वसवजाती॥ विविधपांतिवैठीजिवनारा॥ लागेपुरसननिपुनसुवारा॥ नारिवृंदसुरजेंवतजानी॥ लगीदैनगारीमृदुवानी॥ छंद॥ गारीम राम २४
धुरसुरदेहिसुंदरव्यंगवचनसुनावहीं॥ भोजनकरहिंसुरअतिविलंवविनोदसुनिसचुपावही॥ जेंवनजोवढतआनंदसोसुखकोटिहुनप
रैकह्यो॥ अचवायदीनेपानगवनेवासजहांजाकोरह्यो॥ दो॥ वहुरिमुनिनहिमवंतकहुंलगनसुनायोआय॥ समयविलोकिविवाहकर

पठयेदेवबुलाय॥१०९॥चौ॥बोलिसकलसुरसादरलीने॥सवहीयथोचितआसनदीने॥वेदीवेदविधानसवारी॥सुभगसुमंगलगावहिंनारी॥सिं
हासनअतिदिव्यसुहावा॥वरनिनजायविरंचिवनावा॥वैठेशिवविप्रनसिरनाई॥हृदयसुमिरनिजप्रभुरघुराई॥वहुरिमुनिसनउमावुलाई॥करिसिं
गारसखीलैआई॥देषतरूपसकलसुरमोहैं॥वरनसकैछविअसकविकोहैं॥जगदंविकाजानिभवभामा॥सुरनमनहिमनकीन्हप्रनामा॥सुंद
रतामरजादभवानी॥वदनकोटिनहिजायवखानी॥छं॥कोटिनवदननहिंवननवरननजगजननिसोभामहा॥सकुचहिंकहतश्रुतिशेषसारदमं
दमतितुलसीकहा॥छविखानिमातभवानिगवनमधमंडपशिवजहा॥अवलोकिसकहिनसकुचिपतिपदकमलमनमधुकरतहां॥दो॥मुनि
अनुशासनगणपतिहिपूजेउशंभुभवानि॥कोउसुनिसंशयकरहुजिनिसुरअनादिजियजानि॥११०॥चौ॥जवविवाहकीविधिश्रुतिगाई॥
महामुनिनसोसवकरवाई॥गहिगिरीशकुशकन्यापानी॥भवहिसमर्प्पिजानिभवानी॥पानिग्रहनजवकीन्हमहेशा॥हियहरषेतवसकलसुरे
शा॥वेदमंत्रमुनिवरउच्चरहीं॥जयजयजयशंकरसुरकरहीं॥वाजहिंवाजनविविधविधाना॥सुमनवृष्टिनभभईविधिनाना॥हरगिरिजाकर
भयेउविवाहू॥सकलभुवनभरिरहाउछाहू॥दासीदासतुरंगरथनागा॥धेनुवसनमणिवस्तुविभागा॥अन्नकनकभाजनभरिजाना॥दा
यजदीन्हनजायवखाना॥छं॥दाइजदियोवहुभांतिपुनिकरजोरिहिमभूधरकह्यो॥कादेउपूरणकामशंकरचरणपंकजगहिरह्यो॥शिव
कृपासागरससुरकरसंतोषसवभांतिनकियो॥पुनिगहेपदपाथोजमयनाप्रेमपरिपूरणहियो॥दो०॥नाथउमाममप्राणशमगृहकिंक

वा॰का रीकरेहु॥छमहुसकलअपराधअबहोइप्रसन्नबरदेहु॥१११॥चौ॥बहुबिधिशंभुसासुसमुझाई॥गवनीभुवनचरनसिरनाइ॥जननीउमाबो
२५ लितबलीन्ही॥लैउछंगसुंदरसिखदीनी॥करहुसदाशंकरपदपूजा॥नारिधर्मपतिदेवनदूजा॥बचनकहतभरिलोचनबारी॥बहुरिलायउ
रलिन्हकुमारी॥कतबिधिसृजिनारिजगमाही॥पराधीनसुंनेहुसुखनाही॥भईअतिप्रेमबिकलमहतारी॥धीरजकीन्हकुसमयबिचारी॥पु
निपुनिमिलतपरतगहिचरना॥परमप्रेमकछुजायनबरना॥सबनारिनमिलिभेटिभवानी॥जायजननिउरपुनिलपटानी॥छं॥जननीहिबर
हुरिमिलिचलीउचितआसीससबकाहूदई॥फिरिफिरिबिलोकितिमातुतनतबसखीलैशिवपहिगई॥जाचकसकलसंतोषिशंकरउमासहितभ
वनहिचले॥सबअमरहरषेसुमनबरषेनिसाननभबाजेभले॥दो॥चलेसंगहिमवंततबपहुचावनअतिहेत॥बिबिधिभांतिपरितोषकरिबिदाकी
न्हवृषकेत॥११२॥चौ॥तुरतभवनआयेगिरिराई॥सकलसैलसरलियेबुलाइ॥आदरदानबिनयबहुमाना॥सबकरबिदाकीन्हहिमवाना॥
जबशंकरकैलाशहिआये॥सुरसबनिजनिजलोकसिधाये॥जगतमातुपितुशंभुभवानी॥तेहिसिंगारनकहेउबखानी॥करहिंबिबि राम
धिबिधिभोगबिलासा॥गननसमेतसेवेहिकैलासा॥हरगिरिजाबिहारनितनयउ॥इहिबिधिबिपुलकालचलिगयेउ॥तबजनमेउ २५
उषटबदनकुमारा॥तारकअसुरसमरजेहिमारा॥आगमनिगमप्रसिद्धपुराना॥षटमुखजनमसकलजगजाना॥छं॥जगजानषट
मुखजनमकरमप्रतापपुरुषारथमही॥तेहिहेतमैंवृषकेतसुतकरचरितसंछेपहिकही॥यहउमाशंभुबिबाहजेनरनारिकहहिंजेगावहिं

कल्याणकाजविवाहमंगलसर्वदासुखपावहीं॥ दो॥ चरितशंभुगिरिजारमनवेदनपावहिपार॥ वरनैतुलसीदासकिमिअतिमतिमंदगवा
र॥११३॥ चौ॥ शंभुचरितसुनिसरससुहावा॥ भारद्वाजमुनिअतिसुखपावा॥ वहुलालसाकथापरवाढी॥ नयननीररोमावलीठाढी॥ प्रेम
विवसमुखआवनवानी॥ दसादेखिहरखेमुनिज्ञानी॥ अहोधन्यतवजनममुनीशा॥ तुमहिप्राणसमप्रियगौरीशा॥ शिवपदकमलजिन
हिरतिनाही॥ रामहितेसुपनेउनसुहाही॥ विनछलविश्वनाथपदनेहू॥ रामभक्तकरलक्षणएहू॥ शिवसमकोरघुपतिव्रतधारी॥ विनअघत
जीसतीअसनारी॥ प्रनकरिरघुपतिभक्तिदिखाई॥ कोशिवसमरामहिप्रियभाई॥ दो॥ प्रथमहिमैकहिशिवचरितवूझामरमतुम्हार॥ शुचिसे
वकतुमरामकेरहितसमस्तविकार॥११४॥ चौ॥ मैंजानातुम्हारगुणशीला॥ कहवसुनहुअवरघुपतिलीला॥ सुनुमुनिआजसमागमतोरे॥ क
हिनजायजससुखमनमोरे॥ रामचरितअतिअमितमुनीशा॥ कहिनसकहिशतकोटिअहीशा॥ तदपियथामतिकहहुवखानी॥ सुमिरिगि
रापतिप्रभुधनुपानी॥ सारददारुनारिवसस्वामी॥ रामसूत्रधरअंतरजामी॥ जेहिपरकृपाकरहिजनजानी॥ कविउरअजिरनचावहिवा
नी॥ प्रणवौसोकृपालरघुनाथा॥ वरनौंविसदतासुगुणगाथा॥ परमरम्यगिरिवरकैलासू॥ सदाजहांशिवउमानिवासू॥ दो॥ सिद्धतपोधन
योगिजनसुरकिन्नरमुनिवृंद॥ वसहितहांसुकृतिसकल॥ सेवहिशिवसुखकंद॥११५॥ चौ॥ हरिहरविमुखधर्मरतिनाही॥ तेनरतहांसुपने
उनहिजाहीं॥ तेहिगिरिपरवटविटपविसाला॥ नितिनूतनसुंदरसवकाला॥ त्रिविधिसमीरसुसीतलछाया॥ शिवविश्रामविटपश्रुतिगाया

बा० का० एकवारतेहितरप्रभुगयेऊ॥तरुविलोकिअतिसयसुखभयेऊ॥निजकरडासिनागरिपुछाला॥चढेसहजहिशंभुकृपाला॥कुंददइंदुदरगौ
२६ रसरीरा॥भुजप्रलंवपरिधनमुनिचीरा॥तरुनअरुनअंवुजसमचरना॥नखदुतिभक्तहृदयतमहरना॥भुजंगभूतिभूषणत्रिपुरारी॥आननशर
दचंदछविहारी॥दो॥जटामुकटसुरसरितासिरलोचननलिनविशाल॥नीलकंठलावण्यनिसोहवालविधुभाल॥११६॥चौ॥वैठेसोहतकामरिपु
कैसें॥धरेउशरीरशांतिरसजैसें॥पारवतीभलअवसरजानी॥गईशंभुपहिमातभवानी॥जानिप्रियाअतिआदरकीन्हा॥वामभागआसनहरदीन्हा
वैठीशिवसमीपहरषाई॥पूर्वजनमकथाचितआई॥पतिहियेहेतअधिकअनुमानी॥विहसिउमावोलीप्रियवानी॥कथाजोसकललोकहित
कारी॥सोइपूछनचहशैलकुमारी॥विश्वनाथममनाथपुरारी॥त्रिभुवनमहिमाविदिततुम्हारी॥चरअरुअचरनागनरदेवा॥सकलकरहिंप
दपंकजसेवा॥दो॥प्रभुसमरथसर्वज्ञशिवसकलकलागुणधाम॥योगज्ञानवैराग्यनिधिप्रणतकल्पतरुनाम॥११७॥चौ॥जोमोपरप्रसन्नसुख
रासी॥जानियेसत्यमोहिनिजदासी॥तौप्रभुहरहुमोरअज्ञाना॥कहिरघुनाथकथाविधिनाना॥जासुभवनसुरतरुतरहोई॥ताहिकिदरिद्रजनित राम
दुखसोई॥शशिभूषणअसहृदयविचारी॥हरहुनाथममतिभ्रमभारी॥प्रभुयेमुनिपरमारथवादी॥कहहिंरामकहुंब्रह्मअनादी॥शेषसारदावे २६
दपुराना॥सकलकरहिंरघुपतिगुनगाना॥तुम्हपुनिराममरामदिनराती॥सादरजपहुअनंगअराती॥रामजोअवधिनृपतिसुतसोइ॥कीअजअ
गुनअलखगतिकोई॥दो॥जोनृपतनयतोव्रह्मकिमिनारिविरहमतिभोरि॥देषिचरितमहिमासुनतभ्रमतवुद्धिअतिमोरि॥चौ॥जोअनी

हव्यापकप्रभुकोउ॥कहहुउमायनाथमोहिसोउ॥आज्ञाजानिरिसउरजिनिधरहु॥जेहिविधमोहमिटैसोइकरहु॥मैवनदेषिरामप्रभुताई॥
अतिभयविकलनतुमहिसुनाई॥तदपिमलिनमनवोधनआवा॥सोफभलीभांतिहमैपावा॥अजहुकछुकसंशयमनमोरें॥करहुकृपाविनवौं
करजोरें॥प्रभुतवमोहिवहुभांतिप्रवोधा॥नाथसोसमुझिकरहुजिनिक्रोधा॥तवकरअसविमोहअवनाहीं॥रामकथापररुचिमनमाहीं॥कहहुपु
पुनीतरामगुणगाथा॥भुजंगराजभूषणसुरनाथा॥दो॥वंदौपदधरिधरनिशिरविनयकरौंकरजोरि॥वरनोरघुपतिविशदजसश्रुतिसिद्धांतनि
चोरि॥११९॥चौ॥यदपियोषिताअनअधिकारी॥दासीमनक्रमवचनतुम्हारी॥गूढहुतत्वनसाधदुरावहि॥आरतअधिकारीजहापावहि॥
अतिआरतपुछहुंसुरराया॥रघुपतिकथाकरहुकरिदाया॥प्रथमसोकारनकहहुविचारी॥निरगुणव्रह्मसगुणवपुधारी॥पुनिप्रभुकहहुरा
मअवतारा॥वालचरितसवकहहुंउदारा॥कहहूंयथाजानकीविवाही॥राजतजासोदूषनकाही॥वनवसकीन्हेउचरितअपारा॥कहहुन
नाथजिमिरावनमारा॥राजवैठिकीन्हीवहुलीला॥सकलकहहुशंकरसुखशीला॥दो॥वहुरिकहहुकरुनायतनकीन्हजोअचिरजरा
म॥प्रजासहितरघुवंशमणिकिमिगवनेनिजधाम॥१२०॥चौ॥पुनिप्रभुकहहुसोतत्ववखानी॥येहिविज्ञानमगनमुनिज्ञानी॥भक्तिज्ञानवि
ज्ञानवैरागा॥पुनिसववरनहुसहितविभागा॥औरहुंरामरहस्यअनेका॥कहहुनाथअतिविमलविवेका॥जोप्रभुमैपूछानहिहोइ
सोउदयालराषहुजिनिगोई॥तुम्हत्रिभुवनगुरुवेदवखाना॥आनजीवपांवरकाजाना॥प्रसनउमाकेसहजसुहाये॥छलविहीनसुनि

वा०का॰ शिवमनभाए॥हरहियरामचरितसवुआये॥प्रेमपुलकिलोचनजलछाये॥श्रीरघुनाथरूपउरआवा॥परमानंदअमितसुखपावा॥दो
२७ मगनध्यानरसदंडजुगपुनिमनवाहरिकीन्ह॥रघुपतिचरितमहेशतवहरषितवरनैलीन्ह॥१२१॥चौ॥झूठउसत्यजाहिविनुजाने॥जिमिभुजं
गविनरजुपहिचाने॥येहिजानेजगजाइहिराई॥जागेयथासुपनभ्रमजाई॥वंदौवालरूपसोइराम्॥सवसिधिसुलभजपतजसनाम्॥
मंगलभवनअमंगलहारी॥द्रवौसोदशरथअजिरविहारी॥करिप्रणामरामहित्रिपुरारी॥हरषिसुधासमगिराउचारी॥धन्यधन्यगिरिरा
जकुमारी॥तुमसमाननकोउनहिंहितकारी॥पछेउरघुपतिकथाप्रसंगा॥सकललोकपावनजसगंगा॥तुमरघुवीरचरनअनुरागी॥कीन्हेउप्रस
नजगतहितलागी॥दो॥रामकृपातेंपारवतीसुपनेउतवमनमाहि॥सोकमोहसंदेहभ्रममभविचारकछुनाहि॥१२२॥चौ॥तदपिअसंकाकीन्हे
उसोई॥कहतसुनतसवकरहितहोइ॥जिन्हहरिकथासुनीनहिकाना॥तेश्रवणअहिभवनसमाना॥नयननसंतदरसनहिदेखा॥
लोचनमोरपंखकरलेखा॥तेसिरकंटुतुंवरीसमतूला॥जोननवतहरिगुरुपदमूला॥जिन्हहरिभक्तिहृदयनहिआनी॥जीवतशव राम
मसानतेप्रानी॥येनहिंकरतरामगुनगाना॥जीभसोदादुरजीभसमाना॥कुलिशकठोरनिठुरसोइछाती॥सुनिहरिचरितनजोहरषाती॥ २७
गिरिजासुनहुरामकीलीला॥सुरहितदनुजविमोहनशीला॥दो॥रामकथासुरधेनसमसेवतसवसुखदानि॥संतसभासुरलोकसवकोनसु
नैअसजानि॥१२३॥चौ॥रामकथासुंदरकरतारी॥संशयविहगउडावनहारी॥रामकथाकलिविटपकुठारी॥सादरसुनुगिरिराजकुमारी॥राम

नाम गुण चरित सुहाये॥ जनम करम अगनित श्रुति गाये॥ यथा अनंत राम भगवाना॥ तथा कथा कीरत गुन नाना॥ तदपि यथा श्रुति अस
मति मोरी॥ कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी॥ उमा प्रसन तव परम सुहाये॥ सुखद संत संमत मोहि भाये॥ एक बात नहि मोहि सुहानी॥ यदपि मोह वस क
हेउ भवानी॥ तुम जो कहा राम कोउ आना॥ येहि श्रुति गाव धरहि मुनि ध्याना॥ दो॥ कहहि सुनहि अस अधम नर ग्रसे जे मोह पिशाच॥ पाखंडी हरि प
द विमुख जानहि झूठ न साच॥ १२४॥ चौ॥ अज्ञ अकोविद अंध अभागी॥ काई विषय मुकर मन लागी॥ लंपट कपटी कुटिल विशेषी॥ सु
पनेहु संत सभा नहि देषी॥ कहहि ते वेद असंमत वानी॥ जिनहि सूझत लाभ न हानी॥ मुकर मलिन अरु नयन विहीना॥ राम रूप देख
हिं किमि दीना॥ जिन्ह के अगुन न सगुन विवेका॥ जल्पहिं कल्पित वचन अनेका॥ हरिमाया वस जगत भ्रमाहीं॥ तिनहि कहत कछु
अघटित नाही॥ वातल भूत विवस मतवारे॥ ते नहिं वोलहिं वचन विचारे॥ ये कृत महा मोह पद पाना॥ तिन्ह कर कहा न करिये काना॥ सो॥
अस निज हृदय विचारि तज संशय भज राम पद॥ सुनि गिरिराज कुमारि भ्रम तम रवि कर वचन मम॥ चौ॥ सगुनहि अगुनहि नहि क
छु भेदा॥ गावहिं मुनि पुराण वुध वेदा॥ अगुन अरूप अलख अज जोई॥ भक्त प्रेम वस सगुन सो होई॥ जो गुन रहित सगुन सेई कैसें॥ जलहि
म उपल ग नहिं जैसें॥ जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा॥ तेहि किमि कहिये विमोह प्रसंगा॥ राम सच्चिदानंद दिनेशा॥ नहिं तहां मोह निशा लवलेशा
सहज प्रकार रूप भगवाना॥ नहि तहां पुनि विज्ञान विहाना॥ हरष विषाद ज्ञान विज्ञाना॥ जीव धर्म अभिमत अभिमाना॥ राम ब्रह्म व्यापक

बा० का
२८

जगजाना॥ परमानंदपरेशपुराना॥ दो॥ पुरुषप्रसिद्धप्रकाशनिधिप्रगटपराचरनाथ॥ रघुकुलमणिमम स्वामिसोकहिशिवनायेमाथ
१२५॥ चौ॥ निजभ्रमनहिंसमुझहिअज्ञानी॥ प्रभुपरमोहधरहिंजडप्रानी॥ यथागगनघटपटलनिहारी॥ झांपेउभानकहहिंकुविचारी॥ चित
वतलोचनअंगुलिलैयें॥ प्रगटजुगलशशितिनकेभाये॥ उमारामविषएकअसमोहा॥ नभतमधूमधूरिजिमिसोहा॥ विषयकरनसुरजीवस
मेता॥ सकलएकतेंएकसचेता॥ सबकरपरमप्रकासकजोई॥ रामअनादिअवधपतिसोई॥ जगतप्रकाशिप्रकाशकरामू॥ मायाधी
शज्ञानगुनधामू॥ जासुसत्यतातेंजडमाया॥ भाससत्यइवमोहसहाया॥ दो॥ रजतसीपमहुंभासजिमियथाभानकरवारि॥ यदपि
मृषातिहूंकालसोईभ्रमनसकेकोइटारि॥ १२६॥ चौ॥ इहिविधिजगहरिआश्रितरहेइ॥ यदपिअसत्यदेतदुखअहई॥ जोसुपनेउशिरका
टैकोई॥ विनजागेनदूरिदुखहोई॥ जासुकृपाअसभ्रममिटिजाई॥ गिरिजासोईकृपालरघुराई॥ आदिअंतकोउजासुनपावा॥ मतिअ
नुमानिनिगमजसगावा॥ विनपदचलैसुनैविनकाना॥ करविनकर्मकरैविधिनाना॥ आननरहितसकलरसभोगी॥ विनवानीवक्ताव
डजोगी॥ तनविनपरसनयनविनदेखा॥ ग्रहेघ्राणविनवासअशेषा॥ अससबभांतिअलौकिककरनी॥ महिमाजासुजायनहिंवरनी॥ दो॥
जिन्हिइमिगावहिंवेदवुधजाहिधरहिमुनिध्यान॥ जोइदशरथसुतभक्तहितकोशलपतिभगवान॥ १२७॥ चौ॥ काशीमरतजंतुअवलोकी॥ जासुनामबल
करउंविसोकी॥ सोइप्रभुमोरचराचरस्वामी॥ रघुवरसवउरअंतरजामी॥ विवसहुजासुनामनरकहहीं॥ जनमअनेकरचितअघदहहीं॥ सा

राम
२८

ते रसुमिरन ये नरक रही॥ भववारिधिगोपद इव तरही॥ राम सो परमात्मा भवानी॥ तिहि भ्रम अति अविहित तव वानी॥ अस संशय आनत उर माही॥ ज्ञा
न वैराग सकल गुण जाही॥ सुनि शिव के भ्रम भंजन वचना॥ मिटि गई सकल तर्क की रचना॥ भई रघुपति पद प्रीति प्रतीती॥ दारुण असंभावना वीती॥
दो॥ पुनि पुनि शिव पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि॥ वोली गिरिजा वचन वर मनहुं प्रेम रस सानि॥ १२८॥ चौ॥ शशि कर सम सुनि गिरा तुम्हा
री॥ मिटैउ मोह शरदातप भारी॥ तुम कृपाल सव संशय हरेउ॥ राम स्वरूप जानि मोहि परेउ॥ नाथ कृपा अव गयेउ विषादा॥ सुखी भई प्रभु चरण
प्रसादा॥ अव मोहि आपनि किंकिरि जानी॥ यदपि सहज जड नारि अयानी॥ प्रथम मैं पूछा सोई कहहू॥ जो मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू॥ राम ब्रह्म चि
नमय अविनासी॥ सर्व रहित सव उर पुर वासी॥ नाथ धरेउ नर तन केहि हेतू॥ मोहि समुझाय कहहु वृषकेतू॥ उमा वचन सुनि परम विनीता॥
राम कथा पर प्रीति पुनीता॥ दो॥ हिय हरषेउ कामारि तव शंकर सहज सुजान॥ वहु विधि उमहि प्रसंसित वोले कृपानिधान॥ १२९॥
सो॥ सुनु शुभ कथा भवानि रामचरितमानस विमल॥ कहेउ भुसंडि वखानि सुनावि हंग नायक गरुड॥ सो॥ सो संवाद उदार जेहि विधि भा आगे
कहव॥ सुनहु राम अवतार चरित परम सुंदर अनघ॥ हरि गुन नाम अपार कथा रूप अगनित अमित॥ मैं निज मति अनुसार कहौं उमा सादर सु
नहु॥ चौ॥ सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाये॥ विपुल विसद निगमागम गाये॥ हरि अवतार हेतु येहि होई॥ इदमित्थं कहि जाय न सोई॥ राम अ
तर्क्य वुद्धि मन वानी॥ मत हमार अस सुनहु सयानी॥ तदपि संत मुनि वेद पुराना॥ जस कछु कहहिं सुमति अनुमाना॥ तस मैं सुमुखि सुनाउं

बा०का०
२९
तोही॥समुझिपरैजसकारनमोही॥जबजबहोइधर्मकीहानी॥बाढहिअसुरअधमअभिमानी॥तबतबप्रभुधरिविविधिशरीरा॥हरहिकृपानि
धिसज्जनपीरा॥दो॥असुरमारिथापहिंसुरनराषहिनिजश्रुतिसेतु॥जगविस्तारहिंविशदजसरामजनमकरहेतु॥१२०॥चौ॥सोइजस
गायभक्तभवतरहीं॥कृपासिंधजनहिततनधरहीं॥रामजनमकरहेतुअनेका॥परमविचित्रएकतेएका॥जनमएकदुइकहउँवषानी
सावधानसुनिसुमतिसयानी॥द्वारपालहरिकेप्रियदोउ॥जयअरुविजयजानसबकोउ॥विप्रश्रापतेदोउभाइ॥तामसअसुरदेहतिन्ह
पाई॥कनककशिपुअरुहाटकलोचन॥जगतविदितसुरपतिमदमोचन॥विजयीसमरवीरविष्याता॥धरिवाराहवपुएकनिपाता॥होय
नरहरिदूसरपुनिमारा॥जनप्रहलादसुजसविस्तारा॥दो॥भयेउनिशाचरजाइतेईमहावीरवलवान॥कुंभकरणरावणसुभटसुरवि
जइजगजान॥१२१॥चौ॥मुक्तिनभएहतेभगवाना॥तीनजनमद्विजवचनप्रमाना॥एकवारतिन्हकेहितलागी॥धरेउसरीरभक्तअनुरागी
कश्यपअदितितहांपितुमाता॥दशरथकौशल्याविष्याता॥एककलपइहिविधिअवतारा॥चरितपवित्रकियेसंसारा॥एककलपसुरदेखिदुखा राम
रे॥समरजलंधरसनसवहारे॥शंभुकीन्हसंग्रामअपारा॥दनुजमहावलमरहिनमारा॥परमसतीअसुराधिपनारी॥तिहिवलनाहिनजीति २९
पुरारी॥दो॥छलकरिटारेउतासुव्रतप्रभुसुरकारजकीन्ह॥जवतेजान्योमरमतवश्रापकोपकरदीन्ह॥१२२॥चौ॥तासुश्रापहरिकीन्हप्रमाना॥कौ
तुकनिधिकृपालभगवाना॥जहांजलंधररावणभयेउ॥रनहतिरामपरमपदभयेउ॥एकजनमकरकारणएहा॥येहिलगिरामधरीनरदेहा॥प्रति

अवतारकथाप्रभुकेरी॥सुरमुनिवरनीकविनघनेरी॥नारदश्रापदीन्हएकवारा॥कलपएकतेहिलगिअवतारा॥गिरिजाचकितभईसुनिवानी॥
नारदविस्नभक्तपुनिज्ञानी॥कारनकवनश्रापमुनिदीन्हा॥काअपराधरमापतिकीन्हा॥यहप्रसंगमोहिकहहुत्रिपुरारी॥मुनिमनमोहसोअ
चिरजभारी॥दो॥वोलेविहसिमहेसतवज्ञानीमूढनकोय॥जेहिजसरघुपतिकरहिजससोतसतेहिछिनहोय॥१३३॥सोरठा॥कहौंरामगुनगा
थभारद्वाजसादरसुनहु॥भवभंजनरघुनाथभजतुलसीतजमानमद॥चौ॥हिमगिरिगुहाएकअतिपावन॥वहेसमीपसुरसरिपावन॥आश्रम
परमपुनीतसुहावा॥देखिदेवऋषिअतिमनभावा॥निरखिशैलशरिविपनविभागा॥भएउरमापतिपदअनुरागा॥सुमिरतहरिहिश्रापगति
वाधी॥सहजविमलमनलागिसमाधी॥मुनिगतिदेखिसुरेशडराना॥कामहिवोलिकीन्हसनमाना॥सहितसहायजाहुममहेतू॥चलेउ
हरषिहियेजलचरकेतू॥सुनिसुरेशमनमहुंअसत्रासा॥चहतदेवऋषिममपुरवासा॥येकामीलोलपजगमाही॥कुटिलकाकवसवहि
डराहीं॥दो॥सूषहाडलैभागसठस्वाननिरखिमृगराज॥छीनिलेईजिनिजडितितिमिसुरपतिहिनलाज॥१३४॥चौ॥तेहिआश्रमहिमदन
जवगयेउ॥निजमायावसतनिरमयेउ॥कुसमितविविधिविटपवहुरंगा॥कूजहिकोकिलगुंजतभृंगा॥चलीसुहावनित्रिविधिवयारी॥
कामकृसानवढावनहारी॥रंभादिकसुरनारिनवीना॥सकलअसमसरकलाप्रवीना॥करहिंगानवहुताननतरंगा॥वहुविधिक्रीडहिंपा
निपतंगा॥देखिसहायमदनहरषाना॥कीन्हेउपुनिप्रपंचविधिनाना॥कामकलाकछुमुनिहिनव्यापी॥निजभयडरेउमनोभवपापी॥सींवकिचा

बा॰ का॰ ३० पिसकैकोउतासू ॥ बडरखवाररमापतिजासू ॥ दो ॥ सहितसहायसभीतअतिमानिहारिमननमैन ॥ गयेउजायपुनिचरनकहिसुठिआ
रतबैन ॥ १२५ ॥ चौ ॥ भयउननारदमनकछुरोषा ॥ कहिप्रियवचनकामपरितोषा ॥ नायचरणसिरआयसुपाई ॥ गयउमदनतवसहितस
हाई ॥ मुनिसुशीलताआपनकरनी ॥ सुरपतिसभाजायसववरनी ॥ सुनिसवकेमनअचिरजआवा ॥ मुनिहिप्रसंसिहरिहिसिरुनावा ॥ तवर
नारदगवनेउशिवपाहीं ॥ जीतिकामअहमितिमनमाहीं ॥ मारचरितशंकरहिंसुनाये ॥ अतिप्रियजानिमहेशसिखाये ॥ वारवारविनवौंमु
नितोही ॥ जिमियहकथासुनायेउमोही ॥ तिमिजिनहरिहिसुनावहुकवहू ॥ चलहिप्रसंगदुरावहुतवहू ॥ दो ॥ शंभुदीन्हउपदेसहितनहि
नारदहिसुहान ॥ भारद्वाजकौतुकसुनहुहरईछावलवान ॥ १२६ ॥ चौ ॥ रामकीन्हचाहतसोईहोई ॥ करहिअन्यथाअसनहिकोई ॥ शंभुबच
नमुनिमननहिभाये ॥ तवविरंचकेलोकसिधाये ॥ एकवारकरतलवरवीना ॥ गावतहरिगुनगानप्रवीना ॥ छीरसिंधगवनेउमुनिनाथा ॥
जहावसश्रीनिवासश्रुतिगाथा ॥ हरषिमिलेउठिरमानिकेता ॥ वैठेआसनऋषिहिसमेता ॥ वोलेउविहसिचराचरराया ॥ वहुतदिन राम ३०
नमुनिकीन्हीदाया ॥ कामचरितनारदसवभाषे ॥ यद्यपिप्रथमवरजिशिवराषे ॥ अतिप्रचंडरघुपतिकीमाया ॥ योहिनमोहअसकोजग
जाया ॥ दो ॥ रूखवदनकरिवचनमृदुवोलेश्रीभगवान ॥ तुमरेसुमिरतेंमिटहिमोहमारमदमान ॥ १२७ ॥ दो ॥ सुनिमुनिमोहहोयमनजाके
ज्ञानवैराजहृदयनहिताके ॥ ब्रह्मचरजव्रतरतमतिधीरा ॥ तुमहिकिकरहिमनोभवपीरा ॥ नारदकहेउसहितअभिमाना ॥ क्रुपातुम्हारीसक

लभगवाना ॥ करुनानिधिप्रभुमनहिविचारी ॥ उरअंकुरेउगर्वतरुभारी ॥ वेगिसोमैंडारिहौंउषारी ॥ प्रनहमारसेवकहितकहितकारी ॥ मुनिकर
हितममकौतुकहोई ॥ अवसिउपायकरवमैसोई ॥ तवनारदहरिपदशिरनाई ॥ चलेहृदयअहमितिअधिकाई ॥ श्रीपतिनिजमायाजवप्रेरी ॥ सुनहु
कठिनकरनीतिहिकेरी ॥ दो ॥ विरचेउमगमहनगरतेहिशतयोजनविस्तार ॥ श्रीनिवासपुरतेअधिकरचनाविविधिप्रकार ॥ १२७ ॥ चौ ॥ वसहिं
नगरसुंदरनरनारी ॥ जनुवहुमनसिजरतितनधारी ॥ तेहिपुरवसतसीलनिधिराजा ॥ अगनितहयगयसेनसमाजा ॥ शतसुरेशसमविभववि
लासा ॥ नृपतेजवलनीतिनिवासा ॥ विश्वमोहनीतासुकुमारी ॥ श्रीविमोहजसनृपनिहारी ॥ सोईहरिमायासवगुणखानी ॥ सोभातासुकिजा
यवखानी ॥ करैस्वयंवरसोनृपवाला ॥ आयेतहाअगनितमहिपाला ॥ मुनिकौतुकीनगरतेहिगयेउ ॥ पुरवासिनसवपूछतभयेउ ॥ सुनिसव
चरितभूपग्रहआये ॥ करिपूजानृपमुनिवैठाये ॥ दो ॥ आनिदिखाइनारदहिभूपतिराजकुमारि ॥ कहहुनाथगुणदोषसवइहिकेहृदयविचा
रि ॥ चौ ॥ देखिरूपमुनिविरतिविसारी ॥ वडीवारलगिरहेउनिहारी ॥ लछणतासुविलोकिलुभाने ॥ हृदयहरषनहिप्रगटवखाने ॥ जोइहिवरैअ
मरसोइहोइ ॥ समरभूमितेहिजीतनकोइ ॥ सेवहिसकलचराचरताही ॥ वरहिशीलनिधिकन्याजाही ॥ लच्छणसवविचारउरराखे ॥ कछुकवना
यभूपसनभाषे ॥ सुतासुलच्छणकहिनृपपाहीं ॥ नारदचलेउसोचमनमाहीं ॥ करौंजायसोईजतनविचारी ॥ जेहिप्रकारमोहिवरहिकुमारी ॥ जप
तपकछुनहोयइहिकाला ॥ हेविधिमिलइकवनविधिवाला ॥ दो ॥ इहिअवसरचहियेपरमसोभारूपविसाल ॥ योविलोकिरीझहिकुवरितवमेल

बा॰का हिजयमाला॥१४०॥ चौ॥ हरसन मांगहुं सुंदरताइ॥ होइहै जातगहर मोहि भाई॥ मोरे हित हरि सम नहि कोऊ॥ इहि अवसर सहाय सोइ होऊ
३१ बहुविधि विनय कीन्ह तेहि काला॥ प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला॥ प्रभु विलोकि मुनि नयन जुडाने॥ होयहै काज हिये हरषाने॥ अति आरत
कहि कथा सुनाइ॥ करहु कृपा हरि होहु सहाई॥ आपन रूप देहु प्रभु मोही॥ आंन भांति नहि पावउं बोही॥ जेहि विधि नाथ होय हित मोरा॥
करहु सो वेगि दास मैं तोरा॥ निज मायाबल देषि विशाला॥ हिये हसि बोले दीनदयाला॥ दो॥ येहि विधि होइहै परम हित नारद सुनहु तुम्हार॥ सो
इ हम करब न आन कछु वचन न मृषा हमार॥१४१॥ चौ॥ कुपथ माग रुज व्याकुल रोगी॥ वैद न देइ सुनहु मुनि योगी॥ इहि विधि हित तुम्हार
मैं ठयेउ॥ कहि अस अंतरहित प्रभु भयेउ॥ मायाविवस भयेउ मुनि मूढा॥ समुझि हृदय हरि गिरा न गूढा॥ गवने तुरत तहां ऋषिराइ॥ जहां स्वयं
वर भूमि बनाई॥ निज निज आसन वैठे राजा॥ वहु वनाव करसहित समाजा॥ मुनि मन हरष रूप अति मोरें॥ मोहि तजि आन वरै नहिं भोरै
मुनि हित कारण कृपानिधाना॥ दीन्ह कुरूप न जाय वखाना॥ सो चरित्र लखि काहु न पावा॥ नारद जानि सवन सिर नावा॥ दो॥ रहे तहां द्वय राम
रुद्रगन ते जानत सव भेव॥ विप्र वेष देखत फिरहि परम कौतुकी तेव॥१४२॥ चौ॥ तेहि समाज वैठे मुनि जाइ॥ हृदय रूप अहमिति अधिकाइ॥ तहां ३१
वैठे महेशगन दोउ॥ विप्र वेष गति लखहि न कोउ॥ करहि कूटि नारदहिं सुनाई॥ नीकि दीनि हरि सुंदरताई॥ रीझहि राजकुवरि छवि देखी॥ ईनहि
वरहि हरि राज विशेषी॥ मुनिहि मोह मन हाथ पराये॥ हसहि शंभुगन अति सचु पाये॥ यदपि सुनहि मुनि अटपटी वानी॥ समझि न परै वुद्धि भ्र

मसानी॥काहूनलखासोचरितविशेषा॥सोसरूपनृपकन्यादेषा॥मरकटवदनभयंकरदेही॥देषतहृदयक्रोधभातेही॥दो॥सखीसंगले
कुवरितवचलीजनुराजमराल॥देषतफिरतमहीपसवकरसरोजजयमाल॥१४३॥चौ॥जेहिदिसिवैठेउनारदफूली॥सोदिसितेहिनविलोकतभूली
पुनिपुनिमुनिउकसतअकुलाई॥देषिदसाहरगनमुसकाई॥धरिनृपतनतहांगयेउकृपाला॥कुवरिहरषिमेलीजयमाला॥दुलहनिलैगये
लछिनिवासा॥नृपसमाजसवभयेउनिराजा॥मुनिअतिविकलमोहमतिनाठी॥मणिगिरिगइछुटिजनुगांठी॥तवहरगनवोलेमुसका
ई॥निजमुखमुकरविलोकहुजाइ॥असकहिदोउभागेभयभारी॥वदनदेखिमुनिवारिनिहारी॥वेषविलोकिक्रोधअतिवाढा॥तिनहुश्रा
पदीन्हेउअतिगाढा॥दो॥होहुनिशाचरजायतुमकपटीपापीदोउ॥हसेउहमहिसोलेहुफलवहुरिहसहुमुनिकोउ॥१४४॥चौ॥मुनि
जलदेखिरूपनिजपावा॥तदपिनहृदयसंतोषनआवा॥फरकतअधरकोपमनमाहीं॥सपदिचलेकमलापतिपाहीं॥देहोंश्रापकिमरिहोंजाई॥
जगतमोरउपहासकराई॥वीचहिपंथमिलेदनुजारी॥संगरमासोइराजकुमारी॥वोलेवचनमधुरसुरसाई॥मुनिकहाचलेउविकलकीनाइ॥सुन
ततवचनउपजाअतिक्रोधा॥मायावसनरहामनवोधा॥परसंपदाकहुनहिदेखी॥तुह्मरैईरषाकपटविशेषी॥मथतसिंधुरुद्रहिवौरावा॥सुर
नप्रेरिविषपानकरावा॥दो॥असुरसुराविषसंकरहिआपरमामणिचारु॥स्वारथसाधककुटिलतुह्मसदाकपटव्यवहार॥१४५॥चौ॥परमस्वतं
त्रनसिरपरकोइ॥भावैमनहिकरहुतुमसोई॥भलेहिमंदमंदहिभलकरहूं॥विस्मयहरषनहियेकछुधरहू॥इहकिउहकिपरचेउसवकाहू॥अति

वा०का० असंकमनसदाउछाहू॥ कर्मसुभासुभतुमहिनबाधा॥ अबलगितुमहिनकाहूसाधा॥ भलेभवनअबबायनदीन्हा॥ पावहुगेफलआप
३२ नकीन्हा॥ बंचेउमोहिजवनिधरिदेहा॥ सोइतनधरहुश्रापममएहा॥ कपिआकृतितुम्हकीन्हहमारी॥ करहहिंकीससहायतुम्हारी॥ ममअपकारकी
न्हतुम्हभारी॥ नारिविरहतुम्हहोइदुखारी॥ दो॥ श्रापसीसधरहरषहियप्रभुबहुविनतीकीन्ह॥ निजमायाकीप्रबलताहरषिकृपानिधिलीन्ह॥ १४६॥
चौ॥ जबहरिमायादूरिनिवारी॥ नहितहांरमानराजकुमारी॥ तबमुनिअतिसभीतहरिचरना॥ गयेपापप्रणतारतहरना॥ मृषाहोहुममश्रापक
पाला॥ ममइछाकहदीनदयाला॥ मैदुरवचनकहेउबहुतेरे॥ कहैमुनिपापमिटहिकिमिमेरे॥ जपहुजायशंकरसतनामा॥ होइहिहृद
यतुरितविश्रामा॥ कोउनहिशिवसमानप्रियमोरैं॥ असप्रतीतितजहुजिनमोरैं॥ येहिपरकृपानकरहिपुरारी॥ सोनपावमुनिभक्तिहमारी॥
असउरधरिमहिविचरहुजाई॥ अबनतुमहिमायानियराइ॥ दो॥ बहुविधिमुनिप्रबोधिप्रभुतबभयेअंतरध्यान॥ सत्यलोकनारदचलेकरत
रामगुनगान॥ १४७॥ चौ॥ हरगुनमुनिहिजानपथदेखी॥ विगतमोहमनहरषविशेषी॥ अतिसमीपनारदपहिआवे॥ गहपदनारदवचनसुनावे॥ राम
हरगनहमनविप्रमुनिराया॥ बडअपराधकीन्हफलपाया॥ श्रापअनुग्रहकरहुकृपाला॥ बोलेउनारददीनदयाला॥ निशाचरजायहोहु ३२
तुमदोउ॥ वैभवविपुलतेजवलहोउ॥ भुजवलविश्वजीवतुमजहवां॥ धरिहैविष्णुमनुजतनतहवां॥ समरमरनहरिहाथतुम्हारा॥ होहिहोमु
क्तिनपुनिसंसारा॥ चलेजुगलमुनिपदसिरनाई॥ भयेउनिशाचरकालहिपाई॥ दो॥ एककल्पइहिहेतप्रभुलीन्हमनुजअवतार॥ सुररंजनस

ज्ञान सुखद हरि भंजन भ्रम भीर ॥१४८॥ चौ॥ इहि बिधि जनम करम हरि केरे ॥ सुंदर सुखद बिचित्र घ नेरे ॥ कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं ॥ चारु चरि
त नाना बिधि करहीं ॥ तब तब कथा मुनीशन गाई ॥ परम पुनीत प्रबंध बनाई ॥ बिबिधि प्रसंग अनूप बखाने ॥ करहिं न सुनि आचर्य सयाने ॥ हरि अनंत
हरि कथा अनंता ॥ कहहिं सुनहिं बहु बिधि सब संता ॥ रामचंद्र के चरित सुहाये ॥ कल्प कोटि लगि जाहिं न गाये ॥ यह प्रसंग मे कहा भवानी ॥ हरि मा
या मोहहि मुनि ज्ञानी ॥ प्रभु कौतुकी प्रणत हितकारी ॥ सेवत सुलभ सकल दुखहारी ॥ दो॥ सुर नर मुनि कोउ नाहि येहि न मोह माया प्रबल ॥ अस (
बिचारि मन माहि भजिये महा माया पतिहि ॥ चौ॥ अवर हेत मुनि सैलकुमारी ॥ कहे बिचित्र कथा बिस्तारी ॥ येहि कारन अज अगुन अनूपा ॥ ब्रह्म
भये कोशलपुर भूपा ॥ जो प्रभु बिपन फिरत तुम देखा ॥ बंधु समेत धरे मुनि बेखा ॥ जासु चरित अवलोकि भवानी ॥ सती शरीर रही बौरानी ॥ अजहु
न छाया मिटत तुह्मारी ॥ तासु चरित सुनि रजु महारी ॥ लीला कीन्ह जो तहि अवतारा ॥ सा सब कहिहौं मति अनुसारा ॥ भारद्वाज सुनि शंकर बानी ॥ (
सकुचि सप्रेम उमा हरषानी ॥ लगे बहुरि बरनन बृषकेतू ॥ सो अवतार भयो येहि हेतू ॥ दो॥ सो मैं तुम सन कहब सब सुनु मुनीश मन लाय ॥ राम कथा
कलि मल हरन मंगल करनि सुहाय ॥१४९॥ चौ॥ स्वायंभू मनु अरु सतरूपा ॥ जिन्ह ते भई नर सृष्टि अनूपा ॥ दंपति धर्म आचरन नीका ॥ अजहु
गाव स्रुति जिन्ह कर लीका ॥ नृप उत्तानपाद सुत जासू ॥ ध्रुव हरि भक्त भयो सुत तासू ॥ लघु सुत नाम प्रियब्रत ताही ॥ बेद पुरान प्रसंसहि जाही ॥ देव
हुति पुनि तासु कुमारी ॥ जो मुनि करदम की प्रिय नारी ॥ आदि देव प्रभु दीन दयाला ॥ जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला ॥ सर्व शास्त्र जिन्ह प्रगट बखा

वा० का०
३३

ना॥ तत्वविचारनिपुन भगवाना॥ तेहि मनु राज कीन्ह बहु काला॥ प्रभु आयस सब विधि प्रतिपाला॥ सो॥ होय न विषय वैराग भवन बसत भा चौथ
पन॥ हृदय बहुत दुख लाग जन्म गयेउ हरिभक्ति विन॥ चौ॥ वरवस राज सुतहि तव दीन्हा॥ नारि समेत गवन वन कीन्हा॥ तीरथ वर तनै मिषार
विष्याता॥ अति पुनीत साधक सिधि दाता॥ वसहि तहां मुनि सिद्ध समाजा॥ जहां हिये हरषि चलेउ मनु राजा॥ पंथ जात सोहत मति धीरा॥ ज्ञान भ
क्ति जनु धरे शरीरा॥ पहुंचे जाय धेनुमती तीरा॥ हरषि नहाने निरमल नीरा॥ आयेउ मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी॥ धर्मधुरंधर नृपरिषि जा
नी॥ जहां तहां तीरथ रहे सुहाये॥ मुनिन सकल सादर करवाये॥ कृशशरीर मुनिपट परिधाना॥ संत समाज नित सुनहि पुराना॥ दो॥
द्वादशाक्षर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग॥ वासुदेव पद पंकरुह दंपति मन अति लाग॥ १५०॥ चौ॥ करहिं अहार साक फल कंदा॥ सुम
िरहि ब्रह्म सच्चिदानंदा॥ पुनि हरिहेत करन तप लागे॥ वारि अहार मूल फल त्यागे॥ उर अभिलाष निरंतर होई॥ देखहिं नयन परम प्र
भु सोई॥ अगुन अनंत अखंड अनादी॥ येहि चितवहि परमारथ बादी॥ नेति नेति येहि वेद निरूपा॥ निजानंद निरुपाधि अनूपा॥ शंभु वि
रंचि विस्नु भगवाना॥ उपजहिं जासु अंस ते नाना॥ ऐसेउ प्रभु सेवक वस अहही॥ भक्तहेत लीलातनु धरहीं॥ यो यह वचन सत्य श्रुति भाषा॥ राम
तौ हमार पूजहि अभिलाषा॥ दो॥ इहि विधि वीते वरष शत सहस्त्र वारि आधार॥ संवत सहस्त्र पुनि रहे समीर आधार॥ १५१॥ चौ०॥ वरष सहस्त्र दश त्या ३३
गेउ सोऊ॥ ठाढे रहे उ एक पद दोऊ॥ विधि हरि हर तप देषि अपारा॥ मुनि समीप आये बहु वारा॥ मागहु वर बहु भांति लुभाये॥ परम धीर नहि चलहिं च

लाये॥ अस्थिमात्र होइ रहे शरीरा॥ तदपि मनाग मनहि कछु पीरा॥ प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी॥ गति अनन्य तापस न्टप रानी॥ मांगु मांगु वर
भई नभ वा॥ परम गंभीर कृपामृत सानी॥ मृतक जिवावनि गिरा सुहाई॥ श्रवण रंध्र होय उर जब आई॥ हृष्ट पुष्ट तन भये सुहाये॥ मानहु
अवहि भवन ते आये॥ दो॥ श्रवण सुधासम वचन सुनि पुलकि प्रफुल्लित गात॥ बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदय समात॥१५२॥ चौ॥ सु
नु सेवक सुरतरु सुरधेनु॥ विधि हरि हर वंदित पद रेनू॥ सेवत सुलभ सकल सुखदायक॥ प्रणतपाल सचराचर नायक॥ जो अनाथहित हम
पर नेहा॥ तौ प्रसन्न होय यह वर देहा॥ यो सरूप वसै शिव मन माही॥ येहि कारन मुनि जतन कराहीं॥ यो भुसंडि मन मानस हंसा॥ सगु
न अगम येहि निगम प्रसंसा॥ देषहिं हम सरूप भरि लोचन॥ कृपा करहु प्रणतारति मोचन॥ दंपति वचन परम प्रिय लागे॥ मृदुल विनी
त प्रेम रस पागे॥ भक्तवत्सल प्रभु कृपानिधाना॥ विश्ववास प्रगटे भगवाना॥ दो॥ नील सरोरुह नीलमणि नील नीरधर स्याम॥ लाजहि त
न सोभा निरषि कोटि कोटि सत काम॥१५३॥ चौ॥ शरद मयंक वदन छवि सींवा॥ चारु कपोल चिवुक दर ग्रीवा॥ अरुन अधर रद सुंदर नासा॥ विधु
कर निकर विनिंदक हासा॥ नव अंवुज अंवुक छवि नीकी॥ चितवनि ललित भावती जी की॥ भृकुटी मनोज चाप छवि हारी॥ तिलक ललाट पटल
दुतिकारी॥ कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा॥ कुटिल केश जनु मधुप समाजा॥ उर श्रीवत्स रुचिर वनमाला॥ पदिक हार भूषण मणि जाला॥ के
हरि कंधर चारु जनेउ॥ वाहु विभूषण सुंदर तेऊ॥ करि कर सरिस सुभग भुजदंडा॥ कटि निषंग कर सर कोदंडा॥ दो॥ तडित विनिंदक पीत पट

वा०का० ३४ उररेषवरतीन ॥ नाभिमनोहरलेतजनुजमुनभवरछविछीन ॥१५४॥ चौ ॥ पदराजीववरनिनहिजाहीं ॥ मुनिमनमधुपवसतजिहमाहीं ॥ वाम
भागसोभतअनुकूला ॥ आदिशक्तिछविनिधिजगमूला ॥ जासुअंसउपजहिगुणखानी ॥ अगनितलछिउमाब्रह्मानी ॥ भ्रकुटिविलासजासु
जगहोइ ॥ रामवामदिसिसीतासोई ॥ छविसमुद्रहरिरूपविलोकी ॥ एकटकरहेनयनपलरोकी ॥ चितवतसादररूपअनूपा ॥ त्रपतेनमानहि
मनुसतरूपा ॥ हरषविवसतनदसाभुलानी ॥ परेदंडइवगहिपदपानी ॥ सिरपरसेउप्रभुनिजकरकंजा ॥ तुरतउठाएउकरुणापुंजा ॥ दो ॥ वोलेउ
कृपानिधानतवअतिप्रसन्नमोहिजानि ॥ मागहुवरजोईभावमनमहादानअनुमान ॥१५५॥ सुनिप्रभुवचनजोरिजुगपानि ॥ धरिधीरज
वोलेउमृदुवानी ॥ नाथदेषिपदकमलतिहारे ॥ अवपुरेसवकामहमारे ॥ एकलालसावडउरमाहीं ॥ सुगमअगमकहिजातसोनाहीं ॥ तुम
हिदेतअतिसुगमगुसाई ॥ अगमलागिहमनिजकृपनाई ॥ यथादरिद्रविवुधतरुपाई ॥ वहुसंपतिमागतसकुचाई ॥ जासुप्रभावजाननहिसोई ॥
तथाहृदयममसंशयहोइ ॥ सोतुमजानहुअंतरजामी ॥ पुरवहुमोरमनोरथस्वामी ॥ सकुचिविहायमांगन्रपमोही ॥ मेरेंनहिअदेयकछुतेही राम ३४
दो ॥ दानशिरोमणिकृपानिधिनाथकहौंसतिभाव ॥ चाहौंतुमहिसमानसुतप्रभुसनकवनदुराव ॥१५६॥ चौ ॥ देखिप्रीतिसुनिवचनअमोले
एवमस्तुकरुनानिधिवोले ॥ आपसरिसखोजोंकहांजाई ॥ न्रपतवतनयहोवमैंआई ॥ सतरूपहिविलोकिकरजोरें ॥ देविमागुवरजोरुचि
तोरें ॥ योवरनाथचतुरन्रपमांगा ॥ सोइकृपालमोहिअतिप्रियलागा ॥ प्रभुपरंतसन्होतिढिठाई ॥ यदपिभक्तिहिततुमहिसुहाई ॥ तुमब्रह्मा

दिजनकजगस्वामी॥बूझसकलउरअंतरजामी॥असससमुझतमनसंशयहोइ॥कहुजोप्रभुप्रमानपुनिसोइ॥येनिजभक्तिनाथतवअह
हीं॥जोसुखपावहिजोगतिलहहीं॥दो॥सोसुखसोगतिसोभक्तिसोईनिजचरननसनेह॥सोइविवेकसोईरहनिप्रभुहमहिकृपाकरिदेह॥१५७॥
चौ॥सुनिमृदुगूढ़रुचिरवररचना॥कृपासिंधुबोलेमृदुबचना॥जोकछुरुचितुह्मरेमनमाहीं॥मैंसोदीन्हसवसंशयनाहीं॥मातुविवेकअलौ
किकतोरैं॥कवहुनमिटहिअनुग्रहमोरैं॥वंदिचरनमनुकहेउवहोरी॥अवरएकविनतीप्रभुमोरी॥सुतविषयकतवपदरतिहोउ॥मोहिवडमू
ढकुहोकिनकोउ॥मनिविनफनिजिमिजलविनमीना॥ममजीवनतिमितुमहिअधीना॥असवरमांगिचरनगहिरहेउ॥एवमस्तुकरुनानिधि
कहेउ॥अवतुममममअनुशासनमानी॥वसहुजायसुरपतिरजधानी॥दो॥तहाकरिभोगविलासतातगयेंकछुकालपुनि॥होइहोअवधिभुवा
लतवमैंहोवतुह्मारसुत॥१५७॥चौ॥इछामयनरवेषसवारे॥होइहौंप्रगटनिकेततुह्मारे॥अंसनसहितदेहधरिताता॥करिहौंचरितभक्तसुखदा
ता॥येसुनिसादरनरवडभागी॥भवतरिहैंममनामदत्यागी॥आदिशक्तिजिहिजगउपजाया॥सोअवतरहिमोरयहमाया॥पुरउवमैंअ
भिलाषतुह्मारा॥सत्यसत्यपनसत्यहमारा॥पुनिपुनिअसकहिकृपानिधाना॥अंतरध्यानभयेभगवाना॥दंपतिउरधरिभक्तकृपाला॥ते
हिआश्रममहिवसेकछुकाला॥समयपायतजितनअनयासा॥जायकीन्हअमरावतिवासा॥दो॥यहइतिहासपुनीतअतिउमहिकहेवृष
केत॥भारद्वाजसुनिअपरमुनिरामजनमकरहेत॥१५८॥चौ॥सुनुमुनिकथापुनीतपुरानी॥जोगिरिजाप्रतिसंभुवखानी॥विश्वविदितएककैक

वा०का० कैकेदेसू॥सत्यकेतुतहवसैनरेसू॥धरमधुरंधरनीतिनिधाना॥तेजप्रतापसीलवलवाना॥तेहिकेभयेजुगलसुतवीरा॥सवगुनधाममहारन(
३५ धीरा॥राजधनीसोजेठसुतआही॥नामप्रतापभानुअसताही॥अपरसुतहिअरिमर्द्दननामा॥भुजवलअतुलअचलसंग्रामा॥भाइहिभाइहिपरम
समीती॥सकलदोषछलवरजितप्रीति॥जेठेसुतहिराजन्रपदीन्हा॥हरिहितआपुगवनवनकीन्हा॥दो॥तवप्रतापरविभएउन्रपफेरिदो
हाइदेस॥प्रजापालअतिवेदविधिकतहुनहीअघलेस॥१५३॥चौ॥न्रपहितकारकसचिवसयाना॥नामधरमरुचिसुक्रसमाना॥सचिवस
यानवंधवलवीरा॥आपुप्रतापपुंजरनधीरा॥सैनसंगचतुरंगअपारा॥अमितसुभटसवसमरजुझारा॥सैनविलोकिराउहरषाना॥अरु
वाजेगहगहेनिसाना॥विजैहेतुकैकटवनाई॥सुदिनसाधिन्रपचलेवजाइ॥तहंतहंपरीअनेकलराई॥जीतिसकलन्रपवरिआइ॥सप्तदीपभु
जवलवसिकीन्हे॥लैलैदंडछाडिन्रपदीन्हे॥सकलअवनिमंडलतेहिकाला॥एकप्रतापभानुमहिपाला॥दो॥स्ववसविश्वकरिवाहुवलनिजपुर
कीन्हप्रवेश॥अर्थधर्मकामादिसुखसेवैसमैनरेस॥१५४॥चौ॥भूपप्रतापभानुवलपाई॥कामधेनुभैभूमिसुहाई॥सवदुखवरजितप्रजासुखारी॥धर्मसी राम
लसुंदरनरनारी॥सचिवधर्मरुचिप्रभुपदप्रीति॥न्रपहितहेतुसिषवनितनीती॥गुरुसुरसंतपितरमहिदेवा॥करैसदान्रपसवकेसेवा॥भूपधर्मयेवेदव ३५
खाने॥सकलकरहिसादरसुखमाने॥दिनप्रतिदेइविविधिविधिदाना॥सुनैशास्त्रवरवेदपुराना॥नानावापीकूपतडागा॥सुमनवाटिकासुंदरवा
गा॥विप्रभवनसुरभवनसुहाये॥सवतीरथनविचित्रवनाए॥दो॥जहंलगिकहेपुरानश्रुतिएकएकसवजाग॥वारसहस्रसहस्रन्रपकिएसहित

अनुराग॥१५६॥चौ॥हृदय न कछु फल अनुसंधाना॥भूप विवेकी परम सुजाना॥करै जो धर्म कर्म मन वानी॥वासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी॥चढि वर वाजि वार ए
क राजा॥मृगया कर सब साजि समाजा॥विंध्याचल गंभीर वन गएउ॥मृग पुनीत वहु मारत भएउ॥फिरत विपिन नृप दीष वराहू॥जनु वन दुरेउ शशिहि ग्रसि राहू॥
वड विधु नहि समात मुष माही॥मनहु क्रोध वस उगलत नाही॥कोल कराल दसन छवि गाई॥तन विसाल पीवर अधिकाई॥घुरघुरात हय आरो पाए॥च
कित विलोकत कान उठाए॥दो॥नील महीधर सिषर सम देषि विसाल वराह॥चपरि चलेउ हय सुटकि नृप हाकि न होइ निवाह॥१५६॥चौ॥आवत देषि अधि
क रव वाजी॥चले वराह मरुत गति भाजी॥तुरित कीन्ह नृप सर संधाना॥महि मिलि गएउ विलोकत वाना॥तकि तकि तीर महीश चलावा॥करि छल सुअर शरी
र वचावा॥प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा॥रिस वस भूप चलेउ संग लागा॥गएउ दूरि वन गहन वराहू॥जह नाहि न गज वाजि निवाहू॥अति अकेल वन विपुल
कलेसू॥तदपि न मृग मग तजे नरेसू॥कोल विलोकि भूप वड धीरा॥भागि पैठ गिरि गुहा गंभीरा॥अगम देषि नृप अति पछिताई॥फिरेउ महावन परेउ भु
लाइ॥दो॥षेद षिन्न छुधित त्रिषित राजा वाजि समेत॥षोजत व्याकुल सरित सर जल विनु भएउ अचेत॥१५७॥चौ॥फिरत विपिन आश्रम देषा॥तहं वस
नृपति कपट मुनि वेषा॥जासु देस नृप लीन्ह छुडाइ॥समर सेन तजि गएउ पराई॥समय प्रतापभानु कर जानी॥आपन अति असमय अनुमानी॥गए
उ न ग्रिह मन वहुत गलानी॥मिला न राजहि अति अभिमानी॥रिसि उर मारि रंक जिमि राजा॥विपिन वसै तापस के साजा॥तासु समीप गवन नृप कीन्हा॥
यह प्रताप रवि तेहि तव चीन्हा॥राउ त्रिषित नहि सो पहिचाना॥देषि सुवेष महामुनि जाना॥उतर तुरंग ते कीन्ह प्रनामा॥परम चतुर न कहे निज नामा॥दो॥

बा०कां० नृपतित्रिषितविलोकितेहिसरवरदीन्हदेषाइ॥ मज्जनपानसमेतहयकीन्हनृपतिहरषाइ॥१५८॥चौ॥गएश्रमसकलसुषिनृपभएऊ॥ निज
३६ आश्रमतापसलैगएऊ॥आसनदीन्हअस्तरविजानी॥पुनितापसबोलेउमृदुबानी॥कोतुम्हकसबनफिरहुअकेले॥सुंदरयुवाजीवपरहेले॥ चक्र
वर्त्तिकेलछनतोरे॥देषतदयालागिअतिमोरे॥ नामप्रतापभानुअवनीसा॥तासुसचिवमैंसुनहुमुनीसा॥फिरतअहेरेंपरेउँभुलाई॥ बडेभाग
देषेउँपदआई॥हमकहँदुर्लभदरसतुम्हारा॥जानतहौंकछुभलहोनिहारा॥कहमुनितातभएउअंधियारा॥जोजनसत्तरिभवनतुम्हारा॥दो॥नि
साघोरगंभीरबनपंथनसुनहुसुजान॥बसहुआजुअसजानितुम्हजाएहुहोतविहान॥तुलसीजसिभवतव्यतातैसीमिलैसहाय॥आपुनआवै
ताहिपँहताहितहाँलैजाय॥१६०॥चौ॥भलेहिनाथआयसुधरिसीसा॥बाँधितुरंगतरुबैठमहीसा॥नृपबहुभाँतिप्रसंसेउताही॥चरनबं
दिनिजभाग्यसराही॥पुनिबोलेमृदुगिरासोहाई॥जानिपिताप्रभुकरौंढिठाई॥मोहिमुनीससुतसेवकजानी॥नाथनामनिजकहहुबषानी॥
तेहिनजाननृपनृपहिसोजाना॥भूपसुहृदसोकपटसयाना॥बैरीपुनिछत्रीपुनिराजा॥छलबलकीन्हचहैनिजकाजा॥समुझिराज राम
सुखदुखितअराती॥अवाअनलइवसुलगैछाती॥सरलवचननृपकेसुनिकाना॥बैरसम्हारिहृदैहरषाना॥दो॥कपटबोरिबानीमृदुलबो ३६
ल्योजुगतिसमेत॥नामहमारभिषारिअबनिरधनरहितनिकेत॥१६१॥चौ॥कहहुनृपजेविज्ञाननिधाना॥तुम्हसारिषेगलितअभिमाना॥स
सदारहहिअपुनपौदुराए॥सबविधिकुसलकुवेषबनाए॥तिहितेकहैंसंतस्रुतिटेरे॥परमअकिंचनप्रियहरिकेरे॥तुम्हसेअधमभिषारिअ

गेहा॥ होत विरंचि शिवहसंदेहा॥ योसि सोसि तव चरन नमामी॥ मो पर कृपा करिय अब स्वामी॥ सहज प्रीति नृपति कै देषी॥ आपु विषै विस्वास
विशेषी॥ सव प्रकार राजहि अपनाई॥ वोल्यो अधिक सनेह जनाई॥ सुनि सतभाय कहौ महिपाला॥ इहां वसत वीते वहु काला॥ दो॥ अव लगि
मोहि मिल्यो कोउ मै न जनायो काहु॥ लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहु॥ सो॥ तुलसी देषि सुवेष भूलहि मूढ न चतुर नर॥ सुंदर के
किहि पेषि वचन सुधा सम असन अहि॥१६२॥ चौ॥ तातै गुप्त रहौ जग माही॥ हरि तजि किमपि प्रयोजन नाही॥ प्रभु जानत सव विनहि जनाये॥ कहो क
वन सिधि लोक रिझाये॥ तुम सुचि सुमति परम प्रिय मोरे॥ प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरे॥ अव जो तात दुरावौ तोही॥ दारुन दोष वढै अति मोही॥ जिम जिम
तापस कहै उदासा॥ तिमि तिमि नृपहि उपजि विस्वासा॥ देषा सुवस करम मन वानी॥ तव वोला तापस वगध्यानी॥ नाम हमार एकतनु भाई॥ सुनि
नृप वोल्यो पुनि सिर नाई॥ कहो नाम कर अरथ वषानी॥ मोहि सेवक अति आपन जानी॥ दो॥ आदि सृष्टि उपजी जवहि तव उतपति भइ मोर॥ ना
म एकतनु है तिहि देह न धरी वहोरि॥१६३॥ चौ॥ जिनि आचर्य करौ मन माही॥ सुत तप ते दुर्लभ कछु नाही॥ तपवल ते जग सृजै विधाता॥ तपवल
विस्नु भए परित्राता॥ तपवल शंभु करहि संहारा॥ तपवल शेष धरै महि भारा॥ भयो नृपति सुनि अति अनुरागा॥ कथा पुरान कहन सो लागा॥ कर्म
धर्म इतिहास अनेका॥ करै निरूपन विरति विवेका॥ उदभव पालन प्रलै कहानी॥ कहसि अमित आचरज वषानी॥ सुनि महीस तापस वस भ
यो॥ आपन नाम कहन तव लयो॥ कह तापस नृप जानौ तोही॥ कीनो कपट लाग भल मोही॥ सो॥ सुनि महीस असि नीति जह तह नाम न कह

बा॰ का॰ ३७ हिन्टप॥मोहितेपरअतिप्रीतिसोईचतुरताविचारितव॥चौ॥नामतुम्हारप्रतापदिनेसा॥सत्यकेततवपितानरेसा॥गुरुप्रतापसवजानिए
राजा॥कहियनआपनजानिअकाजा॥देषिताततवसहजसुधाई॥प्रीतिप्रतीतिनीतिनिपुनाई॥उपजपरीममतामनमोरे॥कहौंकथानिज
पूछेतोरे॥अवप्रसन्नमैसंशयनाही॥मागुजुभूपभावमननाही॥सुनिसुवचनभूपतिहरषाना॥गहिपदविनयकीन्हिविधिनाना॥कृपासिंधु
मुनिदरसनतोरे॥चारपदारथकरतलमोरे॥प्रभुहितथापिप्रसन्नविलोकी॥मागिअगमवरहोउविसोकी॥दो॥जरामरनदुखरहिततनसमर
जितैजिनिकोउ॥एकछत्ररिपुहीनमहिराजकलपशतहोउ॥चौ॥करतापसनृपऐसेइहोऊ॥कारनएककठिनसुनिसोऊ॥कालौतुवपदनाइ
हसीसा॥एकविप्रकुलछाडिमहीशा॥तपवलविप्रसदावरिआरा॥तिनकेकोपनकोउरषवारा॥जोविप्रनवसकरहुनरेसा॥तौतुअवसाविधिविस्नु
महेशा॥चलनविप्रकुलसनवरिआई॥सत्यकहौदोऊभुजाउठाई॥विप्रश्रापविनसुनिमहीपाला॥तोरनासनहिकवनेउकाला॥हरष्योराउ
वचनसुनितासू॥नाथनहोइमोरअवनासू॥तवप्रसादप्रभुकृपानिधाना॥मोकहुसर्वकालकल्याना॥दो॥एवमस्तुकहिकपटमुनिवोला राम ३७
कुटलवहोरि॥मिलवहमारभुलावनिजकहहुतमोहिनषोरि॥६६॥चौ॥तातैमैतोहिवरजौराजा॥कहैकथातवपरमअकाजा॥छठेश्रव
नइपरतकहानी॥नासतुम्हारसत्यममवानी॥इहप्रगटेअथवाद्विजश्रापा॥नासतोरसुनिभानप्रतापा॥आनउपाइनिधनतवनाही॥जोहरि
हरकोपहिमनमाही॥सत्यनाथपदगहिनृपभाषा॥द्विजगुरुकोपकहौकोराषा॥राषैगुरुजोकोपविधाता॥गुरुविरोधनहिउजगत्राता॥जो

नचलवृहमकेहेतुम्हारे॥ होउनासुनहिसोचहमारे॥ एकहिडरडरपतमनमोरा॥ प्रभुमहिदेवस्रापअतिघोरा॥ दो॥ होहिविप्रवसकवनविधिकहोक्र
पाकरिसोइ॥ तुमतजिदीनदयालनिजहित्तनदेषैकोइ॥१६७॥ चौ॥ सुनिन्नृपविविविधिजतनजगमाही॥ कष्टसाध्यपुनहोहिकिनाही॥ कहोएकअति
सुगमउपाई॥ तहांपरंतुएककठिनाई॥ ममआधीनजुगतिन्नृपसोई॥ मोरजावतवनगरनहोई॥ आजलगैअरुजवतेभयेउ॥ कहूकेग्रहग्रामन
गएउ॥ जोनजाउतवहोइअकाजू॥ वनाआयअसमंजसआजू॥ सुनिमहीसवोलेम्रदुवानी॥ नाथनिगमअसनीतिवषानी॥ वडेसनेहलघु
नपरकरही॥ गिरिनिजसिरनिसदात्रनधरही॥ जलअगाधमौलिकवहैफेनू॥ संततधरनिधरतसिररेनू॥ दो॥ असकहिगहेनरेसपदस्वामीहो
कृपाल॥ मोहिलागिदुखसहियप्रभुसज्जनदीनदयाल॥१६८॥ चौ॥ जानिन्नृपहिआपनआधीना॥ वोलातापसकपटप्रवीना॥ सत्यकहोभू
पतिसुनितोही॥ जगनाहिनदुर्लभकछुमोही॥ अवसिकाजमैकरिहोतारा॥ मनक्रमवचनभगततेमोरा॥ जोगजुगतितपमंत्रप्रभाउ॥ फलैतवहि
जवकरिअदुराऊ॥ जोनरेसमैकरौरसोई॥ तुमपरुसोमोहिजाननकोई॥ अन्नसोईजोभोजनकरइ॥ सोयसोयतवआयसअनुसरई॥ पुर
नितिनकेकरजैवेजोऊ॥ तववसहोयभूपसुनिसोऊ॥ जायउपाइरचोन्नृपएहू॥ संवतभरिसकल्पकरेहू॥ दो॥ नितनूतनद्विजसहसशतव
रेहुसहितपरिवार॥ मैतुम्हरेसंकल्पलगिदीनहिकरौजिवनार॥१६९॥ चौ॥ इहिविधिभूपकष्टअतिथोरे॥ होइहिसकलविप्रवसतोरे॥ करि
हैविप्रहोममखसेवा॥ तिहप्रसंगसहजेसवदेवा॥ औरएकतोहिकहौलषाऊ॥ मैइहिवेषनऐहौकाऊ॥ तुम्हरेउपरोहितकहुराया॥ हरि

वा॰कां॰ हरि आनउँ मै करि निज माया॥ तप वल ते करि आप समाना॥ रषिहो इहां वरष परवाना॥ मै धरि तासु वेष सुनि राजा॥ सव विधि तोर सवारौं काजा
३८ गई निसि वहुत सैन अव कीजै॥ मोहि तोहि न्रप भेट दिन तीजै॥ मै तप वल तोहि तुरवा समेता॥ पहुंचैहौं सोवतहि निकेता॥ दो॥ मै आइव सो वेष धरि
पहिचानहु तव मोहि॥ जव एकांत वुलाइ सव कथा सुनावौं तोहि॥ चौ॥ सयन कीन्ह न्रप आयसु मानी॥ आसन जाय वैठ छल ग्यानी॥ अमित
न्रप निद्रा अति आइ॥ सो किमि सोव सोच अधिकाई॥ कालकेतु निसिचर तह आवा॥ जिहि सूकर होइ न्रपहि भुलावा॥ परम मित्र तापस न्रप
केरा॥ जानै सो अति कपट घनेरा॥ तिहि के सत सुत अरु दश भाई॥ खल अति अजय देव दुखदाइ॥ प्रथमहि भूप समर सव मारे॥ विप्र संत सुर देषि
दुषारे॥ तिहि खल पाछिल वैर संभारा॥ तपस न्रप मिलि मंत्र विचारा॥ जिहि रिपु छय सो रचिहि उपाऊ॥ भावी वस न जान कछु राउ॥ दो॥ रिपु ते
जसी अकेल अपि लघु करि गनि अनताऊ॥ अजहुं देत दुख रवि शशिहि सिर अवशेषत राऊ॥१७१॥ चौ॥ तापसरिषि तव सषाहि निहारी॥ हरषि
मिल्यो उठि भयो सुखारी॥ मित्रहि कहि सव कथा सुनाई॥ जातधान वोला सुष पाइ॥ अव साधेरिपु सुनहु नरेसा॥ जो तुम कीन्ह मोर उपदेसा॥ पर राम
हरि सोच रहौ तुम सोइ॥ विन औषध व्याधि विधि षोइ॥ कुल समेत रिपु मूल वहाई॥ चौथे दिवस मिल्यो मै आइ॥ तापस न्रपहि वहोत परतोषी॥ चला ३८
महा कपटी अति रोषी॥ भानप्रताप हि वाजि समेता॥ पहुंचाइसि छिन माझ निकेता॥ न्रपहि नारि पै सयन कराई॥ हयगह वाधिसि वाजि वनाइ॥
दो॥ राजा के प्रुपरोहि तहि हरि लेगयो वहोरि॥ ले राषिसि गिरि षोह मझु माया करि मति भोरि॥१७२॥ चौ॥ आप विरचि उपरोहित रूपा॥ परेउ

जाइतिहिसेजनृपा॥ जागेपोनृपअनभएविहाना॥ देषिभवनअतिअचरजमाना॥ मुनिमहिमामनमहुअनुमानी॥ उठ्योगवहिजिहिजान
तरानी॥ काननगयोवाजिचढितेही॥ पुरनरनारिनजान्योकेही॥ गएजामजुगभूपतिआवा॥ घरघरउत्सववाजिवधावा॥ उपरोहितहिदेषजवरा
जा॥ चकितविलोकिसुमरसोइकाजा॥ जुगसमनृपहिगएदिनतीना॥ कपटीमुनिपदमतिरहलीना॥ समयजानिउपरोहितआवा॥ नृपहिमतेस
वकहिसमुझावा॥ दो॥ नृपहरष्योपहिचानगुरुभ्रमवसरहानचेत॥ वरेतुरतशतसहसवराविप्रकुटंवसमेत॥ चौ॥ उपरोहितजिवनारवना
ई॥ छरसचारिविधिजसश्रुतिगाई॥ मायामयतिनकीन्हरसोई॥ विंजनवहुगनिसकैनकोई॥ विविधिमृगनकरआमिषरांधा॥ तिहमहविप्रमां
सषलसांधा॥ भोजनकोसवविप्रवुलाए॥ पदपषारसादरवैठाए॥ परुसनजवहिलागिमहिपाला॥ भईअकासवानीतिहिकाला॥ नृपहिश्रापप
ढिवावनहेतू॥ छलकरिनभवोल्योवयकेतू॥ विप्रवृंदउठिउठिग्रहजाहू॥ हैवडिहानिअन्नजिनषाहू॥ भईरसोईभूसुरमासू॥ सवदिउठेमानिवि
स्वासू॥ भूपविकलमतिमोहभुलानी॥ भावीवसनआवमुखवानी॥ दो॥ वोलेविप्रसकोपतवनहिकछुकीन्हविचार॥ जाइनिसाचरहोहुनृप
मूढसहितपरिवार॥ चौ॥ छत्रवंधतेविप्रवुलाई॥ घालैलिएमहितसमुदाई॥ ईश्वरराषाधरमहमारा॥ जैहसितैसमेतपरिवारा॥ संवतमध्यना
सतवहोऊ॥ जलदातानरहैकुलकोऊ॥ नृपसुनिश्रापविकलअतित्रासा॥ भईवहोरवरगिराअकासा॥ विप्रहुश्रापविचारिनदीना॥ नहिअप
राधभूपकछुकीन्हा॥ चकितविप्रसवसुनिनभवानी॥ भूपगयोजहभोजनषानी॥ तहाअसननहिविप्रसुआरा॥ फिर्योराउमनसोचअपारा॥

बा॰का॰ ३९ सबप्रसंगमहिसुरन्हसुनाई॥त्रसितपरेउअवनीअकुलाइ॥दो॥भूपतिभावीमिटैनहिजदपिनदूषनतोर॥किएअन्यथाहोयनहिविप्रश्रा
पअतिघोर॥१७४॥चौ॥जोकरकपटछलैजगकहूं॥देहैईसअधमगतिकाहू॥विप्रवचनसुनिन्रपअकुलाना॥उठिपुनिविनयकीन्हिविधिनाना
पुनिपुनिपदयहककहैभुआला॥आपअनुग्रहकरौक्रपाला॥विप्रकहैसुनिभानप्रतापा॥परमअसाधिभूमिसुरश्रापा॥जबतुमहोहुनिशाचर
जाई॥व्रह्मवंससनामसतनपाइ॥अजरअमरअतुलितप्रभुताई॥जगविष्यातवीरदोउभाई॥होइहैजवहिपराभवचारी॥तवतुमसेवहुदेवपु
रारी॥शिवप्रसादवरपाइवहोरी॥होइहेजवजगप्रभुतातोरी॥मिलिहितुम्हैंजवसनतकुमारा॥तवतुमसमफुवश्रापहमारा॥दो॥जवप्रभुले
अवतारमहिसादरसुनहुनरेस॥सवपरिवारउधारतवहोइहैमुनिउपदेस॥चौ॥असकहिसवमहिदेवसिधाए॥समाचारपुरलोगन्हपाए
सोचहिदूषनदैवहिदेही॥विरचतहंसकागकिएतेही॥उपरोहिततहिभवनपठुचाई॥असुरतापसहिषवरिकरवाई॥तिहिषलजहंतहपत्रपठाए
सजिसजिसेनभूपसवआए॥घेरननगरनिसानवजाई॥विविधभांतिनितिहोयलराई॥जूझेसकलसुभटकरिकरनी॥वंधसमेतपरयोन्रपध
रनी॥सत्यकेतकुलकोउनवाचा॥विप्रश्रापकिमहोइअसाचा॥रिपुजितसवन्रपनगरवसाई॥निजपुरगवनैजयजसपाई॥दो॥भारद्वाज राम ३९
सुनजाहिजवहोइविधातावाम॥धूरिमेरुसमजनकजमजाहिव्यालसमदाम॥चौ॥कालपाइमुनिसुनिसोइराजा॥भयोनिशाचरसहितसमा
जा॥दशसिरजाहिवीसभुजदंडा॥रावननामवीरवरचंडा॥भूपअनुजअरिमर्दननामा॥भयोसोकुंभकरनवलधामा॥सचिवजोरहाधर्मरुचिजा

स्तू॥ भयोविमात्रवंधुलघुतासू॥ नामविभीषनसवजगजाना॥ विस्नुभगतविज्ञाननिधाना॥ रहेजुसुतसेवकनृपकेरे॥ भएनिशाचरघोरघने
रे॥ कामरूपषलजिनसिअनेका॥ कुटिलभयंकरविगतविवेका॥ कृपारहितहिंसकसवपापी॥ वरनिजाइविस्वपरितापी॥ दो॥ उपजेजदपिपुलस्त्यकु
लपावनअमलअनूप॥ तदपिमहीसुरश्रापवसभयेसकलअघरूप॥ चौ॥ कीन्हविविधितपतीनौभाई॥ परमउग्रनहिंवरनिसोजाई॥ गयेनिकट
तपदेषिविधाता॥ मागहुवरप्रसन्नमैताता॥ करिविनतीपदगहिदससीसा॥ वोल्योवचनसुनौजगदीसा॥ हमकाहूकेमरहिनमारे॥ वानरमनु
जजातिदोइदारे॥ एवमस्तुतुमवडतपकीन्हा॥ मैब्रह्मामिलितिहिवरदीन्हा॥ पुनिप्रभुकुंभकरनपहिगयो॥ तिहिविलोकिमनविस्मयभयो॥ जोइ
हिषलनितकरवअहारू॥ होइहिसवउजारिसंसारू॥ सारदप्रेरितासमतिफेरी॥ मागिसिनीदमासषटकेरी॥ दो॥ गयेविभीषनपासपुनिकह्योपुत्रव
रमागु॥ तिहिमागेयोभगवंतपदकमलअमलअनुराग॥ चौ॥ तिन्हैदेइवरब्रह्मसिधाए॥ हरषततेअपनेग्रहआए॥ मयतनुजामंदोदरीनामा॥ परम
सुंदरिनारिललामा॥ सोमयदीन्हरावनहिआनी॥ होइहैजातुधानपतिजानी॥ हरषतभयोनारिभलपाई॥ पुनिदोउवंधुविवाहिसिजाइ॥ गिरित्रि
कूटएकसिंधुमझारी॥ विधिनिर्मितदुर्गमअतिभारी॥ सोमयदानवबहुरिसवारा॥ कनकभवनमनिरचितअपारा॥ भोगावतिजस अहिकु
लवासा॥ अमरावतिजसिशक्रनिवासा॥ तिनतेअधिकरम्यअतिवंका॥ जगविष्यातनामतिहिलंका॥ दो॥ षाईसिंधुगंभीरअतिचारहुदिसि
फिरिआव॥ कनककोटमनिषचितदृढवरनिनजाइवनाव॥ हरिप्रेरितजिहिकलपजोयजातुधानपतिहोय॥ सूरप्रतापीअतुलवलदलसमेतव

सहाय ॥ चौ० ॥ रहे तहां निसिचर भट भारे ॥ ते सब सुरन्ह समर संहारे ॥ अव तहं रहै शक्र के प्रेरे ॥ रक्षक कोटि यक्षपति केरे ॥ दशमुख कतहु षवर अस पाई
सेन साजि गढ घेरसि जाई ॥ देषि विकट भट वडि कटकाइ ॥ यक्ष जीव लै गये पराई ॥ फिरि सव नगर दसानन देषा ॥ गयौ सोच सुख भयो विशेषा ॥ सुंदर सह
ज अगम अनुमानी ॥ कीन्ह जहां रावन रजधानी ॥ जिहि जस जोगि वांटि ग्रह दीनै ॥ सुखी सकल रजनीचर कीन्है ॥ एक वार कुवेर पर धावा ॥ पुष्पक जा
न जीति लै आवा ॥ दो० ॥ देव यक्ष गंधर्व नर किन्नर नाग कुमारि ॥ जीत वरी निज वाहु वल वहु सुंदर वर नारि ॥ कौतक ही कैलाश पुनि लीनसि जाय उ
ठाय ॥ मनहु तोलि निज वाहु वल चला वहुत हरषाय ॥ चौ० ॥ सुख संपति सुत सेन सहाइ ॥ जय प्रताप वल वुद्धि वडाई ॥ नित नूतन सव वाढत जाई ॥ जिमि
प्रति लाभ लोभ अधिकाई ॥ अति वल कुंभकरन अस भ्राता ॥ जिहि कहु नाहि प्रतिभट जग जाता ॥ करै पान सोवै षट मासा ॥ जागत होइ तीनै पुर त्रासा
जो प्रतिदिन अहार करि सोई ॥ विश्व वेगि सव चौपट होई ॥ समरधीर नहि जाय वषाना ॥ तिहि सम अमित वीर वलवाना ॥ वारिदनाद जेठ सुत ता सु
भट महि प्रथम लीक जग जासु ॥ जिहि न होय रन सनमुख कोइ ॥ सुरपुर नितहि परावन होइ ॥ दो० ॥ कुमुख अकंपन कुलिशरद धूमकेतु अतिका
इ ॥ एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाइ ॥ चौ० ॥ कामरूप जानहि सव माया ॥ सपनेहु जिनके धर्म न दाया ॥ दशमुख वैठ सभा इक वारा ॥ देषि
अमित आपन परिवारा ॥ सुत समूह जन परिजन नाती ॥ गनै को पार निशाचर जाती ॥ सेन विलोकि सहज अभिमानी ॥ वोला वचन क्रोध मद सानी
सुनहु सकल रजनीचर जूथा ॥ हमरे वैरी विवुध वरूथा ॥ ते सनमुख नहि करहि लराई ॥ देषि सवल रिपु जाहि पराई ॥ तिन कर मरन एक विधि होई ॥ क

धी

हौतुमायसुनहुसबकोइ॥ द्विजभोजनमखहोमसराधा॥ सकैजाइकरहुतुमबाधा॥दो॥ छुधाछीनबलहीनसुरसैंजहिमिलिहैआइ॥ तबमारिहौकिछाडि हे
हौभलीभांतिअपनाइ॥चौ॥ मेघनादकहुंतबहकरावा॥ दीनसीषबलबैरबढावा॥ येसुरसमरधीरबलवाना॥ जिनकैलरिबेकरअभिमाना॥ तिन्हैजीतिर
नआनिसुबांधी॥ उठिसुतपितुअनुसासनकाधी॥ इहिबिधिसबहीअज्ञादीनी॥ आपनचल्यौगदाकरलीनी॥ चलतदशाननडोलतअवनी॥ गरजतगरभश्र
वहिसुररवनी॥ रावनआवतसुन्योसकोहा॥ देवनितकीमेरगिरिषोहा॥ दिगपालनकेलोकसुहाए॥ सुनैसकलदशाननपाए॥ पुनिपुनिसिंहनादकरिभा
री॥ देहदेवतनिगारिपचारी॥ नारदमिलेकहसिमुसकाई॥ देवकहांमुनिदेहिदिषाइ॥ सुनतअनषनारदहिनभावा॥ सेतदीपतेतुरतपठावा॥ सागरउत
रिपारसोगयो॥ नारिहंदतहदेषतभयो॥ तिनसनकहिसपतिन्हपहजाहू॥ कहिउकिआयोनिसिचरनाहू॥ तबमैतिन्हैजीतिसंग्रामा॥ लैजैहौतुमकौ(
निजधामा॥ सुनतबचनएकजरठरिसानी॥ धाइचरनगहिगगनउडानी॥ गईदूरिधरिधरिजकझोरा॥ डारसिसिंधुमध्यअतिजोरा॥दो॥ गयोपतालअ
चेतहोइमरैनविप्रप्रसाद॥ सावधानउठिगरजपुनिहूंदेनहरषविषाद॥चौ॥ जीतसिनागनगरसबझारी॥ गयोबहुरिबलिलोकसुरारी॥ बामनरावन
आवतजाना॥ किएदेवऋषिसनअभिमाना॥ षेलतरहेनगरशिशुनाना॥ निजबलतिन्हैदीनभगवाना॥ धाइधरातिनपुरलैआए॥ नगरनारिनरदेष
नधाए॥ बीसबाहुदशकंधरताही॥ बिधिइहगठनिकहाकीआही॥ राषन्हिबाधिधिजाबहिभारी॥ नामकुहैसुहैबसमारी॥ बामनदीषबहुतसकुचाना
तबछुडायदियकृपानिधाना॥ चालातुरतनिशाचरनाहा॥ लाजसंककछुनहिमनमाहा॥ तबहितुरतपंपापुरआवा॥ बालिनामकपिपतितिहिठा

— कसकिंधा

बा० का ४१ वा॥ दीषजाइ कससरवरसोभा॥ जिहिमनमहामुनि न्हकरछोभा॥ तहां कपीसकरै निजध्याना॥ आदरसो संध्यासनमाना॥ जाइ ठढत हभयोरजनीसा
ठोक्योवाङ्कु गरजभुजवीसा॥ तवकपीसचितवामुसकाई॥ ध्यानके अवसररिसविसराइ॥ तवरावन वोला करिक्रोधा॥ वकध्यानीकपिसठमुनिवोधा
दो॥ मोहि जीतेविन समर सुनि नहिकरिध्यानकपीस॥ अंजलिदेइन पावङ्कसपथकरौं अजईस॥ चौ॥ तववालीवोविहसरि साई॥ वलतुम्हार ऐसे
इहै भाई॥ रवि अंजुलिमैदेउसप्रीती॥ ठाढे रहौ जाङ्कुमोहिजीती॥ तवनिशिचरयतिउन्यौरिसाई॥ देकापि युद्धछाडिकदराई॥ तवकपीसनिजमन
निहिविचारा॥ शिववरदीनमरैनहिमारा॥ दशकंधरघरजाङ्कुविचारी॥ अजयतुम्हारिछिनभुजभारी॥ वङ्कुत भांतिवालीसमुझावा॥ कोनङ्कु
भाति वोधनहि आवा॥ तवसकोपहोइउठ्योकपीशा॥ धरतकाषचांप्यो दशसीसा॥ अंजलिदीनरविहिमनजानी॥ अचयोसातउदधिकरपानी॥
जप्यो आदिशेकरमनजानी॥ तिहिषिनसंध्यावंदिसिरानी॥ दो॥ आवाघरहि कपीसतवकाषरहै लंकेश॥ इहिविधिवीतेमासषट पावैवङ्कुतकलेस
चौ॥ वङ्कुप्रसेदकषरीमैजामा॥ अतिकुवासताकोभईधामा॥ कलमलाइरिसदसननिकाटा॥ कचकरजीवमनङ्कुचमछाडा॥ एकदिवसरविअं
जलिसाजा॥ काषतेनिकसिमहाधनगाजा॥ अतिहिनिलजआवैनहिलाजा॥ सोपुनिधरिकपीसतववाधा॥ लैआयोअनंदकेराधा॥ वीसभु राम ४१ से लेना
जादससीसमुधारा॥ चरनदोउ पुनिधरिउरमारा॥ धरिसमेटिहमरिसमकीना॥ वांधिसेजपरिसोभादीना॥ अंगदषेलखतितिहमारा॥ किलकिला
यकिलकैकिलधारा॥ दो॥ ताराचीन्हौरावनहिंतिहिषिनदीनछुडाय॥ जाङ्कुतुरतलंकेशग्रहवङ्कुरिधरहिकपिराय॥ चौ॥ मुनिरावनआयोतिहिठाइ

सहसवाहुतहॅरासवनाई॥ जलक्रीडाकरसंगसवनारी॥ विविधिभांतिसोभाअतिभारी॥ आयरचामंडलजलरेवा॥ सुरनरनागकरहिसवसेवा
आईदीषरावनसुखनाना॥ हरषसमेतहदेसवमाना॥ तहलंकेशजाइशिवदेषा॥ मनहुविरंचिरच्योवहुवेषा॥ तुलसीकमलपत्रसवआना॥
विल्वपत्रअरुपुष्पप्रमाना॥ जाइतवेजलछोदशसीसा॥ ध्यान्योमंत्रसुमरगौरीशा॥ दो०॥ जवप्रचंडजलछोभेउवूड्योसवेसमाज॥ सहसवाहुअ
तिसंकमनसकलत्रियनउरलाज॥ चौ॥ तवराजासुनवोलहिनारी॥ अतिसुंदरसवराजकुमारी॥ सुनहुनृपतिआयोकोउगादा॥ आकसमा
तमहानदवादा॥ सुनिराजहिभएक्रोधअपारा॥ जसत्रिनेत्रत्रिपुरिअरिमारा॥ जाइदीषरावनतहवाढा॥ जासमंत्रजलनिधिजिमिवाढा॥ माया
प्रवलमहावलभारी॥ लंकेश्वरकहुधरसिपचारी॥ लैपुनिवांधिगयोत्रियपासा॥ गढदेषिसवपरमहुलासा॥ करिस्नानसजागौरीशा॥ ह
यसालावांधेदशसीसा॥ दो॥ कहिशंकरगिरिजासुनहुअवयहकथारसाल॥ लेहयसालावांधियोवीसभुजादशभाल॥ चौ॥ सकलआईदेषहिन
रनारी॥ मारहिलातहसहिदेतारी॥ नामनकहेरहेसकुचाना॥ वहुविधिपूछैनृपतिसुजाना॥ नृत्यकरैंहिरंभादिकनारी॥ दशहुमाथदशदीप(
कवारी॥ कछुकदिवसइहिभांतिगवावा॥ सोपुलस्तिमुनिजाइछुडावा॥ चलानुरतमहाअभिमानी॥ सकलकिआपआइनियरानी॥ मारग
जातदीषविवुधारी॥ अतिअनूपसुंदरवरनारी॥ चंदनपुष्पपत्रकरधारी॥ सजनिचलीजाइत्रिपुरारी॥ देषिउरवसीमनसकुचानी॥ तवरा
वनवोल्योमृदुवानी॥ दो॥ निकटजाइदसकंधरहिगहसिअंकभरिलीन॥ पुत्रवधसकुवेरकीनहिविचारकछुकीन॥ चौ॥ चिन्हत्रियहिमनवि(

वा॰का॰ स्मयभयो॥ लंकापतिलंकाकहुगयो॥ चलीउरवसीआइतहां॥ अलकापुरीनलकूवरजहां॥ समाचारसवपतिहिसुनावा॥ सुनतकथामन
४२ मंहुदुरवपावा॥ दीन्हश्रापकरिक्रोधअपारा॥ रावनवंशहोइषैकारा॥ चलीआपलंकामहिआई॥ दशकंधरवैव्योजिहगाई॥ आगेआइ[illegible]
इश्रापा॥ तवलंकेश्वरअतिभयकापा॥ सउरसकोपचिनवतिहिओरा॥ नलकूवरकीश्रापअतिघोरा॥ दो॥ आपहिअंगीकारिकरमनमहिकीन्हवि
चार॥ ऋषिनदंडनहिदीन्हउरोषेउलंकभुवार॥ चौ॥ दूतचारतिहिपठवभवानी॥ जागवलकमुनिकथावषानी॥ आएदूतऋषिनकेगेहा॥ दे
षतसवहिभयोसंदेहा॥ पूछहिऋषयकहांपगुधारा॥ कहहुकुशललंकेशभुवारा॥ तातकुशलअवभईविपरीता॥ तुमसनमांगेउदंडअभीता
देहदंडअसकहेउरिसाइ॥ कैगिरिकंदरजाहुपराई॥ सुनिअसवचनसवहिदुरवपावा॥ तुरतवेगिइकपत्रमगावा॥ सवमिलकरविचारइक
ठाए॥ भरिघटरुधिररिषयलैआए॥ इतनाकहिसोपात्रनजानी॥ होयसकोपवोलेमृदुवानी॥ दो॥ घटउघरनतक्षयहोतहैसकलसहितपरिवार॥ लि
एदूतआएतहांजहरहलंकभुआर॥ चौ॥ आगेआनिधराघटचारी॥ देषिसंकलंकापतिभारी॥ वोलेवचनकहाइहभाई॥ सकलकथातिनन्हपहिसु
नाई॥ इहिघटतेलंकापतिनासा॥ सवदूतनअसवचनप्रकासा॥ इहघटलेउत्तरदिसिजाहू॥ जतनसमेतदेहलेकाहू॥ सुनिनृपवचनचले
सतैसै॥ जनकराजकेदेसहिपैसे॥ त्हेउमागधरिचलेविचारी॥ तहाप्रगटभईदेवकुमारी॥ जगजननहिकोवरनैपारा॥ राजाजनकतहांपगु
धारा॥ कन्यादेषिअनूपभवानी॥ सुताभातिराजाग्रहआनी॥ नामजानकीपरमपुनीता॥ नारदआयकह्योपुनिसीता॥ दो॥ सकलक राम ४२

यान्रपजनकसोनारदकहीबषानि॥ सकलसुलछिनलछिगुनजगदंबाजियजानि॥ चौ॥ कहतकथारिषिराजसिधाए॥ बहुरिदूतलंकापुर
आए॥ कहहुजाइआएहमराषी॥ सोसंकरगिरिजासनभाषी॥ भरद्वाजसुनिकथारसाला॥ साधसाधमुनिपरमकृपाला॥ पुनिमुनिकहीकथाउपदेसा
जगजीत्योजिहिविधिलंकेसा॥ चारिठाउहारसिभयत्रासा॥ सकलदेवकीन्हेनिजदासा॥ रनमदमत्तफिरतजगधावा॥ प्रतिभटषोजतकतहुंनपावा
रविशशिपवनवरुनधनधारी॥ अग्निकालयमसबअधिकारी॥ किंनरसिद्धमनुजसुरनागा॥ हठिसबहीकेपंथहिलागा॥ ब्रह्मसृष्टिजहंलगितनु
धारी॥ दशमुखबसवर्तीनरनारी॥ आयसकरहिसकलभयभीता॥ नवहिआइनितचरनविनीता॥ दो॥ भुजबलविस्ववस्यकरिराषिसिकोउनसुतं
त्र॥ मंडलीकमनिरावनराजकरैनिजमंत्र॥ देवयक्षगंधर्वनरकिंनरनागकुमारि॥ जीतिवरीनिजबाहुबलबहुसुंदरवरनारि॥ चौ॥ इंद्रजीतसन
जोकछुकहेऊ॥ सोसबजनुपहलेहिकररहेऊ॥ प्रथमहिजिनकौआयसदीन्हा॥ तिनकरचरितसुनहुजोकीन्हा॥ देषतभीमरूपसबपापी॥ निसिचर
निकरदेवपरितापी॥ करहिउपद्रवअसुरनिकाया॥ नानारूपधरहिकरिमाया॥ जिहिविधिहोइधरमनिर्मूला॥ सोसबकरहिवेदप्रतिकूला॥
जिहिजिहिदेसधेनुद्विजपावहि॥ नगरगावपुरआगिलगावहि॥ सुभआचरनकतहुंनहिहोइ॥ देवविप्रगुरुमाननकोइ॥ नहि हरिभक्तियज्ञ
तपज्ञाना॥ सपनेहुसुनियनवेदपुराना॥ छं॥ जपयोगविरागातपमषभागाश्रवनसुनैदससीसा॥ आपुनउठिधावैरहिननपावैघरसबघालै
षीसा॥ असभ्रष्टअचाराभासंसाराधरमसुनियनहिकाना॥ तिहिबहुविधित्रासैदेसनिकासैजोकहिवेदपुराना॥ सो॥ बरनिनजाइअनीतिघोर

वा॰का॰ निशाचरजोकरहि॥ हिंसापरअतिप्रीतितिनकेपापहिकोनमिति॥ चौ॰॥ बाढेखलबहुचोरजुवारा॥ येलंपटपरधनपरदारा॥ मानहिमातपितानहिदेवा
४३ साधनसनकरवावहिसेवा॥ जिनकेयहआचरनभवानी॥ तेजानहुनिसिचरसमशानी॥ अतिसैदेषिधरमकेग्लानी॥ परमसभीतधराअकुलानी
गिरिसिरसिंधभारनहिमोही॥ जसमोहिगरुअएकपरद्रोही॥ सकलधरमदेषेविपरीता॥ कहिनसकेरावनभयभीता॥ धेनरूपधरिहृदयविचारी॥ ग
ईतहांजहसुरमुनिझारी॥ निजसंतापसुनाइसिरोइ॥ काहूतेकछुकाजनहोइ॥ छं॰॥ सुरमुनिगंधर्बमिलिकरिसर्वागयेविरंचिकेलोक॥ संगगोतनु
धारीभूमिविचारीपरमविकलभयसोक॥ ब्रह्मासबजानामनअनुमानामोरकछुनबसाइ॥ जाकरतेदासीसोअविनासीहमरेतोरसहाई॥ सो॰॥ धर
निधरहिमनधीरकहिविरंचिहरिपदसुमिरि॥ जानतजनकीपीरप्रभुभंजहिदारुनविपति॥ चौ॰॥ वैठेसुरसबकरहिविचारा॥ कहिपैयेप्रभुकरिअपु
कारा॥ पुरवैकुंठजानकहकोइ॥ कोउकहपयनिधिहेहरिसोइ॥ जाकेहृदैभक्तिजसिप्रीति॥ प्रभुतहप्रगटसदातिहिरीती॥ तिहिसमाजगिरिजामेरह्यो
अवसरपाइवचनयककह्यो॥ हरिव्यापकसरवत्रसमाना॥ प्रेमतेप्रगटहोयमेजाना॥ देसकालदिसिविदिसहुमाही॥ कहोसोकहाजहाप्रभुना
ही॥ अगजगमेयसवरहितविरागी॥ प्रेमतेप्रगटहोहिजिमआगी॥ मोरवचनसबकेमनमाना॥ साधसाधकरिब्रह्मवषाना॥ दो॰॥ सुनिविरं राम
चिमनहरषतनपुलकिनयनवहनीर॥ स्तुतिकरतजुगजोरिकरसावधानमतिधीर॥ छं॰॥ जयजयसुरनायकजनसुखदाइकप्रनतपालभगवंत॥ गोद्वि ४३
जहितकारीजयअसुरारीसिंधसुताप्रयकंत॥ पालनसुरधरनीअद्भुतकरनीमरमनजानैकोइ॥ जोसहजकृपालादीनदयालाकरैअनुग्रहसोइ॥ जयजय

यअविनासीसवघटवासीव्यापकपरमानंद॥ अविगतगोतीतंचरितपुनीतंमायारहितमुकुंद॥ जिहिलागिविरागीअतिअनुरागीविगदमोहमुनिवृंद॥ नि
शिवासरध्यावहिगुनगनगावहिजयतिसच्चिदानंद॥ जिहिसृष्टिउपाईत्रिविधवनाईसंगसहाइनकोदूजा॥ सोकरउअघारीचिंतहमारीजानीभगतिन
कपूजा॥ जोभवभयभंजनमुनिमनरंजनगंजनविपतिवरूथा॥ मनवचक्रमजानीछाडिसयानीसरनसकलसुरजूथा॥ सारदश्रुतिशेषाऋषय
यअशेषाजाकैकोउनजान॥ जिहिदीनपियारेवेदपुकारेइवोसोश्रीभगवान॥ भववारिधिमंदरसवविधिसुंदरगुनमंदिरसुखपुंज॥ मुनिसिद्धसक
लसुरपरमभयातुरनमतनाथपदकंज॥ दो॥ जानिसभयसुरभूमिसुनिवचनसमेतसनेहु॥ गगनगिरागंभीरभइहरनिसोकसंदेहु॥ चौ॥ जि
निडरपहुमुनिसिद्धसुरेसा॥ तुमहिलागिधरिहौनरवेसा॥ अंसनसहितमनुजअवतारा॥ लैहोदिनकरवंसउदारा॥ कश्यपअदितिमहातपकी
ना॥ तिनकौमैपूरववरदीना॥ तेदशरथकौशल्यारूपा॥ कौशलपुरीप्रगटनरभूपा॥ परमशक्तिसमेतअवतरिहौ॥ नारदवचनसत्यसवकरि
हौ॥ हरिहौसकलभूमिगरुआई॥ निरभयहोहुदेवसमुदाई॥ गगनब्रह्मवानीसुनिकाना॥ तुरतफिरेसुरहृदैजुडाना॥ तवब्रह्माधरनिहिसमुझावा
अभयभईभरोसजियआवा॥ दो॥ जिनलोकहीविरंचिगेदेवनइहैसिषाय॥ वरनरतनधरिधरिमहीहरिपदसेवहुजाय॥ चौ॥ गएदेवसवनिज
निजधामा॥ भूमिसहितमनकहुविश्रामा॥ जोकछुआयसब्रह्मादीना॥ हरषेदेवविलंवनकीना॥ वनचरदेहधरीछितिमाही॥ अतुलितवलप्रता
पतिनमाही॥ गिरितरुनषआयुधसववीरा॥ हरिमारगचितवहिमतिधीरा॥ गिरिकाननजहतहभरिभूरी॥ रहेनिजनिजअनीकरचिरूरी॥ इहि

बा॰ का सबकृचिरचरितमैंभाषा॥ अवसोसुनहुजोबीचहिराषा॥ अवधिपुरीरघुकुलमनिराऊ॥ वेदविदिततिहिदशरथनांऊ॥ धरमधुरंधरगुननिधि
४४ ग्यानी॥ हृदैंभगतिरतिसारंगपानी॥ दो॥ कौशल्यादिकनारिप्रियसबआचरनपुनीत॥ पतिअनुकूलसुप्रेमदृढहरिपदकमलबिनीत॥ चौ॥ एक
बारभूपतिमनमाही॥ भैगलानिमोरेसुतनाही॥ गुरुगृहगयेतुरतमहिपाला॥ चरनलागिकरिबिनयबिशाला॥ निजसुखदुखसबगुरहिसुनाए
कहिबशिष्टबहुबिधिसमझाए॥ धरौधीरहोइहिसुतचारी॥ त्रिभुवनविदितभक्तभयहारी॥ शृंगीऋषिहिवशिष्टबुलावा॥ पुत्रकामशुभयज्ञकरा
वा॥ भक्तिसहितमुनिआहुतदीन्हे॥ प्रगटेअगनचरूकरलीन्हे॥ जोवशिष्टकछुहृदैंबिचारा॥ सकलकाजभासिद्धतुम्हारा॥ इहिहबिबाट
देहुनृपजाई॥ यथाजोगजिहिभागबनाई॥ दो॥ तबअदृश्यभयेपावकुसकलसबहिसमुझाइ॥ परमानंदमगननृपहरषनहृदैंसमाइ॥ चौ॥ तब
हिरायप्रियनारिबुलाई॥ कौशल्यादितहाचलिआई॥ अरधभागकौशल्यहिदीना॥ उभयभागआधेकरकीना॥ कैकेइकहुनृपसोदयौ॥ रह्यौसउभय
भागपुनिभयौ॥ कौशल्याकेकईहाथधरि॥ दीन्हसुमित्रहिमनप्रसन्नकरि॥ इहिविधिगर्भसहितसबनारी॥ भइहृदयहरषतसुखभारी॥ जादि राम
नतेहरिगर्भहिआए॥ सकललोकसुखसंपतिछाए॥ मंदरमहिसबराजहिरानी॥ सोभासीलतेजकीषानी॥ सुषजुतकछुककालचलगयौ॥ जि ४४
हिप्रभुप्रगटसोअवसरभयौ॥ दो॥ जोगलगनगरहबारतिथिसकलभएअनुकूल॥ चरअरुअचरसुहर्षजुतरामजन्मसुखमूल॥ चौ॥ नौमी
तिथिमधुमासपुनीता॥ शुकलपक्षअभिजितहरिप्रीता॥ मध्यदिवसअतिसीतनघामा॥ पावनसकललोकबिश्रामा॥ सीतलमंदसुरभिबहबा

ऊ॥ हरषत सुर संतन मन चाऊ॥ बन कुसमित गिरिगन मनिआरा॥ स्रवहि सकल सरितामृत धारा॥ सो अवसर बिरंचि जब जाना॥ चले सकल
सुर साजि बिमाना॥ गगन बिमल संकुल सुर जूथा॥ गावहि गुन गंधर्ब बरूथा॥ बरषहि सुमन सुअंजलि साजी॥ गहगहि गगन दुंदुभी बाजी॥ अस्तु-
ति करहि नाग मुनि देवा॥ बहुबिधि लावहि निज निज सेवा॥ दो॥ सुर समूह बिनती करी पहुचे निज निज धाम॥ जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल
लोक बिश्राम॥ छंद॥ भए प्रगट कृपाला परम दयाला कौशल्या हित कारी॥ हरषत महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥ लोचन अभिरामं तन घ-
नस्यामं निज आयुध भुज चारी॥ भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥ कहु दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी किहि बिधि करौ अनंत॥ माया गुन
ज्ञानातीत अमाना बेद पुरान भनंत॥ करुणा सुख सागर सब गुन आगर जिहि गावहि स्रुति संत॥ सो मम हित लागी जन अनुरागी भए प्रगट श्रीकंत॥
ब्रह्मांड निकाया निरमित माया रोम रोम प्रति बेद कहै॥ मम उर सो बासी इह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥ उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसकाना च-
रित बहुत बिधि कीन चहै॥ कहि कथा सुहाई मात बुझाई जिहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥ माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात इह रूप॥ कीजै शिशु लीला अ-
ति प्रिय सीला इह सुख परम अनूप॥ सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूप॥ इहि चरित जो गावहि हरिपद पावहि ते न परहि भव कूप॥ दो॥
बिप्र धेनु सुर संत हित लीन मनुज अवतार॥ निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गोपार॥ चौ॥ सुनि शिशु रुदन परम प्रिय बानी॥ संभ्रम चलि आई सब रा-
नी॥ हरषत जहत ह धाई दासी॥ आनंद मगन सकल पुरबासी॥ दशरथ पुत्र जनम सुनि काना॥ मानहु ब्रह्मानंद समाना॥ परम प्रेम मन पुलक शा

बा०का ४५ रीरा॥चाहतउठनकरतमतिधीरा॥जाकरनामसुनतसुभहोई॥मोरेग्रहआवाप्रभुसोई॥परमानंदपूरमनराजा॥कहाबुलाइबजावहुबाजा॥गुरु
वसिष्टकहंगयउहकारा॥आएद्विजनसहितन्रपद्वारा॥अनुपमबालकदेषिनजाइ॥न्रपरासिगुनकहनसिराई॥दो॥नांदीमुखसाराधकरिजा
तकर्मसवकीन॥हाटकधेनुरुवसनमनिन्रपविप्रनकोंदीन॥चौ॥ध्वजपताकतोरनपुरछावा॥कहिनजाइजिहिभांतिवनावा॥सुमनवृष्टि
अकासतेहोइ॥ब्रह्मानंदमगनसवकोई॥वृंदवृंदमिलिचलीलुगाइ॥सहजसिंगारकिएउठिधाई॥कनककलसमंगलभरिथारा॥गावतपैठ
हिभूपदुवारा॥करिआरतीनिछावरकरही॥वारवारशिशुचरननिपरही॥मागधसूतवंदिगुनिगाइक॥पावनगुनगावहिरघुनाइक॥सरवसुदा
नदीनसवकाहू॥जिहिपावाराषनहिताहू॥म्रगमदचंदनकुंकुमकीचा॥मचीसकलवीथनविचवीचा॥दो॥ग्रहग्रहवाजवधावसुभप्रगटेप्रभु
सुखकंद॥हरषवंतसवजहतहांनगरनारिनरवृंद॥चौ॥कैकयसुतासुमित्रादोऊ॥सुंदरसुतजनमतवओऊ॥वहसुखसंपतिसमयसमाजा॥कहि
नसकैसारदअहिराजा॥अवधिपुरीसोहैइहिभांती॥प्रभुहिमिलनआईजनुराती॥देषिभानुजनुमनसकचानी॥तदपिवनीसंध्याअनुमानी॥अगरधू राम
पवहुजनुअंधियारी॥उडैअवीरमनहुअरुनारी॥मंदिरमनसमूहजनुतारा॥न्रपग्रहकलससोइंदुउदारा॥भवनवेदधुनिअतिम्रदुवानी॥जनुखग ४५
गमुखरसमयजनसानी॥कौतकदेषिपतंगभुलाना॥एकमासतिहिजाततजाना॥दो॥मासदिवसकरिदिवसभामरमनजानैकोइ॥रथसमेतरविथा
किउनिसाकवनविधिहोइ॥चौ॥इहरहस्यकाहूनहिजाना॥दिनमनिचलेकरतगुनगाना॥देषिमहोत्सवसुरमुनिनागा॥चलेभवनवरनतनिजभा

गा॥औरौएककहौंनिजचोरी॥सुनिगिरिजाअतिदृढमतितोरी॥काकभुसुंडसंगहमदोऊ॥मनुजरूपजानैनहिकोऊ॥परमानंदप्रेमसुखफू
ले॥वीथिनिफिरहिमगनमनभूले॥इहिसुभचरितजानयैसोई॥कृपारामकीजापरहोई॥तिहिअवसरजाजिहिविधिआवा॥दीन्हभूपसोतिहिमन
भावा॥गजरथतुरगहेमगोहीरा॥दीनैनृपनानाविधिचीरा॥दो॥मनसंतोषेसवनिकेजहतहदेहिअसीस॥सकलतनयचिरजीवहुतुलसीदा
सकेईस॥चौ॥कछुकदिवसवीतेएहिभांती॥जातनजानेउदीनअरुराती॥नामकरनकरअवसरजानी॥भूपवोलिपठएमुनिज्ञानी॥करिपूजा
भूपतिअसभाषा॥धरियनामजोमुनिगुनिराषा॥इन्हकेनामअनेकअनूपा॥मैनृपकहवस्वमतिअनुरूपा॥जोआनंदसिंधसुखरासी॥सीक
रतेत्रैलोकसुपासी॥सोसुखधामरामअसनामा॥अखिललोकदायकविश्रामा॥विश्वभरनपोषनकरजोई॥ताकरनामभरतअसहोइ॥जा
केसुमिरनतेरिपुनासा॥नामशत्रुहनवेदप्रगासा॥दो॥लछनधामरामप्रियसकलजगतआधार॥गुरवशिष्टतेहिराषालछमननामउदार॥चौ
धरेनामगुरहृदैविचारी॥वेदतत्वनृपतवसुतचारी॥मुनिधनजनसरवससिवप्राना॥वालकेलिरसतेसुखमाना॥वारेहितेनिजहितपतिजानी
लछमनरामचरनरतिमानी॥भरतशत्रुहनदुनौभाई॥प्रभुसेवकजसिप्रीतिवडाई॥स्यामगउरसुंदरदोउजोरी॥निरषहिछविजननीत्रिन
तोरी॥चारिउशीलरूपगुणधामा॥तदपिअधिकसुखसागररामा॥हृदयअनुग्रहइंदुप्रकासा॥सूचतकिरनमनोहरहासा॥कवहुंउछं
गकवहुवरपलना॥मातुदुलारैकहिप्रियललना॥दो॥व्यापकब्रह्मनिरंजननिर्गुणविगतविनोद॥सोअजप्रेमभगतवसकौसिल्याकेगोद॥

बा०कां० २१३॥चौ०॥कामकोटिछबिस्यामशरीरा॥नीलकंजवारिदगंभीरा॥अरुणचरनपंकजनषजोती॥कमलदलहिबैठेजनुमोती॥रेषकुलिस
४६ ध्वजअंकुससोहे॥नूपुरधुनिसुनिमुनिमनमोहे॥कटिकिंकिनिउदरत्रैरेषा॥नाभिगंभीरजानजिहिदेषा॥भुजविसालभूषणजुतभूरी॥हियहरि
नषअतिसोभारूरी॥उरमनिहारपदिककीसोभा॥विप्रचरनदेषतमनलोभा॥कंबुकंठअतिचिवुकसोहाई॥आननअमितमदनछविछाई॥
दुइदुइदसनअधरअरुनारे॥नासातिलककोवरनैपारे॥सुंदरश्रवनसुचारुकपोला॥अतिप्रियमधुरतोतरेबोला॥नीलजलजदोउनै
नविशाला॥विकटभृकुटिलटकनवनमाला॥चिक्कनकचकुंचित[illegible]आरे॥वहुप्रकाररचिमातुसवारे॥पीतझगुलिआतनप घुंघ५
हिराई॥जानुपानिविचरनिमोहिभाई॥नृपसकहिनहिकहिश्रुतिशेषा॥सोजानैसपनेहुजेहिदेषा॥दो॥सुखसंदोहमोहपरज्ञानगि
रागोतीत॥दंपतिपरमप्रेमवसकररिसिसुचरितपुनीत॥२१४॥चौ॥एहिविधिरामजगतपितुमाता॥कोसलपुरवासिन्हसुखदाता॥जेन्ह
रघुनाथचरनरतिमानी॥तिनकियहगतिप्रगटवषानी॥रघुपतिविमुखजतनकरकोरी॥कौनसकैभवबंधनछोरी॥जीवचराचरवस राम
करिराषे॥सोमायाप्रभुसोभयभाषे॥भृकुटिविलासनचावैताही॥असप्रभुछाडिभजियककाही॥मनक्रमवचनछाडिचतुराई॥भ ४६
जतकृपाकरिहहिरघुराई॥एहिविधिशिशुविनोदवहुकीन्हा॥सकलनगरवासिनसुखदीन्हा॥लैउछंगकवहुकहलरावै॥कवहुंपा
लनेघालिझुलावै॥दो॥प्रेममगनकोशिल्यानिसिदिनजातनजान॥सुखसनेहवसमातावालचरितकरगान॥२१५॥चौ॥एकवारजन

नीअन्हवाए॥करिसिंगारपलनापोढाए॥निजकुलइष्टदेवभगवाना॥पूजाहेतुकीन्हअस्नाना॥करिपूजानैवेद्यचढावा॥आपुग
इजहेंपाकवनावा॥वहुरिमातुतहवाचलिआई॥भोजनकरतदेषसुतजाई॥गैजननीसिसुपहिभयभीता॥देषावालतहापुनिसूता॥वहु
रिआइदेषासुतसोई॥हृदयकंपमनधीरनहोई॥इहांउहांदुइवालकदेषा॥मतिभ्रममोरिकिआनविसेषा॥देषिरामजननीअकुलानी
प्रभुहसिदीन्हमधुरमुसुकानी॥दो॥देषिरावामातहिनिजअद्भुतरूपअखंड॥रोमरोमप्रतिलागेकोटिकोटिब्रह्मंड॥२०१॥चौ॥अगनि
तरविशशिशिवचतुरानन॥वहुगिरिसरितसिंधमहिकानन॥कालकर्मगुणज्ञानसुभाऊ॥सोदेषाजोसुनानकाऊ॥देषीमाया
सवविधिगाढी॥अतिसभीतजोरेकरठाढी॥देषाजीवनचावैजाही॥देषिभगतिजोछोरैताही॥तनपुलकितमुखवचननआवा॥नैनमूंदि
चरनन्हसिरनावा॥विसमयवंतदेषिमहतारी॥भएवहुरिसिसुरूपषरारी॥अस्तुतिकरिनजायभयमाना॥जगतपितामैसुतकरिजाना॥
हरिजननीवहुविधिसमुझाई॥यहजनिकतहूंकहसिसुनुमाई॥दो॥वारवारकौशिल्याविनयकरैकरजोरि॥अवजनिकवहुव्यापइप्रभु
मोहिमायातोरि॥२०२॥चौ॥वालचरितप्रभुवहुविधिकीन्हा॥अतिअनंददासनकहदीन्हा॥कछुकालवीतेसवभ्राता॥वडेभएपरिजनसुख
दाता॥चूडाकरनकीन्हगुरजाई॥विप्रन्हवहुतवदछिनापाई॥परममनोहरचरितअपारा॥करतफिरतचारिउसुकुमारा॥मनक्रमवचनअ
गोचरजोई॥दसरथअजिरविचरप्रभुसोई॥भोजनकरतवोलजवराजा॥नहिंआवततजिवालसमाजा॥कौशल्याजववोलनजाई॥ठुमुर

बा॰का॰ कुउमुकुप्रभुचलेपराई॥निगमनेतिशिवध्याननपावा॥ताहिधरैजननीहटिधावा॥धूसरधूरिभरेतनआए॥भूपतिविहसिगोदवैठाए॥दो
४७ भोजनकरतचपलचितइतउतअवसरपाइ॥भाजिचलेकिलकतमुखदधिवोदनलपटाइ॥२१८॥चौ॥वालचरितअतिसरलसुहाए॥सारदशे
षसंभुश्रुतिगाए॥जिन्हकरमनइन्हसननहिराता॥तेजनवंचककिएविधाता॥भएकुमारजवहिसवभ्राता॥दीन्हजनेउगुरपितुमाता॥गुरगृह
गएपढनरघुराई॥अलपकालविद्यासवपाई॥जाकेसहजस्वासस्रुतिचारी॥सोहरिपढयहकौतुकभारी॥विद्याविनयनिपुणगुणशीला॥
षेलहिषेलसकलन्रपलीला॥करतलधनुषवानअतिसोहा॥देषतरूपचराचरमोहा॥जिन्हवीथिन्हविहरहिसवभाई॥थकितहोहिसवलोग
लुगाइ॥दो॥कोशलपुरवासीनरनारिवृद्धअरुवाल॥प्रानहुतेप्रीयलागतसवकहरामकृपाल॥२१९॥चौ॥वंधुसखासवलेहिवुलाई॥वन
मृगयानितषेलहिजाई॥पावनमृगमारहिजियजानी॥दिनप्रतिन्रपहिदेषावहिआनी॥येमृगरामवानकेमारे॥तेतनुतजिसुरलोकसिधा राम
रे॥अनुजसखासंगभोजनकरही॥मातुपिताअज्ञाअनुसरही॥येहिविधिसुखीहोहिसवलोगा॥करहिकृपानिधिसोइसंयोगा॥वेदपुराणसु ४७
नहिमनलाई॥आपुकहहिअनुजहिसमुझाई॥प्रातकालउठिकैरघुनाथा॥मातुपितागुरनावहिमाथा॥आएसुमागिकरहिपुरकाजा॥देषिच
रितमनहरषितराजा॥दो॥व्यापकअकलअनीहअजनिर्गुणनामनरूप॥भगतहेतुनानाविधिकरतचरित्रअनूप॥२२०॥चौ॥यहसवचरि
तकहामैगाई॥आगिलकथासुनहुमनलाई॥विश्वामित्रमहामुनिज्ञानी॥वसहिविपिनशुभआश्रमजानी॥जहजपजागजोगमुनिकरही॥

अतिमारीचसुवाहुहिडरही॥ देषतयज्ञनिशाचरधावहि॥ करहिंउपद्रवमुनिदुखपावहि॥ गाधितनयमनचिंताब्यापी॥ हरिबिनुमरहिंन
निशिचरपापी॥ तवमुनिवरमनकीन्हबिचारा॥ प्रभुअवतरेहरनमहिभारा॥ एहिमिसुदेषौहरिपदजाई॥ करिविनतीआनौदोउभाई॥ ज्ञानबिरा
गसकलगुनअयना॥ सोप्रभुमैंदेषवभरिनयना॥ दो॥ वहुविधिकरतमनोरथजातनलागीवार॥ करिमज्जनसरउज्जलगएभूपदरवार॥
२२१॥ चौ॥ मुनिआगमनसुनाजवराजा॥ मिलनगएलैविप्रसमाजा॥ करदंडवतमुनिहिसनमानी॥ निजआसनवैठारेन्हिआनी॥ चरनपषा
रिकीन्हअतिपूजा॥ मोसमधन्यआजुनहिदूजा॥ विविधिभांतिभोजनकरवावा॥ मुनिवरहृदयहरषअतिआवा॥ पुनिचरनन्हमेलेसुतचारी
रामदेषिमुनिदशाविसारी॥ भएमगनदेषतमुखसोभा॥ जनुचकोरपूरनशशिलोभा॥ तवमनहरषिवचनकहराउ॥ मुनिअसिक्रुपाकी
न्हिनहिंकाउ॥ केहिकारनआगमनतुम्हारा॥ कहहुसोकरतनलाउंवारा॥ असुरसमूहसतावहिमोही॥ मैंजाचनआएउंन्रपतोही॥ अ
नुजसमेतदेहुरघुनाथा॥ निशिचरवधमैंहोवसनाथा॥ दो॥ देहभूपमनहरषिततजहुमोहअज्ञान॥ धर्मसुजसप्रभुतुमकहहिनकहंअ
तिकल्यान॥ २२२॥ चौ॥ सुनिराजाअतिअप्रियवानी॥ हृदयकंपमुखदुतिकुम्हिलानी॥ चौथेपनपाएसुतचारी॥ विप्रवचननहिकहेहुविचारी॥ मा
गहुभूमिधेनुधनकोसा॥ सरवसदेउंआजुसहरोसा॥ देहप्रानतेंप्रियकछुनाही॥ सोउमुनिदेउंनिमिषएकमाही॥ सवसुतप्रियप्रानकीनाई॥ रामदेतनहिवनयगोसांई॥ कहनिसिचरअतिघोरकठोरा॥ कहंसुंदरसुतपरमकिसोरा॥ सुनिन्रपगिराप्रेमरससानी॥ हृदयहरषमानामु

बा॰का॰ निशपानी॥ तववशिष्ट वज्ञ विधि समुझावा॥ नृपसंदेह नास कहं पावा॥ अति आदर दोउ तनय वुलाए॥ हृदय लाय वज्ञ भांति सिषाए॥ मेरे प्रान नाथ
४८ सुत दोउ॥ तुम्ह मुनि पिता आन नहि कोउ॥ दो॰॥ सौपे भूपति रिषिहि सुत वज्ञ विधि देइ असीस॥ जननी भवन गए प्रभु चले नाइ पद सीस॥ २२३॥ सो॰॥ पुरुषसिं
ह दोउ वीर हरषि चले मुनि भय हरन॥ कृपासिंधु मतिधीर अखिल विश्व कारन करन॥ चौ॥ अरुण नयन उर वाज्ञ विशाला॥ नील जलज तनु स्या
म तमाला॥ कटि पट पीत कसे वर भाथा॥ रुचिर चाप सायक दुज्ञ हाथा॥ स्याम गौर सुंदर दोउ भाई॥ विश्वामित्र महानिधि पाइ॥ प्रभु ब्रह्मन्यदेव मय
जाना॥ मोहि निति पिता तजेउ भगवाना॥ चले जात मुनि दीन्ह दिषाइ॥ सुनि ताडिका क्रोध करि धाई॥ एकहि वान प्रान हरि लीन्हा॥ दीन जानि तेहि
निज पद दीन्हा॥ तव ऋषि निज नाथहि जिय चीन्हा॥ विद्यानिधि कहं विद्या दीन्हा॥ जाते लाग न क्षुधा पिआसा॥ अतुलित वल तनु तेज प्रकासा॥
दो॰॥ आयुध सकल समर्पि करि प्रभु निज आश्रम आनि॥ कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि॥ २२४॥ चौ॥ प्रात कहा मुनि सन रघुराई
निर्भय यज्ञ करज्ञ तुम जाई॥ होम करन लागे मुनि झारी॥ आपु रहे मख की रषवारी॥ सुनि मारीचि निशाचर कोही॥ लै सहाइ धावा मुनि द्रोही॥ विनु फ राम
र राम वान तेहि मारा॥ शत योजन गा सागर पारा॥ पावक सर सुवाज्ञ पुनि मारा॥ अनुज निशाचर कटक संघारा॥ मारि असुर दिज निर्भय कारी॥ अ ४८
स्तुति करहि देव मुनि झारी॥ तह पुनि कछुक देवस रघुराया॥ रहे कीन्ह विप्रन्ह पर दाया॥ भगत हेतु वज्ञ कथा पुराना॥ कहे विप्र यद्यपि प्रभु जाना॥ तव मु
नि सादर कहा वुझाई॥ चरित एक प्रभु देखिय जाई॥ धनुष यज्ञ सुनि रघुकुल नाथा॥ हरषि चले मुनिवर के साथा॥ आश्रम एक दीष मग माही॥ षग मृ

गजीवजंतु तहं नाही ॥ पूछा मुनिहि सिला प्रभु देषी ॥ सकल कथा मुनि कही विशेषी ॥ दो॰ ॥ गौतम नारि श्राप वस उपल देह धरि धीर ॥ चरन कमल
रज चाहति कृपा करहु रघुवीर ॥ २२५ ॥ छंद ॥ परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भइ तपपुंज सही ॥ देषत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख
होइ कर जोरि रही ॥ अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहि आवै बचन कही ॥ अतिसय बड भागी चरनन्ह लागी जुगल नयन जलधार वही ॥
धीरज मन कीन्हां प्रभु कहुं चीन्हा रघुपति कृपा भगति पाई ॥ अति निर्मल वानी अस्तुति ठानी ज्ञान गम्य जै रघुराइ ॥ मै नारि अपावन प्रभु ज
गपावन रावन रिपु जन सुखदाई ॥ राजीव विलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनन आई ॥ मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अ
नुग्रह मै माना ॥ देषेउ भरि लोचन हरि भवमोचन इहै लाभ शंकर जाना ॥ विनती प्रभु मोरी मै मति भोरी नाथ न वर मागो आना ॥ पद कम
ल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥ जेहि पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई शिव सीस धरी ॥ सोइ पद पंकज जेहि पूजत
अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी ॥ एहि भांति सिधारी गौतम नारी वार वार हरि चरन परी ॥ जो अति मन भावा सो वर पावा गइ पति लोक अनं
द भरी ॥ दो॰ ॥ अस प्रभु दीनवंधु हरि कारन रहित कृपाल ॥ तुलसीदास सठ ताहि भजु छाडि कपट जंजाल ॥ २२६ ॥ चौ॰ ॥ चले राम लछिमन मुनि
संगा ॥ गए जहां जगपावनि गंगा ॥ अनुज सहित प्रभु कीन्ह प्रनामा ॥ वहु प्रकार सुख पाएउ रामा ॥ पुनि सुरसरि उतपति रघुराई ॥ कौशिक क
हे पूछा सिर नाई ॥ कह मुनि प्रभु तव कुल एक राजा ॥ नाम सगर तिहु लोक विराजा ॥ तेहि नृप के जुग तिय सुकुमारी ॥ प्रथम केसनि सुमति

वा॰ कां॰ लघुप्यारी॥ सवप्रकारसंपतिगुनभ्राजा॥ सुतविहीनमनविस्मैराजा॥ एकसमैप्रभामिनिदोउसाथा॥ न्रपतपहेतुगएउरघुनाथा॥ सघन
४९ सकलतरुसुंदरनाना॥ तहंभ्रगुमुनितपतेजनिधाना॥ दो॥ सहितरानिन्हप्रमुदितमनतहांवरषसतएक॥ कीन्हातपभ्रगुदेषिप्रभुअस्तुतिकी
न्हअनेक॥ २२७॥ चौ॥ कहिनिजदुखप्रनामन्रपकीन्हा॥ देइअसीसतवमुनिवरदीन्हा॥ न्रपरानीसनमुनिअसभाषा॥ लेहिसोवरुजोजेहि
अभिलाषा॥ सुनिमुनिवचनसीसतिन्हनावा॥ देहुनाथतुमकहजोभावा॥ एकहिएककहेसुतहोना॥ दुसरिहिसहससाठिगुनलोना॥ हर
षितभएउसुभगवरुपाई॥ हाथजोरिसिरननसिरुनाई॥ सहितभामिनिन्हअवधहिआए॥ हरषसहितकछुकालविताए॥ जानिघरीसु
हरसुखदाई॥ नामकेसिअसमंजसपाई॥ सुमतीप्रसवतुंवएकसोई॥ भएसुतप्रगटकहेमुनिजोई॥ हरषसाहितदियेदाननरेसू॥ सजिविप्र
गुरगौरिगणेसू॥ छूनघटसुंदरविविधिमगाए॥ तेसवसुतन्रपतिन्हमगनाए॥ दो॥ एहिविधिभएसकलसुतसजेसवमनकाम॥ जिहिं राम
दिवसनिसिहरषवससुनहुंरामघनिस्याम॥ २२८॥ चौ॥ एहिविधिसवघरघरनिनरेसू॥ अतिअनंदतनुमिटाकलेसू॥ होइसुकाजस ४९
कलमनचीते॥ एहिसुखवसतवहुतदिनवीते॥ सुरजूनदीअवधिजोआहई॥ विमलसलिलउत्तरदिसिवहई॥ प्रजालोगकेवालकनाना॥
नितउठितहांकरहिअस्नाना॥ असमंजसतहेतरनीआनी॥ तिनहिचढाइवोरनिजपानी॥ भएप्रजासवपरमदुषारी॥ वालकवधूसुनिसु
नहुषरारी॥ सकलगएजहदेउन्रपाला॥ वोलेवचननाइपदभाला॥ तुमन्रपचहहुप्रजाप्रतिपाला॥ सुततुम्हारभासवकरकाला॥ तजवदेसवरू

सुनहुनरेसा॥विनातजेनहिमिटहिकलेसा॥दो॥तवसुतकीन्हेपापवहुवोरेवालकवृंद॥तुमकहंप्रानसमानयहसकलप्रजनकहमंद॥२२९॥चौ॥
प्रजागिरासुनिधीरजदीन्हा॥सुतहिदेसतेवाहिरकीन्हा॥तासुतनयजगविदितप्रभाउ॥गुननिधिअंसुमानतेहिनाउं॥वसतहृदयनृपकेसोकैसें
फनिमनिमीनसलिलरहुजैसे॥गएप्रजासवनिजधामा॥भएनिसोचमनकहिविश्रामा॥वहुरिनृपतिमनकीन्हविचारा॥आश्रभएउपनचौथहमारा
द्विजमंत्रीनगुरसुतनवोलाए॥हिमिगिरिविंध्यमध्यतवआए॥रुचिरवेदिकाएकवनाई॥पेषतवनपवरजिनहिजाई॥मखवआरंभछाडेउतवतुरगा॥
वेगवंतदेषियजिमिउरगा॥दो॥सुरपतिसुनिमषदातनमननमहुंकरिअनुमान॥आइतुरंगतवलीन्हेउमरमनकोउजान॥२३०॥चौ॥राषेआ
निकपिलमुनिपाहीं॥कोउनजानकाहुकगमनाही॥जोगवतरहेजेसुभटसयाने॥लेतुरंगतिनहुनहुनहिजाने॥तिनसवआइकहीनृपपाही॥महा
राजहमकहतउराही॥लीन्हेतुरंगकिन्हिजाननकोई॥कहाकरियसोआयसुहोई॥सुनतवचननृपविस्मैपाए॥सकलसुतनकहेंतुरतवोलाए॥
जाहुतुरंगतुमहेरहुजाई॥सकलचलेचरननसिरुनाई॥सुरपतिसमदेषियसववीरा॥सकलधनुर्धरनअतिरनधीरा॥तिनहीचलतधरनीअ
कुलाई॥वलिअसुजीवभएसवआइ॥सुमनवाटिकाउपवनवागा॥सरितकूपवापिकातडागा॥नगरगाउमुनिन्हथलनाना॥गिरिकाननकंदरअ
स्थाना॥सो॥एहिविधिसोधेउजाईआएसवमिलिनृपपाहि॥चरननमाथेनाईवोलेप्रभुकहुंअश्वनाहि॥२३१॥चौ॥षोदहुमहिसुतफेरिपठाए॥चलेसकल
लसरवदिसिआए॥तिनकेकरजिमिकुलिससमाना॥जोजनभरिषोदहिवलवाना॥देषिअतुलवलविविधडेराने॥मरिहहिकहहिविरंचिसकुमाने॥सोध

वा॰का॰ तमहिपतालसवआए॥दिग्गजएकदेषिशिरनाए॥तिहिसछासवकथासुनाए॥वहुरिसकलपछिमदिसिआए॥इहिविधिपुनिदूसरगजदेषा॥अतिउतंग
५० मुनिविमलविशेषा॥तेहूकोप्रनामतिन्हकीन्हो॥चलेसकलपश्चिमचितदीन्हो॥तिसरेदेषिप्रदछिनकीना॥पुनिउत्तरदिसिसोधैलीना॥दिग्गजस्वे
तनिरषिसुखपाए॥सकलकपिलमुनिपहिपुनिआये॥षोदनमहिकोउपारनपावा॥भयेचहूदिसिजलधिसुहावा॥दो॥देषनआएतुरगतववा
धामुनिवरपास॥वोलेवचनसकुद्धह्वै नाचहसवकरनाम॥चौ॥षोदामहिहमचारोकोधा॥रेरेदुष्टवहुततोहिसोधा॥कोउकहचोरधीठवहु
होइ॥इहिसमछलीअवरनहिकोइ॥सुनतवचनमुनिचितवाजवही॥भएभस्मछिनमहुसवतवही॥पावककजानिधरहिकरग्रानी॥जर
हकर६ हिनकाहेतेअभिमानी॥जानिगरलजेसंग्रहही॥सुनहुरामतेकाहिनमरही॥क्रोधकीन्हविनकियेविचारा॥भयेसकलतिहितेजरिछारा॥इ
हानृपतिअंसमानवुलायो॥नहिआयेसवतिन्हैंपगयो॥दो॥दीन्हेनृपतिअसीसतव अतिहितवारहिवार॥वेगिफिरौलैतुरगसुतमेरेप्रा
नअधार॥चौ॥चल्योनाइपदसीसकुमारा॥विक्रमभक्तिहृपुरउजियारा॥जहकहनिरषमुननकेधामा॥सुछिषवरिकरिदंडप्रनामा॥अने राम
कमुनिनसोपाइअसीसा॥चारिहुगजकोनावतसीसा॥इहिविधिसोधतमगमहुजाता॥मिलेगरुडसुमतीकरभ्राता॥चरनपरततवआए ५०
सिषदयो॥जुरेसकलजिहिविधिसोकह्यो॥सुनितिहिवचनसोचभाभारी॥लेषगेसदिषयोथलवारी॥अंसमाननतहमज्जनकीन्हा॥क्रमक्रम
सवहितिलांजलिदीन्हा॥वहुरिगरुडवोलेसुनिताता॥मैतोहिकहौकरौइकवाता॥सो॥करिसुतसोइउपाइगंगाआवहिअवनिमहि॥दरस

नतेअघजाइमज्जनकीनैपरमसुख॥ चौ ॥षष्टसहस्रसवतरिहैंइहिविधि॥गंगापाइपरमपावननिधि॥सुनिअसवचनहृदयमनभाए॥सहि
तगरुडमुनिवरपहिआए॥तवषगेसमुनिचरननिनायो॥पूर्वकथानृपकेरिसुनायो॥आसिषदेइसुरगमुनिदीना॥हरषतहृदयगवनतवकीना॥
सगरसमीपगरुडपहुचाई॥गएभवननिजतवरघुराई॥सहिततुरंगनृपहिसिरनाई॥षष्टसहसमुनिकथासुनाई॥विस्मयहरषसहितनृपभयो॥
कीनैयज्ञदानवहुदयो॥वहुविधिनृपतिराजपुनिकीना॥प्रजालोगकहुअतिसुखदीना॥ दो ॥अंसमानकोराजदैआपगयोसुरधाम॥सु
रसरिविनआएनहींमनुजलहैविश्राम॥ चौ ॥तासुतनयदिलीपनृपभयो॥मनुतपहेतउत्तरदिसिगयो॥अतिहिअगमतपकीन्हनृपाला॥भ
येकालवसवितकछुकाला॥किहिविधिकैहौदिलीप्रभुताई॥सेवहिजाहिवहुतनृपआई॥जुगवतजासुसुरपतिनितरहई॥तासुमहिमाकविकि
हिविधिकहई॥भगीरथअससुतभयोजासु॥पितुसमनीतिअधिकउरतासु॥तिन्हैवोलिनृपदीन्हैराजा॥आपचलेउठितपकेकाजा॥मनमहु
करतपंथअनुमाना॥सुरसरआवतजोनतप्राना॥जिममनुतनदीनौतिमदैहो॥फिरनिजनगरकनावनलैहो॥ सो ॥इहिविधिकरतविचार
नृपकीन्हातवतपप्रवल॥वीतेकछुइककालदेहतजीकोउप्रगटनहि॥ चौ० ॥सुरसरिलागिनजहितनभूपा॥सोतजिमिदपिवहिजलकूपा॥इ
हाभगीरथमनअसभयो॥पितनआववहुदिनचलिगयो॥ककुस्थनामतनयइकरह्यो॥दीन्हाराजनीतवहुकह्यो॥कहितवसर्वकथासुतपा
हा॥दीनिअसीसचल्योनरनाहा॥निकसतनगरसगुनभलपाए॥अतिहिनिविडवनतहतवआए॥देषिभगीरथमनसुखपावा॥सुरसरिहिततपकहुम

वा०कां ५१ नलावा॥एकचरनदोउभुजाउठाएरविसनमुखचितवैमनलाए॥वरषसहसवीतेइहिभाती॥जातनजानैदिनअरुराती॥देषिअतपअजचूलिआ
ए॥वोलेन्रपसनवचनसुहाए॥चहैन्रपतिसोलैवरदाना॥वोलेन्रपकरिअजहिप्रनामा॥जोमागैसोजाननअहहू॥मोसनमागनप्रभुकिमक
हहू॥सो॥नदियकहैवरदेहूरसरजवंसअछेदप्रभु॥दूसरमागैएहूगंगाआवमहिपरमनिधि॥चौ॥एवमस्तकहिपुनिविधिकहई॥सुरसरदेवरा
षिकोसहई॥छूटैजाइपुनितुरतरसातल॥फिरैनवहूरिन्रपतिसुनिभ्रनल॥तिहतेकहौएकतोहिपाही॥अतिदयालसंकरमननमाही॥सोसक
राषिदेवसरिआजू॥उन्हैजयेतवहोइहैकाजू॥असकहिविधिअंतरहितभए॥वहूरिभगीरथशिवतपछए॥विवुधवरषअंगुष्टअधारा॥वारवा
रशिवनामउचारा॥शिवदयालप्रगटेतवआई॥हाथजोरिन्रपविनयसुनाई॥मैराषौसुरसरिकहईसा॥वहूरिउमापतिगएगिरीशा॥दो॥सुना
देवसरिशिववचनमनमहिकीन्हविचार॥जाउरसातलशिवसहितजातनलाऊवार॥चौ॥अंतरजामिशिवरचीउपाई॥निजसिरजटासो
अगमवनाई॥इहाभगीरथस्तुतिकीन्ही॥सुनिम्रदुगिराछाडिविधिदीन्ही॥छूटैसोरभयौवडभारी॥चकतदेवअहीसगजचारी॥गंगआइषि
वजटासमानी॥एकवरषतवरहीभुलानी॥शिवकौतकदिषिसवसुरहरषे॥कहिजयजयतिसुमनसुरवरषे॥वहूरिभगीरथसुमरनकीना॥शिव राम ५१
जटागारिवुंदइकदीना॥तिहितेभइतीनतवधारा॥गईनभएकएकपातारा॥गईनभसोअघकीसापिनि॥देवननामधन्योमंदाकिनि॥सो॥दूसरगई
पतालिनामप्रभावतिहरनदुख॥तीसरगंगकपालसवसंतनकोदेतसुख॥चौ॥आइभगीरथतवसिरनाए॥वोलीसुरसरिवचनसुहाए॥वेगवेतन्रपर

पगेआन्ह ॥ तुरगम रूत समसुन्नमसुभान् ॥ तिहिरथचढिचलिन्नपममआगै ॥ चलिहौमैतवपाछैलागै ॥ सुनिन्नपतुरतदिव्यरथआना ॥ चढैयोहहैसु
मिरतभगवाना ॥ चलीअथकरिन्नपसुरसरी ॥ देवनिमुदितसुमनझरिकरी ॥ चलततेजकछुवरनिनजाई ॥ टूटहितरुगिरिसिलासुहाई ॥ करहिको
लाहलजीवबहुजाती ॥ कमठनक्रझषव्यालबहुभाती ॥ मज्जनकरहिदेवतहआई ॥ मुनिगनसिद्धरहैतटछाई ॥ सो ॥ तरपनकरिमुनिजोग
हर्षहृदयनहिजाइकहि ॥ दरसनतेजगलोगतरिहैअससवमुनिकहै ॥ चौ ॥ करहिजुमज्जनजपमनलाईहि ॥ तिनकीमहिमाकहिनसिराइहि ॥
सिंहनपरन्नपसोहतकैसे ॥ तेजवंतरविदेषियजैसे ॥ नाघतसैलसुहावदेसा ॥ पाछैसुरसरिअग्रनरेसा ॥ हरिद्वारसमीपनतवआए ॥ तीरथदेषिसुर
सरिमनभाए ॥ तीरथबहुमनभासुखभारी ॥ आइप्रयागपहुचीअघहारी ॥ तहमज्जनकीन्हेदुखजाइ ॥ बहुरिदेवसुरिकासीआई ॥ सोशिवपुरी
सहजसुखदाई ॥ वरनीनजाइमनोहरताई ॥ तीरथऔरविविधविधिजानी ॥ गईजहाकिमकहौवषानी ॥ मगलोगनकोकरतसनाथा ॥ जाईचलि
इहिविधिरघुनाथा ॥ दो ॥ मिलीजाइपुनिउदधिमेउदधिहदैसुखमान ॥ बहुतप्रसंसिभगीरथहितुमसमधन्यनआन ॥ चौ ॥ कीनौअसजसकरैनर
कोइ ॥ तपमहिमावलकसनहिहोइ ॥ सगरतनयतारेततकाला ॥ हरषवंततवभयोभुवाला ॥ औरोबहुतेजुकुलमैकोऊ ॥ तिनकेसंगतरेसवओऊ ॥ स
कलसुरन्नसंगतहाविधाता ॥ न्नपसनआइकहीअसवाता ॥ धन्यभगीरथजसजगजयो ॥ तुमसमानन्नपअवरनभयो ॥ आपनसत्यव्रतज्ञाकियो ॥ संमत
वेदजीवनसुखदियौ ॥ गंगासागरसवकोऊकहही ॥ अघउल्लकदेषतरविउरही ॥ भागीरथीनामअसकैहै ॥ सुरमुनिनागसिद्धजसगैहै ॥ असकहिवि

बा०का० धनिजलोकहि आए॥ इहाभगीरथ अति सुखपाए॥छंद॥ पाए अमित सुख बहुरि एजा सुरसरिहि मन लाय कै॥ तव दीन आसिष मुदित गंगा न्ह
५२ ए चले सुख पाइ कै॥ इहि भाति सुनि गंगा कथा तव राम रिष चरननि नए॥ कह दास तुलसी राम लषन हि महामुनि आसिष दए॥दो॥ कौसिक आसि
ष अमीसम पाइ हरषि रघुराज॥ प्रभु संसय सव इमि गई लवानि रषि जिमवाज॥ इह प्रसंग सब सुधा सम सुनि हरषे रघुनाथ॥ प्रभु सुख पाइ कहेउ
पुनि वेगि चलो मुनिनाथ॥चौ॥ राम नाम ते संसय जाही॥ देह धरे कर इह फल भाई॥ गाधि सुवन सव कथा सुनाई॥ जिहि प्रकार सुरसरि महि आई॥१
तब प्रभु रिषिन समेत नहाए॥ विविधि दान महिदेवन पाए॥ हरषि चले मुनि हृंद सहाया॥ वेगि विदेह नगर नियराया॥ पुरी रम्यता राम जव देषी॥ ह
रषे अनुज समेत विशेषी॥ वापी कूप सरित सर नाना॥ सलिल सुधा सम मुनि सोपाना॥ गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा॥ कूजत कल बहु वरन विहंगा॥ वरन व
रन विकसे वन जाता॥ त्रिविधि समीर वहै सुखदाता॥दो॥ सुमन वाटिका वाग वन विलविहंग निवास॥ फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहु पास॥चौ॥
वनै न वरनत नगर नकाई॥ जहा जाइ मन तहा लुभाई॥ चारु वजार वीचि चित्र अटारी॥ मनमय जनु विधि सुकर सवारी॥ धनक वनिक सव धनद समाना॥ वै राम
ठे सकल वस्तु लेनाना॥ चौहट सुंदर गली सुहाई॥ संतत रहै सुगंध सिचाई॥ मंगल मय मंदर सव केरे॥ चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे॥ सुर नर नारि सुभग सुचिसं ५२
ता॥ धर्मशील ग्यानी गुनवंता॥ अति अनूप जह जनक निवासू॥ विथकहि विवुध विलोक विलासू॥ होत चकित चित कोट विलोकी॥ सकल भवन सोभा जनु रो
की॥दो॥ धवल धाम मनि पुरट पट सुघटत नाना भाति॥ सिय निवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति॥चौ॥ सुभग द्वार सव कुलिस कपाटा॥ भूप भीर नट मा

गधभाटा॥वनीविशालवाजिगजशाला॥हयगयरथसंकलसवकाला॥सूरसचिवसेनपवहुतेरे॥न्रपग्रहसरिससदनसवकेरे॥पुरवाहिरसरस
रितिसमीपा॥उतरेजहतहविपुलमहीपा॥देषिअनूपएकअवराई॥सवसुपाससवभातिसुहाई॥कौशिककहामोरमननमाना॥इहारहेरघुवीर
सुजाना॥भलेनाथकहिक्रपानिकेता॥उतरेतहमुनवृंदसमेता॥विस्वामित्रमहामुनिआए॥समाचारमिथलापतिपाए॥दो॥संगसचिवसु
चिभूरिभटभूसुरवरगुरग्याति॥चलेमिलनमुनिनाइकहिमुदितराउएहिभाति॥चौ॥कीन्हप्रनामचरनधरमाथा॥दीन्हअसीसमुदितमुनिना
था॥विप्रवृंदसवसादरवंदे॥जानिभाग्यवडरावअनंदे॥कुशलप्रस्नकहिवारहिवारा॥विस्वामित्रन्रपहिवैठारा॥तिहिअवसरआएदोउभाई
गएरहेदेषनफुलवाई॥स्यामगौरम्रदुवयसकिशोरा॥लोचनसुखदविस्वचितचोरा॥उठेसकलजवरघुपतिआए॥विस्वामित्रनिकटवैठाए
भयेसवसुखीदेषिदोउभ्राता॥वारिविलोचनपुलकितगाता॥मूरतमधुरमनोहरदेषी॥भएविदेहविदेहविशेषी॥दो॥प्रेममगनमनजानिन्र
पकरिविवेकधरिधीर॥वोलेमुनिपदनायशिरगदगदगिरागंभीर॥चौ॥कहोनाथसुंदरदोउवालक॥मुनिकुलितिलकिन्रपकुलपालक॥ब्रह्मयो
निगमनेतिकहिगावा॥उभयवेषधरिकैसोआवा॥सहजविरागरूपमनमोरा॥थकितहोतजिमचंदचकोरा॥तातेप्रभुपूछौसतभाऊ॥कहो
नाथजिनिकरोदुराऊ॥इन्हैविलोकतअतिअनुरागा॥वरवसब्रह्मसुखहिमनत्यागा॥कहिमुनिविहसकहेन्रपकीना॥वचनतुम्हारनहो
यअलीका॥एप्रियसवहिजहालगिप्रानी॥मनमुसकाहिरामसुनिवानी॥रघुकुलमनदशरथजाए॥ममहितलागनरेसपठाए॥दो॥रामलक्ष्म

बा॰का॰ मनदोउवंधवरऩूपशीलवलधाम॥ मखराष्योसवसाषिजगजीतअसुरसंग्राम॥चौ॥ मुनितवचरनदेषिकहराऊ॥ कहिनसकैकोनिजपु
५२ न्यप्रभाऊ॥ सुंदरस्यामगौरदोउभ्राता॥ आनदहूकआनददाता॥ इनकीप्रीतपरसपरपावनि॥ कहिनजायमनभावसुहावनि॥ सुनिहुना
थकहमुदितविदेहू॥ ब्रह्मजीवइवसहजसनेहू॥ पुनिपुनिप्रभुहिचितवनरनाहू॥ पुलकगातउरअधिकउछाहू॥ मुनिहिप्रसंसिनाइपदसीस
चल्योलिवायनगरअवनीसू॥ सुंदरसदनसुखदसवकाला॥ तहावासलैदीनभुवाला॥ करिपूजासवविधिसेवकाई॥ गयोराउग्रहविदाकराई
दो॥ रिषयसंगरघुवंसमनिकरिभोजनविश्राम॥ वैठेप्रभुभ्रातासहितदिवसरहाभरिजाम॥चौ॥ लषनहृदयलालसाबिशेषी॥ जाइजनकपु
रआइअदेषी॥ प्रभुभयवहुरिमुनहिसकुचाही॥ प्रगटकहैमनहिमुसुकाही॥ रामअनुमनकीगतिजानी॥ भगतवलताहियहुलासानी॥ परमविनी
तसकुचमुसकाई॥ वोलेगुरुअनुसासनपाई॥ नाथलषनपुरदेषनचहही॥ प्रभुसकोचडरप्रगटनकहही॥ जोरावरआयसमैपाऊ॥ नगरदिषाय
तुरतलेआऊ॥ सुनिमुनीसकहवचनसप्रीती॥ कसनरामतुमराषहुनीती॥ धरमसेतपालकतुमताता॥ प्रेमविवससेवकसुखदाता॥दो॥ जाइ
देषिआवहुनगरसुखनिधानदोउभाइ॥ करौसफलसवकेनयनसुंदरवदनदिषाइ॥चौ॥ मुनिपदकमलवंदिदोउभ्राता॥ चलेलोकलोचनसु राम ५३
खदाता॥ वालकवृंददेषिअतिसोभा॥ लभेसंगलोचनमनलोभा॥ पीतवसनपरिकरकटिभाथा॥ चारुचापसोहतहरिहाथा॥ तनअनुहरतसु
चंदनषोरी॥ स्यामलगौरमनोहरजोरी॥ केहरिकंधरवाहुविशाला॥ उरअतिरुचिरनागमनमाला॥ सुभगसोनसरसीरुहलोचन॥ वदनमयं

कल्पपत्रयमोचन॥ काननकनककफूलछविदेही॥ चितवतचितहचोरिजनुलेही॥ चितवनिचारुभृकुटिवरवाकी॥ तिलकरेषासोभाजनुचाकी॥
दो॥ रुचिरचौतनीसुभगसिरमेचककुंचितकेश॥ नषसिषसुंदरवंधदोउसोभासकलसुदेस॥ चौ॥ देषननगरभूपसुतआए॥ समाचारपुरलोगनपाए॥ धाए
धामकामसवत्यागी॥ मनहुरंकनिधिलूटनलागी॥ निरषिसहजसुंदरदोउभाई॥ होहिसुखीलोचनफलपाई॥ जुवतीभवनझरोषनलागी॥ निरषहिराम
रूपअनुरागी॥ कहैपरसपरवचनसप्रीती॥ सषीयनकोटिकामछविजीती॥ सुरनरअसुरनागमुनिमाही॥ सोभाअसकहिसुनियतनाही॥ विस्नु
चारिभुजविधिमुखचारी॥ विकटवेषमुखपंचपुरारी॥ अपरदेवअसकोउनआही॥ इहछविसखीपटतरहिजाही॥ दो॥ वयकिशोरसुखमासदन
स्यामगोरसुखधाम॥ अंगअंगपरवारियेकोटिकोटिसतकाम॥ चौ॥ कहहुसखीअसकोतनधारी॥ जोनमोहइहरूपनिहारी॥ कोउसप्रेमबोलीम्र
दुवानी॥ जोमैसुनासोसुनौसयानी॥ एदोऊदशरथनृपकेढोटा॥ वालमरालनिकेकलजोटा॥ मुनिकौशिकमखकेरषवारे॥ जिनरनअजिरनिसा
चरमारे॥ स्यामगातकलकंजविलोचन॥ सोमारीचसुभुजमदमोचन॥ कौशल्यासुतसोसुखषानी॥ रामनामधनुसाइकपानी॥ गौरकिशोरवेषवरका
छै॥ करसरचापरामकेपाछै॥ लक्षमननामरामलघुभ्राता॥ सुनिसखितासुसुमित्रामाता॥ दो॥ विप्रकाजकरिवंधदोउमगमुनिवधूउधार॥ आएदेष
नचापमषसुनिहरषीसवनारि॥ चौ॥ देषिरामछविकोउएककहई॥ जोगिजानकिहियहवरअहई॥ जोसषिइन्हैदेषिनरनाहू॥ पनपरहरिहठक
रैविवाहू॥ कोउकहएभूपतिपहचानै॥ मुनिसमेतसादरसनमानै॥ सखिपरंतुपनराउनतजई॥ विधिवसहठिअविवेकहिभजई॥ कोउकहेभल

 अहैविधाता॥ सवकोसुनियउचितफलदाता॥ तौजानकिहि मिलैवरएह्र॥ नाहि नआलिइहासंदेह्र॥ जोविधिवसअसवनैसंजोगू॥ तौक्रुतिक्र
 त्यहोइसवलोगू॥ सखिहमरेआरतिअतिताते॥ कवक्रुकएआवहि इहिनाते॥ दो॥ नाहितहमकक्रुसुनक्रुसखिइनकरदरसनदूरि॥ इहसंघटजवहो
इतवपुन्यपुन्यक्रुतभूरि॥ चौ॥ वोलीअपरकहेसखिनीका॥ इहिविवाहअतिहितसवहीका॥ कोउकहसंकरचापकठोरा॥ एस्यामलम्रुदुवैसकिसोरा॥
सवअसमंजसअहइसयानी॥ इहसुनिअपरकहैम्रदुवानी॥ सखियनकक्रुकोउकोउअसकहई॥ वडप्रभाउदेषतलघुअहई॥ परसिजासपदपंक
जधूरी॥ तरीअहल्याक्रुतअघभूरी॥ सोकिरहहिविनशिवधनुतोरैं॥ इहप्रतीतिपरहरियनभोरैं॥ जिहिविरंचिरचिसियसवारी॥ तिहिस्यामलवर
रच्यौविचारी॥ तासवचनसुनिसवहरषानी॥ ऐसेंइहोउकहैम्रदुवानी॥ दो॥ हियहरषैवरषैसुमनसुमुखिसुलोचनिवृंद॥ जाहिजहाजहवंधदेउ
तहतहपरमानंद॥ चौ॥ पुरपूरववदिसिगेदोउभाई॥ जहधनुमखहितभूमिवनाई॥ अतिविस्तारचारुगचढारी॥ विमलवेदिकारुचिरसवारी॥ चक्रु
दिसिकंचनमेचविशाला॥ रचेजहावैठेमहिपाला॥ तिहिपाछेसमीपचक्रुपासा॥ अमरमंचमंडलीविलासा॥ कछुकक्रुंचिसवभातिसुहाई॥ वैठेनग
रलोगजहजाई॥ तिनकेनिकटविशालसुहाए॥ धवलधामवक्रुवरनवनाए॥ जहवैठेदेषेसवनारी॥ यथाजोगनिजकुलअनुहारी॥ पुरवालककहिकहि
म्रुदुवचना॥ सादरप्रभुहिदिषावहिरचना॥ दो॥ सवशिशुइहमिसप्रेमवसपरसमनोहरगात॥ तनुपुलकअतिहरषिहियदेषिदेषिदोउभ्रात॥ चौ॥ शिशुसव
रामप्रेमवसजानैं॥ प्रीतिसमेतनिकेतवषानैं॥ निजनिजरुचिसवलेहिवुलाई॥ सहितसनेहजाहिदोउभाई॥ रामदिषावहिअनुजहिरचना॥ कहिम्रदुम

धरमनोहरवचना ॥ लवनिमेषमहुभुवननिकाया ॥ रचैजासुअनुसासनमाया ॥ भक्तिहेतसोईदीनदयाला ॥ चितवतचकितधनुषमखसाला ॥ कौतुकदे
षिचलेगुरुपाही ॥ जानिविलंवत्रासमनमाही ॥ जासुत्रासडरकहुडरहोई ॥ भजनप्रभावदिषावतसोई ॥ कहिवातैमृदुमधुरसुहाइ ॥ विदाकिएवालकवरिआइ
दो० ॥ समैसुप्रेमविनीतअतिसकुचिसहितदोउभाई ॥ गुरुपदपंकजनाइसिरवैठेआइसुपाई ॥ चौ० ॥ निसिप्रवेशमुनिआयुसदीनी ॥ सवहीसंध्यावंदनकीनी
कहतकथाइतिहासपुरानी ॥ रुचिररजनिजुगयामसिरानी ॥ मुनिवरसयनकीन्हजवजाई ॥ लगेचरनचापनदोउभाई ॥ जिनकेचरनसरोरुहलागी ॥
करतविविधिजपजोगविरागी ॥ तेदोउवंधप्रेमजनुजीते ॥ गुरुपदकमलपलोटतप्रीते ॥ वारवारमुनिअज्ञादीनी ॥ रघुवरजायसयनतवकीनी ॥ चा
पतचरनलषनउरलाए ॥ समैसप्रेमपरमसचपाए ॥ पुनिपुनिप्रभुकहसोवहुताता ॥ पौढेधरउरपदजलजाता ॥ दो० ॥ उठेलषननिसिविगतसुनि
अरुनसिषाधुनिकान ॥ गुरुतेपहलैजगतपतिजागेरामसुजान ॥ चौ० ॥ सकलसौचकरिजायनहाए ॥ नित्यनिवाहमुनिसिरनाए ॥ समयजानिगुरु
आयुसपाई ॥ लेनप्रसूनचलेदोउभाई ॥ भूपवागवरदेष्योजाई ॥ जहावसंतऋतुरहीलुभाई ॥ लागेविटपमनोहरनाना ॥ वरनवरनवरवेलिविताना
नवपल्लवफलसुमनसुहाए ॥ निजसंपतिसुररूषलजाए ॥ चकितकोकिलकलकीरचकोरा ॥ कूजतविहगनचतकलमोरा ॥ मध्यवागसरसोहसुहावा
मनिसोपानविचित्रवनावा ॥ विमलसलिलसरसिजवहुरंगा ॥ जलखगकूजतगुंजतभ्रंगा ॥ दो० ॥ वागतडागविलोकिप्रभुहरषेवंधसमेत ॥ परमर
म्यआरामयहजोरामहिसुखदेत ॥ चौ० ॥ चहुदिसिचितैपूछिमालीगन ॥ लगेलेनदलफूलमुदितमन ॥ तिहअवसरसीतातहाआई ॥ गिरिजापूजन

बा०कां
५५

जननिपठाई॥ संगसखीसबसुभगसयानी॥ गावहिगीतमनोहरबानी॥ सरसमीपगिरिजाग्रहसोहा॥ बरननजायदेषिमनमोहा॥ मज्जनकरिस
खिनसमेता॥ गईमुदितमनगौरनिकेता॥ पूजाकीनअधिकअनुरागा॥ निजअनुरूपसुभगवरुमागा॥ एकसखीसियसंगविहाई॥ गईरहीदेषन
फुलवाई॥ तिहिदोउबंधविलोकेजाई॥ प्रेमविवससीतापहिआई॥ दो॥ तासदशादेषीसखिनपुलकगाततजलनैन॥ कहुकारननिजहरषकरपूछै
हिसबमृदुबैन॥ चौ॥ देषनबागकुवरदोउआए॥ बयसिकिशोरसबभातिसुहाए॥ स्यामगौरकिमकहौवषानी॥ गिराअनैननैनबिनुबानी॥ सुनिहरषी
सबसखीसयानी॥ सियहियअतिउतकंठाजानी॥ एककहैन्रपसुततेईआली॥ सुनेयेमुनिसंगआएकाली॥ जिननिजरूपमोहनीडारी॥ कीन्हेसु
वसनगरनरनारी॥ वरनतछविजहतहसवलोगू॥ अवसिदेषियदेषनजोगू॥ तासुवचनअतिसियहिसुहानै॥ दरसलागिलोचनअकुलानै॥ चली
अग्रकरिप्रियसखिसोई॥ प्रीतपुरातनलषैनकोई॥ दो॥ सुमरिसियनारदवचनउपजीप्रीतपुनीत॥ चकितविलोकतिसकलदिसिजनुशिशुम्रगीस
भीत॥ चौ॥ कंकनकिंकिननूपरधुनिसुनि॥ कहतलषनसनरामहृदयगुनि॥ मानहुमदनदुंदभीदीनी॥ मनसाविश्वविजयवहुकीनी॥ अस राम
कहिफिरचितएतिहिओरा॥ सियमुखससिभएनयनचकोरा॥ भएविलोचनचारुअचंचल॥ मनहुसकुचिनिमितजेद्रगंचल॥ देषिसीयसोभासुष ५५
पावा॥ हृदैसराहतवचुननआवा॥ जनुविरंचिसवनिजनिपुनाई॥ विरंचिविश्वकहुप्रगटदिषाई॥ सुंदरताकहुसुंदरकरई॥ छविग्रहदीपसिखाज
नुवरई॥ सबउपमाकविरहेजुठारी॥ किहिपटतरौविदेहकुमारी॥ दो॥ सियसोभहियवरनिप्रभुआपनदसाविचारि॥ बोलेसुचिमनअनुजसनव

चनसमयअनुहारि॥ चौ॰॥ तातजनकतनयाइहसोई॥ धनुषयज्ञजिहिकारनहोई॥ पूजनगौरिसखीलैआई॥ करतप्रकासफिरैफुलवाई॥
जासुविलोकिअलोकिकसोभा॥ सहजपुनीतमोरमनछोभा॥ सोसवकारनजानिविधाता॥ फरकहिसुभदअंगसुनभ्राता॥ रघुवंशनकरसहज
सुभाऊ॥ मनकुपंथपगधरैनकाऊ॥ मोहिअतिसैप्रतीतिमनकेरी॥ जिहिसपनेहुपरनारिनहेरी॥ जिनकैलहैनरिपुरनपीठी॥ नहिपावहिपरतिय
मनदीठी॥ मंगनलहैनजिनकैनाही॥ तेनरवरथोरेजगमाही॥ दो॰॥ करतवरनकहीअनुजसन मनसियरूपलुभानि॥ मुखसरोजमकरंदछविक
रैमधुपइवपान॥ चौ॰॥ चितवतचकितचहूंदिसिसीता॥ कहंगएनृपकिशोरमनचीता॥ जहांविलोकमृगसावकनैनी॥ जनुतहवरसकमलसित
श्रेनी॥ लताओटतवसखिनलखाए॥ स्यामलगौरकिशोरसुहाए॥ देषिरूपलोचनललचानै॥ हरषेजनुनिजनिधिपहिचानै॥ थकेनैनरघुपतिछबि
विदेषै॥ पलकनिहूपरहरीनमेषै॥ अधिकसनेहदेहभइभोरी॥ सरदशशिहजनुचितवचकोरी॥ लोचनमगरामहिउरआनी॥ दीन्हेपलककपा
टसयानी॥ जवसियसखिनप्रेमवसजानी॥ कहिनसकैहिकछुमनसकुचानी॥ दो॰॥ लताभवनतेप्रगटभएतिहिअवसरदोउभाई॥ निकसेज
नुजुगविमलविधुजलदपटलविलगाय॥ चौ॰॥ सोभासीवसुभगदोउवीरा॥ नीलपीतजलजाभशरीरा॥ मोरपंखशिरसोहतनीके॥ गुछवीचविचकुस
मकलीके॥ भालतिलकश्रमविंदसुहाए॥ श्रवणसुभगभूषछविछाए॥ विकटभृकुटकचघूघरवारे॥ नवसरोजलोचनरतनारे॥ चारुचिवुकनासिकाक
पोला॥ हासविलासलेतमनमोला॥ मुखछविकहिनजायमोहिपाही॥ जोविलोकिवहुकामलजाही॥ उरवनमालकंवुकलग्रीवा॥ कामकलभक

वाल० रभुजवलसीवा॥ सुमनसमेतवामकरदौना॥ सावरकुवरसखीसुठिलौना॥ दो॥ केहरकटिपटपीतधरसुखमासीलनिधान॥ देषिभानकुलभूषनहि
५६ विसरासिषनअपान॥ चौ॥ धरिधीरजइकआलीसयानी॥ सीतासनवोलीगहिपानी॥ वहुरिगौरिकरध्यानकरेहू॥ भूपकिशोरदेषिकिनलेहू॥ सकुचसी
यतवनयनउघारे॥ सनमुषदोउरघुसिंहनिहारे॥ नखसिषदेषिरामकेसोभा॥ सुमरिपितापनमनअतिछोभा॥ परवससषिनलषीजवसीता॥ भए
उगहरुसवकेहेसभीता॥ पुनिआवैइहिवरियाकाली॥ असकहिमनविहसीइकआली॥ गूढगिरासुनिसियसकुचानी॥ भयोविलंवमातभयमानी॥
धरिवडधीररामउरआनै॥ फिरीअपनपौपितवसजानै॥ दो॥ देषनमिसमृगविहगतरुफिरैवहोरिवहोरि॥ निरषिनिरषिरघुवीरछविवाढैप्रीतन
थोरि॥ चौ॥ जानिकविनसिवचापविसूरति॥ चलीराषिउरस्यामलमूरति॥ प्रभुजवजातजानकीजानी॥ सुखसनेहसोभागुनषानी॥ परमप्रेमम
यमृदुमसिकीनी॥ चारुचित्रभीतरिलिषिलीनी॥ गईभवानीभवनवहोरी॥ वंदिचरनवोलीकरजोरी॥ जयजयगिरिवरराजकिशोरी॥ जयमहेसमु
खचंदचकोरी॥ जयगजवदनषडाननमाता॥ जगतजननिदामिनिदुतिगाता॥ नहितवआदिमध्यअवसाना॥ अमितप्रभाववेदनहिजाना॥ भवभयवि राम
भवपराभवकारिनि॥ विश्वविमोहनसुवसविहारिनि॥ दो॥ पतिदेवतासुतीयमहुमातप्रथमतवरेष॥ महिमाअमितनसकहिकहिसहससारदासेष॥ चौ॥ ५६
सेवततोहिसुलभफलचारी॥ वरदायनितिपुरारिपियारी॥ देविसजिपदकमलतुह्मारे॥ सुरनरमुनिसवहोहिसुखारे॥ मोरमनोरथजानउनीके॥ वसहु
सदाउरपुरसवहीके॥ कीन्हेंप्रगटनकारनतेही॥ असकहिचरनगहेवैदेही॥ विनयप्रेमवसभईभवानी॥ षसीमालमूरतिमुसकानी॥ सादरसियप्रसादसि

रधारिऊ॥ वोलीगौरिहरषहियभरिऊ॥सुनिसियसत्यअसीसहमरी॥ पूजहिमनकामनातुम्हारी॥नारदवचनसदासुचिसाचा॥सोवरमिलैजाहि
मनराचा॥छं॥ मनजाहिराच्यौमिलैसोवरसहजसुंदरसांवरो॥करुनानिधानसुजानसीलसनेहजानतरावरो॥इहिभांतिगौरअसीससुनिसि
यसहितहियहरषीअली॥ तुलसीभवानिहिपूजपुनिपुनिमुदितमनमंदिरचली॥सो॥ जानिगौरअनुकूलसियहियहरषनजाहिकहि॥ मंजु
लमंगलमूलवामअंगफरकनलगे॥दो॥ हृदयसराहतसियरघुराई॥गुरुसमीपगवनेदोउभाई॥ रामकहासवकौशिकपाही॥सरलसुभाव
छुवाछलनाही॥सुमनपाइमुनिपूजाकीनी॥पुनिअसीसदुहूंभाइनदीनी॥ सफलमनोरथहोहुतुम्हारे॥रामलषनसुनिभएसुखारे॥ करिभो
जनमुनिवरविज्ञानी॥लगेकहनकछुकथापुरानी॥विगतदिवसगुरुआयसपाही॥ संध्याकारनचलेदोउभाई॥प्राचीदिसिशशिउयोसुहावा॥
सियमुखसरिसदेषसुखपावा॥वहुरिविचारकीन्हमनमाही॥सीयवदनसमहिमकरनाही॥दो॥जन्मसिंधपुनिवंधविषदिनमलीनसकलंक
सियमुखसमतापावकिमचंदवापरोरंक॥चौ॥घटैवढैविरहिनदुखदाई॥ग्रसैराहुनिजासंधिहिपाई॥कोकशोकप्रदपंकजद्रोही॥अवगुनव
हुतचंद्रमातोही॥ वैदेहीमुखपटतरदीनै॥होइदोषवडअनुचितकीनै॥सियमुखछविविधव्याजवषानी॥गुरुपैचलेनिसावडिजानी॥करिमुनिच
रनसरोजप्रनामा॥आइपाइकीनैविश्रामा॥विगतनिसारघुनायकजागे॥ वंधविलोकिकहनअसलागे॥उयोअरुनअवलोकहुताता॥पंक
जकोकलोकसुखदाता॥ वोलेलषनजोरिजुगपानी॥प्रभुप्रभावसूचकमृदुवानी॥दो॥ अरुणोदयसकुचेकुमुदउडगनजोतिमलीन॥ जिमि

वा॰का॰ तुम्हारआगवनसुनिभएन्रपतिवलहीन॥चौ॥न्रपसवनषतकरहिउजियारी॥टारिनसकहिचापतमभारी॥कमलकोकमधुकरषगनाना॥ह
५७ रषेसकलनिसाअवसाना॥ऐसेंप्रभुसवभक्ततुम्हारे॥होइहिटूटेधनुषसुखारे॥उयेंभानुविनश्रमतमनासा॥दुरेनषतजगतेजप्रकासा॥र
विनिजउदयव्याजरघुराया॥प्रभुप्रतापसवन्रपनिदिषाया॥तवभुजवलमहिमाउदघाटी॥प्रगटीधनुविघटनपरिपाटी॥वंधुवचनसुनप्रभुमु
सकानै॥होइसुचिसहजपुनीतनहानै॥नित्यक्रियाकरिगुरुपहिआए॥चरनसरोजसुभगशिरनाये॥सतानंदजवजनकवुलाये॥कौसिकमुनि
पहितुरतपठाए॥जनकविनयतिनआनसुनाई॥हरषेवोलिलियेदोउभाई॥दो॥सतानंदपदिवंदिप्रभुवैठेगुरुपहिजाई॥चलौतातमुनिकह्यौत
वपठयेजनकवुलाय॥चौ॥सीयस्वयंवरदेषियजाई॥इसेकाहिधौदेइवडाई॥लषनकहाजसभाजनसोई॥नाथक्रुपातवजापरहोई॥हरषे
मुनिसवसुनिवरवानी॥दीन्हअसीससवहीसुखमानी॥पुनिमुनिवृंदसमेतक्रपाला॥देषनचलेधनुषमखशाला॥रंगभूमिआएदो॰ राम
उभाइ॥असमुधिसवपुरवासिनपाई॥चलेसकलग्रहकाजविसारी॥वालयुवाजरठनरनारी॥देषीजनकभीरभइभारी॥सुचिसेवकस॰ ५७
वलियेहंकारी॥तुरतसकललोगनपैंजाहू॥आसनउचितदेहुसवकाहू॥दो॥कहिम्रदुवचनविनीततिनवैठारेनरनारि॥उत्तममध्यम॰
नीचलघुनिजनिजथलअनुहारि॥चौ॥राजकुवरतिहअवसरआए॥मनौमनोहरतातनछाये॥गुनसागरनागरवरवीरा॥सुंदरस्यामल
गौरसरीरा॥राजसमाजविराजतरूरे॥उडगनमहुजनजुगविधुपूरे॥जिनकैरहीभावनाजैसी॥प्रभुमूरतितिन्हदेषीतैसी॥देषैंभूपमहारनधीरा

मनौवीररसधरेसरीरा॥डरेकुटिलन्टपप्रभुहिनिहारी॥मनहुभयानकमूरतिभारी॥रहेअसुरछलछोनिपवेषा॥तिहिप्रभुप्रगटकालस
मदेषा॥पुरवासिनदेषेदोउभाई॥नरभूषनलोचनसुखदाई॥दो॥नारिविलोकहिहरषिहियनिजनिजरुचिअनुरूप॥जनुसोहतसिंगारधरि
मूरतिपरमअनूप॥चौ॥विदुषनप्रभुविराटमयदीसा॥वहुमुखपगकरलोचनसीसा॥जनकजातिअवलोकहिकैसे॥सजनसगेप्रियला
गहिजैसे॥सहितविदेहविलोकहिरानी॥शिसुसमप्रीतनजायवषानी॥जोगिनपरमतत्वमयभासा॥सांतसुद्धमनसहजप्रकासा॥हरिभ
गतनदेषेदोउभ्राता॥इष्टदेवइवसवसुखदाता॥रामहिचितवभाईजिहिसीया॥सोसनेहसुखनहिकथनीया॥उरअनुभवतिनकहिसकसोऊ
कवनप्रकारकहैकविकोऊ॥जिहिविधिरहाजाहिजसभाऊ॥तिहितसदेषेकोशलराऊ॥दो॥राजतराजसमाजमहुकोशलराजकिशोर॥
सुंदरस्यामलगौरतनविस्वविलोचनचोर॥चौ॥सहजमनोहरमूरतिदोउ॥कोटिकामउपमालघुसोऊ॥सरदचंदनिंदकमुखनीके॥नीरज
नयनभावतेजीके॥चितवनिचारुमारमनहरनी॥भावतिहृदयजातिनहिवरनी॥कलकपोलश्रुतिकुंडललोला॥चिवुकअधरम्रदुसुंदर
वोला॥कुमदवंधुकरनिंदकहासा॥भ्रकुटीविकटमनोहरनासा॥भालविशालतिलकझलकाही॥कचविलोकिअलिअवलिलजा
ही॥पीतचौतनीसिरनसुहाई॥कुसमकलीविचवीचवनाई॥देषैरुचिरकंवुकलग्रीवा॥जनुत्रिभुवनसुषमाकीसीवा॥दो॥कुंजरमनिकंठ
ाकलितउरनितुलसिकामाल॥वृषभकंधकेहरठवनिवलनिधिवाहुविशाल॥चौ॥कटितूनीरपीतपटवांधे॥करसरधनुषवामवरकांधे॥

वा॰का॰ पीत यग्यउपवीत सुहाए॥ नषसिष मंजु महाछवि छाये॥ देषि लोग सव भये सुषारे॥ इकटक लोचन टरत न तारे॥ हरषे जनक देषि दोउ भा
५८ ई॥ मुनिपद कमल गहे तव जाई॥ करि विनती निज कथा सुनाई॥ रंगअवनि सव मुनिहि दिषाई॥ जहं जहं जाहि कुवर वर दोऊ॥ तहं तहं चकि
त चितव सव कोऊ॥ निज निज रुचि रामहि सव देषा॥ कोउ न जान कछु मरम विशेषा॥ भल रचना मुनि न्रप सन कहेऊ॥ राजा मुदित महा सुख
लहेऊ॥ दो॥ सव मंचन ते मंच इक सुंदर विशद विशाल॥ मुनि समेत दोउ वंधु तहं वैठारे महिपाल॥ चौ॥ प्रभुहि देषि सव न्रप हिय हारे॥ जनु
राकेश उदय भये तारे॥ अस प्रतीति सव के मन माही॥ राम चाप तोरव सक नाही॥ विनु भंजेहु भव धनुष विशाला॥ मेलहि सीय राम उर मा
ला॥ अस विचार गवनहु घर भाई॥ जस प्रताप वल तेज गवाई॥ विहसे अपर भूप सुनि वानी॥ ये अविवेक अंध अभिमानी॥ तोरेहु धनु
ष व्याह अवगाहा॥ विनु तोरे को कुवर विवाहा॥ एक वार काल कि न होऊ॥ सिय हित समर जित व हम सोऊ॥ इह सुनि अपर भूप मुसका
नै॥ धरमसील हरिभगत सयाने॥ सो॥ सीय विवाहहि राम गरव दूरि करन न्रपनि कौ॥ जीति को शक संग्राम दशरथ के रनवांकुरे॥ चौ॥ वि राम
थे मरौ जिन गाल वजाई॥ मन मोदकन कि भूष विताई॥ सिय हमारि सुनि परम पुनीता॥ जगदंवा जानहु जिय सीता॥ जगत पिता रघुपति ५८
हि विचारी॥ भरि लोचन छवि लेहु निहारी॥ सुंदर सुखद सकल गुन रासी॥ ए दोउ वंधु संभु उर वासी॥ सुधा समुद्र समीप विहाइ॥ म्रग जल
निरषि मरहु कत धाई॥ करहु जाइ जकहु जो भावा॥ हम तो आजु जनम फल पावा॥ अस कहि भले भूप अनुरागे॥ न्रप अनूप विलोकन लागे॥ दे

थै सुरनभ चढे विमाना ॥ वरषहि कुसुम करहि कल गाना ॥ दो० ॥ जानि सुअवसर सीय तव पठई जनक वुलाय ॥ चतुर सखी सुंदर सकल सादर
चली लिवाय ॥ चौ० ॥ सिय सोभा नहि जाय वषानी ॥ जगदंविका रूप गुन षानी ॥ उपमा सकल मोहि लघु लागी ॥ प्राकृत नारि अंग अनुरागी ॥ सि
य वरनिय तेइ उपमा देई ॥ कुकवि कहाइ अजस को लेई ॥ जो पटतरिय तीय सम सीया ॥ जग अस जुवति कहा कमनीया ॥ गिरा मुखर तन अरध
भवानी ॥ रति अति दुखित अतन पति जानी ॥ विष वारुनी वंधु प्रिय जेही ॥ कहिये रमा सम किमि वैदेही ॥ जो छवि सुधा पयोनिधि होई ॥ परम रू
पमय कछप सोई ॥ सोभा रजु मंदर सिंगारू ॥ मथै पानि पंकज निज मारू ॥ दो० ॥ इहि विधि उपजै लछि जव सुंदरता सुख मूल ॥ तदपि सकोच समेत
कवि कहैं सिया समतूल ॥ चौ० ॥ चली संग लै सखी सयानी ॥ गावत गीत मनोहर वानी ॥ सोह नवल तनु सुंदर सारी ॥ जगत जननि अतुलित छवि भा
री ॥ भूषन सकल सुदेस सुहाये ॥ अंग अंग रचि सखिनि वनाये ॥ रंगभूमि जव सिय पग धारी ॥ देषि रूप मोहे नरनारी ॥ हरषि सुरन्ह दुंदुभी वजा
ई ॥ वरषि प्रसून अपछरा गाई ॥ पानि सरोज सोह जयमाला ॥ अवचट चितये सकल भुवाला ॥ सीय चकित चित रामहि चाहा ॥ भये मोहवस
सव नरनाहा ॥ मुनि समीप देषे दोउ भाई ॥ लगे ललकि लोचननि निधि पाई ॥ दो० ॥ गुरजन लाज समाज वड देषि सीय सकुचानि ॥ लगी विलोक
न सखिन तन रघुवीरहि उर आनि ॥ चौ० ॥ राम रूप अरु सिय छवि देषैं ॥ नरनारिन्ह परहरी निमेषैं ॥ सोचहि सकल कहत सकुचाहीं ॥ विधि सन
विनय करैं मन माहीं ॥ हरु विधि वेगि जनक जडताई ॥ मति हमारि असि देहि सुहाई ॥ विनु विचार पन तजि नरनाहू ॥ सीय राम कर करै विवाहू ॥

बा॰ का॰ ५९

जगभलकहैं भावसवकाहू ॥ हठकीन्हैं अंतहू उरदाहू ॥ इहि लालसा मगनसवलोगू ॥ वरसावरो जानकीजोगू ॥ तव वंदीजनजनकवुलाये ॥ वि

रदावलीकहतचलिआये ॥ कहहुनृपजायकहौंपनमोरा ॥ चलेभाटहियहरषनथोरा ॥ दो॰ ॥ वोलेवंदीवचनवर सुनहुसकलमहिपाल ॥ पनविदे

हकरकहैंहमभुजाउठायविशाल ॥ चौ॰ ॥ नृपभुजवलविधशिवधनुराहू ॥ गरुअकठोरविदितसवकाहू ॥ रावनवानमहाभटभारे ॥ देषिस

रासनगवहिंसिधारे ॥ सोईपुरारिकोदंडकठोरा ॥ राजसमाजआजजोतोरा ॥ त्रिभुवनजयसमेतवैदेही ॥ विनहिंविचारवरैहठतेही ॥ सुनि

यनसकलनृपअभिलाषे ॥ भटमानीअतिसैमनमाषे ॥ परिकरवांधिउठेअकुलाई ॥ चलेइष्टदेवनिसिरनाई ॥ तमाकितमकितकिशिव

धनुधरहीं ॥ उठैनकोटिभांतिवलकरहीं ॥ जिन्हकेकछुविचारमनमाहीं ॥ चापसमीपमहीपनजाहीं ॥ दो॰ ॥ तमकिधरैंधनुमूढनृपउठैनच

लैलजाय ॥ मनहुपाइभटवाहुवलअधिकअधिकगरुआइ ॥ चौ॰ ॥ भूपसहसदसएकहिवारा ॥ लगेउठावनटरैनटारी ॥ डगैनशंभुसरासन राम

कैसे ॥ कामीवचनसतीमनजैसे ॥ सवनृपभयेजोगउपहासी ॥ जैसेविनविरागसन्यासी ॥ कीरतिविजयवीरताभारी ॥ चलेचापकरवरवसहा ५९

री ॥ श्रीहतभयेहारिहियराजा ॥ वैठेनिजनिजजाइसमाजा ॥ नृपनिविलोकिजनकअकुलाने ॥ वोलेवचनरोषजनुसाने ॥ दीपदीपकेभूप

तिनाना ॥ आयेसुनिहमजोपनठाना ॥ देवदनुजधरिमनुजशरीरा ॥ विपुलवीरआयेरनधीरा ॥ दो॰ ॥ कुवरमनोहरविजयवडि कीरतिअतिक

मनीय ॥ पावनहारविरंचिजनुरच्योनधनुदमनीय ॥ चौ॰ ॥ कहोकाहियहलाभनभावा ॥ काहुनशंकरचापचढावा ॥ रहौचढाववतोरवभाई ॥ तिल

लभरि न सकि न सके छुडाई ॥ अवजिनकोउ भाषै भट मानी ॥ वीरविहीन मही मैं जानी ॥ तजहु आस निज निज ग्रह जाहू ॥ लिषा न विधि वैदेहि विवाहू ॥ सुकृत जाय जौ पन परहरिऊं ॥ कुवरि कुवारि रहौ का करिऊं ॥ जो जनतेउं विनु भट महि भाई ॥ तौ पन करि होतेउं न हसाई ॥ जनक वचन सुनि सव नर नारी ॥ देषि जानकिहि भये दुषारी ॥ माषे लषन कुटिल भय भौंहैं ॥ रदपट फरकत नयन रिसौहैं ॥ दो ॥ कहि न सकत रघुवीर डर लगे वचन जनु वानु ॥ नाइ रामपदकमल सिर वोले गिरा प्रमान ॥ चौ ॥ रघुवंसिन महं जहं कोउ होई ॥ तिहि समाज अस कहै न कोई ॥ कही जनक जसि अनुचित वानी ॥ विद्यमान रघुकुलमनि जानी ॥ सुनौ भानुकुलपंकजभानू ॥ कहौं सुभाव न कछु अभिमानू ॥ जौ तुम्हार अनुशासन पावौं ॥ कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौं ॥ काचे घट जिमि डारौं फोरी ॥ सकौं मेरु मूलक जिमि तोरी ॥ तव प्रताप महिमा भगवाना ॥ को वापुरो पिनाक पुराना ॥ नाथ जानि अस आयसु होऊ ॥ कौतुक करौं विलोकिय सोऊ ॥ कमलनाल जिमि चाप चढावौं ॥ जोजन सत प्रमान लै धावौं ॥ दो ॥ तोरौं छत्रक दंड जिमि तव प्रताप वल नाथ ॥ जो न करौं प्रभुपदसपथ कर न धरौं धनु भाथ ॥ चौ ॥ लषन सकोप वचन जव वोले ॥ डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥ सकल लोक सव भूप डराने ॥ सिय हिय हरष जनक सकुचाने ॥ गुरु रघुपति सव मुनि मन माहीं ॥ मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं ॥ सयनहि रघुपति लषन निवारे ॥ प्रेम सहित निकट वैठारे ॥ विस्वामित्र समय शुभ जानी ॥ वोले अति सनेहमय वानी ॥ उठहु राम भंजहु भवचापा ॥ मेटहु तात जनक परितापा ॥ सुनि गुर वचन चरन सिर नावा ॥ हरष विषाद न कछु उर आवा ॥ ठाढे भये उठि सहज सुहाये ॥ ठवनि जुवा मृगराज लजाये ॥ दो ॥ उदित उदैगिरमंच पर रघुव

बा०कां०
६०

रवालपतंग॥ विकसेसंतसरोजसवहरषेलोचनभृंग॥ चौ॥ न्रपनिकेरिआसानिसिनासी॥ वचननषतअवलीनप्रकासी॥ मानीमहिपकुम
मसकुचानै॥ कपटीभूपउलूकलुकानै॥ भयेविशोककोकमुनिदेवा॥ वरसहिसुमनजनावहिसेवा॥ गुरुपदवंदसहितअनुरागा॥ राममुनिन्ह
सनआयसमागा॥ सहजहिचलेसकलजगस्वामी॥ मत्तमंजुवरकुंजरगामी॥ चलतरामसवपुरनरनारी॥ पुलिकपूरतनभयेसुखारी॥ वंदिपि
तरसुरसुकृतसभारे॥ जोकछुपुन्यप्रभावहमारे॥ तौशिवधनुमृनालकीनाई॥ तोरहुरामगनेशगुसाई॥ दो॥ रामहिप्रेमसमेतलषिसषिनसमी
पवुलाइ॥ सीतामातसनेहवसवचनकहैविलषाय॥ चौ॥ सखिसवकौतकदेषनहारे॥ येउकहावतहितूहमारे॥ कोउनवुझायकहेन्रपपाही॥ एवा
लकअसहठभलनाही॥ रावनवानछुवानहिचापा॥ हारेसकलभूपकरदापा॥ सोधनुराजकुवरकरदेही॥ वालमरालिकिमंदरिलेही॥ भूपसया
नपसकलसिरानी॥ सखिविधिगतिकछुजायनजानी॥ वोलीचतुरसखीमृदुवानी॥ तेजवंतलघुगनिअनरानी॥ कहांकुंभजकहसिंधअपारा॥ सो
षेउसुजससकलसंसारा॥ रविमंडलदेषतलघुलागा॥ उदयतासुत्रिभुवनतमभागा॥ दो॥ मंत्रपरमलघुजाससवविधिहरिहरसुरसर्व॥ महामत्तग
जराजकहुवसकरअंकुसषर्व॥ चौ॥ कामकुसमधनुसायकलीन्हे॥ सकलभुवनअपनैवसकीन्है॥ देवितजिअसंसयअसजानी॥ भंजहिधनुषर
राममुनिरानी॥ सखीवचनसुनिभैपरतीती॥ मिटाविषादवढीअतिप्रीती॥ तवरामहिविलोकिवैदेही॥ सभयहृदयविनवतिजिहितेही॥ मनहीमनम
नावअकुलानी॥ होहुप्रसन्नमहेसभवानी॥ करहुसफलआपनिसेवकाई॥ करिहितहरहुचापगरुआई॥ गननायकवरदायकदेवा॥ आजलगेकी

राम
६०

नीतवसेवा॥ वारवारदिनतीसुनिमोरी॥ करकुचापगरुता अतिथोरी॥ दो॥ देषिदेषिरघुवीरछविसुरमनावधरिधीर॥ भरेविलोचनप्रेमजलपुलकावलीस
रीर॥ चौ॥ नीकेंनिरिषनैनभरिसोभा॥ पतिपनसुमरिवहुरिमनछोभा॥ अहहतातदारुनहठठानी॥ समुझतनहिकछुलाभनहानी॥ सचिवसभसिषदेइ
नको॥ वुधसमाजवडअनुचितहोइ॥ कहधनुकुलिसहुचाहिकठोरा॥ कहास्यामलमृदुगातकिसोरा॥ विधिकिहिभांतधरौंउरधीरा॥ सिरससुमनकिमवे
धअहीरा॥ सकलसभाकीमतिभइमोरी॥ अवमोहिसंभुचापगतितोरी॥ निजजडतालोगनपरडारी॥ होहिहरुअरघुपतिहिनिहारी॥ अतिपरतापसीयम
नमाही॥ लवनिमेषजुगसयसमजाही॥ दो॥ प्रभुहिचितैपुनिचितवमहि राजतलोचनलोल॥ षेलतमनसिजमीनजुगजनुविधुमंडलडोल॥ चौ॥ गिरा
अलिनिमुखपंकजरोकी॥ प्रगटनलाजनिसाअवलोकी॥ लोचनजलरहलोचकोना॥ जैसैपरमकृपनकरसोना॥ सकुचीव्याकुलतावडिजा
नी॥ धरिधीरजप्रतीतिउरआनी॥ करहिमोहिरघुवरकीदासी॥ जिहिकेंजिहिपरसत्यसनेहू॥ सोतिहिमिलेनकछुसंदेहू॥ प्रभुतनचितैप्रेमपनठाना॥
कृपानिधानरामपनजाना॥ सियहिविलोकितकैउधनुकैसे॥ चितवगरुडलघुव्यालहिजैसे॥ दो॥ लषनलषेउरघुवंसमनिताकेउहरकोदंड॥ पुलक
गातवोलेवचनचरनचापब्रह्मंड॥ चौ॥ दिसिकुंजरकमठअहिकोला॥ धरहुधरनिधरिधीरनडोला॥ रामचहैंशंकरधनुतोरा॥ होहुसजगसुनिआयसु
समोरा॥ चापसमीपरामजवआये॥ नरनारिन्हसुरसुकृतमनाये॥ सवकरसंसयअरुअज्ञानू॥ मंदमहीपनकरिअभिमानू॥ भृगुपतिकेरिगर्वगरु
आई॥ सुरमुनिवरन्हकेरिकदराई॥ सियकरसोचजनकपछितावा॥ रानिन्हकरदारुनदुखपावा॥ शंभुचापवडवोहितपाई॥ चढेजायसवसंगव
५ तनमनवचनमोरपनसाचा॥ रघुपतिपदसरोजचितराचा॥ तौभगवानसकलउरवासी = हूटि ५

नाई॥ रामबाहुबलसिंधुअपारू॥ गाचहपारनकोउकडहारू॥ दो॥ रामबिलोकेलोगसबचित्रलिषेसेदेषि॥ चितईसीयकृपायतनजानीबिकलबि
शेष॥ चौ॥ देषीबिपुलबिकलवैदेही॥ निमिषबिहातकलपसमतेही॥ तृषितवारिबिनजोतनत्यागा॥ मुएकरैकासुधातडागा॥ कावरषासबकृषीसु
कानै॥ समयचुकेपुनिकापछिताने॥ असेजीयजानजानकीदेषी॥ प्रभुपुलकेलषिप्रीतिविशेषी॥ गुरुहिप्रनामनहिमनकीना॥ अतिलाघवउ
ठायधनुलीना॥ दमक्योदामिनिजिमिजबलयेउ॥ पुनिनभधनुमंडलसमभयेउ॥ लेतचढावतषैचतगाढे॥ काहुनलषादेषिसबठाढे॥ तिहिछिन
राममध्यधनुतोरा॥ भरेभुवनिधुनिघोरकठोरा॥ छं॥ भरेभुवनघोरकठोररविरथबाजितजिमारगकचले॥ चिक्करहिंदिगाजडोलमहिकालकूरमलल
कलमले॥ सुरअसुरमुनिकरकानदीनैसकलबिचारही॥ कोदंडखंडेउरामतुलसीजयतिवचनउचारही॥ सो॥ शंकरचापजिहाजसागररघु
बरबाहुबल॥ बुडेसोसकलसमाजचढेजुप्रथममहिमोहबस॥ चौ॥ प्रभुदोउचापखंडिमहिडारे॥ देषिलोगसबभयेसुखारे॥ कौशिकरूपयोनि
धिपावन॥ प्रेमवारिअवगाहसुहावन॥ रामरूपराकेशनिहारी॥ बढतबीचिपुलकावलिभारी॥ बाजेनभगहगहेनिसाना॥ देवबधूनाचहिंकरगा
ना॥ ब्रह्मादिकसुरसिद्धमुनीशा॥ प्रभुप्रहिप्रसंसहिदेहिअसीसा॥ बरसहुसुमनरंगबहुमाला॥ गावहिंकिन्नरगीतरसाला॥ रहीभुवनभरिजय
जयबानी॥ धनुषभंगधुनिजातनजानी॥ मुदितकहैजहतहनरनारी॥ भंज्योरामशंभुधनुभारी॥ दो॥ बंदीमागधसूतगनबिरदबदहिमतिधीर॥ कर
हिनिछावरिलोगसबहयगयधनमनचीर॥ चौ॥ झांझमृदंगशंखसहनाई॥ भेरिढोलदुंदुभीसुहाई॥ बाजेबहुबाजनेसुहाये॥ जहतहजुवतिन्हमंग

लगाये॥ सखीसहिततहरषहिअतिरानी॥ सूषतधानपराजनुपानी॥ जनकलत्योसुखसोचविहाइ॥ पैरतथकेथाहजनुपाई॥ श्रीहतभयेभूपधनुटूटे॥ जैसेदिवसदीपछविछूटे॥ सीयसुखहिवरनियकिहिभाती॥ जिमिचातककीपाईजलस्वाती॥ रामहिलषनविलोकतकैसे॥ शशहिचकोरकिशोरकजैसे॥ शतानंदतवआयसदीना॥ सीतागमनरामहितकीना॥ दो॥ संगसखीसुंदरचतुरगवहिमंगलचार॥ गवनीवालमरालगतिसुखमाअंगअपार॥ चौ॥ सखिनमध्यसियसोहतकैसी॥ छविगनमध्यमहाछविजैसी॥ करसरोजजयमालसुहाइ॥ विश्वविनयसोभाजिहिछाई॥ तनसकोचमनपरमउछाहू॥ गूढप्रेमलखिपरैनकाहू॥ जायसमीपरामछविदेषी॥ रहीजनुकुवरचित्रअवरेषी॥ चतुरसखीलखिकहाबुझाई॥ पहिरावहिजयमालसुहाई॥
ज सुनतयुगलकरमालउठाई॥ प्रेमविवसपहिरावनजाई॥ सोहतजनुजुगजलजसनाला॥ शशिहिसभीदेतजयमाला॥ गावहिछविअवलोकिसहेली॥ सियजयमालउरमेली॥ सो॥ रघुवरउरजयमालदेषिदेववरषहिसुमन॥ सकुचेसकलभुवालजनुविलोकिरविकुमदगन॥ चौ॥ पुरअरुव्योमवाजनेवाजे॥ खलभयेमलिनसाधुसवराजे॥ सुरकिन्नरनरनागमुनीशा॥ जयजयजयकहिदेहिअसीसा॥ नाचहिगावहिविवुधवधूटी॥ वारवारकुसुमांजुलछूटी॥ जहतहविप्रवेदधुनकरही॥ वंदीविरदावलउच्चरही॥ महिपातालनाकजसव्यापा॥ रामवरीसियभंजेउचापा॥ करहिआरतीपुरनरनारी॥ देहिनिछावरिवित्तविसारी॥ सोहतिसीयरामकीजोरी॥ छविसिंगारमनहुइकठोरी॥ सखीकहैप्रभुपदगहुसीता॥ करतिनचरनपरसअतिभीता॥ दो॥ गौतमतियगतिसुरतिकरिनहिपरसतपदपानि॥ मनविहसेरघुवंशमनिप्रीतिअलौकिकजानि॥ चौ॥ तवसियदेषिभूपअभिलाषे॥ कूरकपूतमूढमन

वा॰कां माषे॥अतिउतिपहरिसनाहअभागे॥जहतहगालवजावनलागे॥लेहुछुडायसीयकहकोऊ॥धरिमारहुन्रपबालकदोऊ॥तोरेधनुषचाडनहि
६२ सरई॥जीवतिहमहिकुवरिकोवरई॥जौविदेहकछुकरैसहाई॥जीतहुसमरसहितदोउभाई॥साधभूपवोलेसुनिवानी॥राजसमाजहिलाजलजानी॥व
लप्रतापवीरतावडाई॥नाकपिनाकहिसंगसिधाई॥सोयसुरताकिअवकहुपाई॥असिवुधितौविधिमहुमसिलाइ॥दो॥देषहुरामहिनयनभरितज
इरषामदमोह॥लषनरोषपावकप्रवलजानिसलभजिनिहोहु॥चौ॥वैनतेयवलिचहजिमिकागू॥जिमिशशचहैनागअहिभागू॥जिमिचहैकुशलअका
रनकोही॥सुखसंपदाचहैशिवद्रोही॥लोभलोलकलकीरतिचहई॥अकलंकिताकिकामीलहई॥हरिपदविमुखपरमगतिचाहा॥तसतुह्मारलालचनरनाहा
कोलाहलसुनिसीयसकानी॥सखीलवाइगईजहरानी॥रामसुभाइचलेगुरुपाही॥सियसनेहवरनतमनमाही॥रानिन्हसहितसोचवससीया॥अवधौवि
धिहिकाहकरनीया॥भूपवचनसुनिइतउततकही॥लषनरामडरवोलिनसकही॥दो॥अरुननयनभ्रकुटीकुटिलचितवतन्रपनिसकोप॥मनहुमत्त
गजगननिरषिसिंहाकिशोरहिचोप॥चौ॥षरभरदेषिविकलपुरनारी॥सवमिलिदेहिमहीपनगारी॥तिहिअवसरसुनिशिवधनुभंगा॥आयेभ्रगुकुल राम
कमलपतंगा॥देषिमहीपसकलसकुचाने॥वाजझपटजनुलवालुकाने॥गौरसरीरभूतिभलभ्राजा॥भालविशालत्रिपुंडविराजा॥सीसजटाशशिवदनसु ६२
हावा॥रिसवसकछुकअरुनहोइआवा॥भ्रकुटीकुटिलनयनरिसराते॥सहजहुचितवतमनहुरिसाते॥वृषभकंधउरवाहुविशाला॥चारुजनेउमालम्रग
छाला॥कटिमुनिवसनतूनदोइवांधे॥धनुसरकरकुठारकलकांधे॥दो॥शांतवेषकरनीकठिनवरनिनजायसरूप॥धरिमुनितनजनुवीररसआएजहसव

वन्हप ॥चौ॥ देषतभृगुपतिवेषकराला ॥ उठेसकलभयविकलभुवाला ॥ पितुसमेतकहिकहिनिजनामा ॥ लगेकरनसवदंडप्रनामा ॥ जिहिसुभाइ
चितवेहितजानी ॥ सोजानैजनुआयुषुटानी ॥ जनकवहुरिआयसिरनावा ॥ सीयवुलाइप्रनामकरावा ॥ आसिषदीन्हसखीहरषानी ॥ निजुसमाजलै
गईसयानी ॥ विस्वामित्रमिलेपुनिआई ॥ पदसरोजमेलेदोउभाई ॥ रामलषनदशरथकेढोटा ॥ दीन्हअसीसदेषिभलजोटा ॥ रामहिचितैरहेथकिलोचन ॥
रूपअपारमारपदमोचन ॥दो॥ वहुरिविलोकिविदेहसनकह्योकाहिअतिभीर ॥ पूछतजानअजानजिमव्यापोकोपशरीर ॥चौ॥ समाचारकहिज
नकसुहाये ॥ जिहिकारनमहीपसवआये ॥ सुनतवचनफिरअनतनिहारे ॥ देषेचापखंडमहिडारे ॥ अतिरिसवोलेवचनकठोरा ॥ कहुजड
जनकधनुषकिनतोरा ॥ वेगिदिषावमूढमतआजू ॥ उलटौमहिजहलगतवराजू ॥ अतिडरउतरदेतनृपनाही ॥ कुटिलभूपहरषेमनमा(
ही ॥ सुरमुनिनागनगरनरनारी ॥ सोचहिसकलत्रासउरभारी ॥ मनपछितातसीयमहितारी ॥ विधिअवसगरीवातविगारी ॥ भृगुपतिकर
सुभावसुनिसीता ॥ अरधनिमेषकलपसमवीता ॥दो॥ सभयविलोकेलोगसवजानिजानकीभीर ॥ हृदयनहरषविषादकछुवोलेश्रीरघु
वीर ॥चौ॥ नाथशंभुधनुभंजनहारा ॥ होइहिकोउएकदासतुम्हारा ॥ आयसकाहकहियकिनमोही ॥ सुनिरिसायवोलेमृदुकोही ॥ से
वकसोजोकरैसेवकाई ॥ अरिकरनीकरिकरैलराई ॥ सुनहुरामजिहिशिवधनुतोरा ॥ सहसवाहुसमसोरिपुमोरा ॥ सोविलगाउविहा
यसमाजा ॥ नतमारेजैहैंसवराजा ॥ सुनिमुनिवचनलषनमुसकानै ॥ वोलेपरसुधरहिअवमाने ॥ वहुधनुहीतोरीलरिकाई ॥ कवहुनतुमरि

वा०का० कीन्हगुसाई ॥ एहिधनुपरममताकेहिहेतू ॥ मुनिरिसायकहैभृगुकुलकेतू ॥ दो ॥ रेन्रपवालककालवसवोलततोहिनसभार ॥ धनु
६३ हीसुमत्रिपुरारिधनुविदितसकलसंसार ॥ चौ ॥ लषनकहाहसिहमरेजाना ॥ सुनहुनाथसवधनुषसमाना ॥ काछतिलाभजूनधनुतो
रे ॥ देषरामनयेकेभोरे ॥ छुवतटूटिरघुपतिहिनदोसू ॥ मुनिविनकाजकरिअकतरोसू ॥ वोलेचितैपरसुकीवोरा ॥ रेसठसुनैसुभावनमोरा
वालकवोलवधौनहितोही ॥ केवलमुनिजडजानहिमोही ॥ वालकब्रह्मचारीअतिकोही ॥ विस्वविदितछत्रीकुलद्रोही ॥ भुजवलभूमिभूपविन
कीनी ॥ विपुलवारमहिदेवनदीनी ॥ सहसवाहुभुजछेदनहारा ॥ परसविलोकिमहीपकुमारा ॥ दो ॥ मातपितहिजिनिसोचवसकरहिमही
पकिशोर ॥ गर्भनकेअर्भकदलनपरसघोरअतिमोर ॥ चौ ॥ विहसिलषनवोलेमृदुवानी ॥ अहोमुनीसमहाभटमानी ॥ पुनिपुनिमोहि
दिषावकुठारू ॥ चहतउडावनफूकपहारू ॥ इहाकुम्हडवतियाकोउनाही ॥ जेतरजनीदेषिमरजाही ॥ देषिकुठारसरासनवाना ॥ मैकछुकहा
सहितअभिमाना ॥ भृगुकुलसमझिजनेउविलोकी ॥ जोकछुकहौसहौरिसरोकी ॥ सुरमहिसुरहरिजनअरुगाइ ॥ हमरेकुलइनपरनव राम
साई ॥ वधेपापअपकीरतिहारे ॥ मारतहूपापरिअतुह्मारे ॥ कोटिकुलिससमवचनतुह्मारे ॥ व्यर्थधरहुधनुवानकुठारे ॥ दो ॥ जोविलोकिअनु ६३
चितकहेउछमहामहामुनिधीर ॥ सुनिसरोषभृगुवंसमनिवोलेगिरागंभीर ॥ चौ ॥ कोशिकसुनहुमंदयहवालक ॥ कुटिलकालवसनिजकु
लघालक ॥ भानुवंशराकेशकलंकू ॥ निपटनिरंकसअवुधअसंकू ॥ कालकवलहोइहिछिनमाही ॥ कहौपुकारिषोरिमोहिनाही ॥ तुमह

टकोजोचहेहोउवारा ॥ कहप्रतापवलरोषहमारा ॥ लषनकहामुनिसुजसतुह्मारा ॥ तुह्मैअछतकोवरनैपारा ॥ अपनैमुखतुमअपनीकरनी
वारअनेकभातिवहुवरनी ॥ नहिसंतोषतौपुनिकछुकहहू ॥ जिनिरिससरोकदुसहदुखसहहू ॥ बीरव्रतीतुमधीरअछोभा ॥ गारीदेतनपावोसो
भा ॥ दो ॥ सूरसमरकरनीकरैंकहिनजनावहिआप ॥ विद्यमाननरनपाइरिपुकायरकरहिप्रलाप ॥ चौ ॥ तुमतौकालहाकजनुलावा ॥ वारवारमो
हिलागवुलावा ॥ सुनतलषनकेवचनकठोरा ॥ परससुधारिधरेउकरघोरा ॥ अवजिनदेहुदोसमोहिलोगू ॥ कटुवादीवालकवधजोगू ॥ वालवि
लोकिवहुतमैवाचा ॥ अवयहुमरनहारभासाचा ॥ कौशिककहाछमियअपराधू ॥ वालदोषगुनगनहिनसाधू ॥ करकुठारमैअकरुनकोही ॥ आ
गैअपराधीगुरुद्रोही ॥ उत्तरदेतछोडौविनमारे ॥ केवलकौशिकसीलतुह्मारे ॥ नतएहिकाटिकुठारकठोरे ॥ गुरुहिउरिनहोतेउंश्रमथोरे ॥ दो ॥ ग
गाधिसुवनकहहृदयहसिमुनिहिहरियरैसूझ ॥ अयमयषाडउनऊषमयअजहुनवूझअवूझ ॥ चौ ॥ कहेउलषनमुनिसीलतुह्मारा ॥ को
नहिजानविदितसंसारा ॥ मातापितहिउरिनभयेनीके ॥ गुरुरिनरहासोचवडजीके ॥ सोजनुहमरेमाथेकाढा ॥ दिनचलिगयेव्याजवहुवाढा
अवआनिअविवहरियेवोली ॥ तुरतदेउंमैथैलीषोली ॥ सुनिकटुवचनकुठारसुधारा ॥ हहहायसवसभापुकारा ॥ भृगुवरपरसुदिषावहुमोही ॥ वि
प्रविचारवचौन्रपद्रोही ॥ मिलेनकवहुसुभटरनगाढे ॥ द्विजदेवताघरहिकेवाढे ॥ अनुचितकहिसवलोगपुकारे ॥ रघुपतिसयनहिलषननिवारे
दो ॥ लषनउत्तरआहुतिसरसिभृगुवरकोपक्रसानु ॥ वढतदेषिजलसमवचनवोलेरघुकुलभानु ॥ चौ ॥ नाथकरहुवालकपरछोहू ॥ सूधदूधमुख

करयनकोऊ॥जोपैप्रभुप्रभावकछुजाना॥तौकिवराबरिकरैअयाना॥जोलरिकाकछुअचगरिकरई॥गुरुपितमातमोदमनभरई॥करियकृपासि
सुसेवकजानी॥तुमसमसीलधीरमुनिज्ञानी॥रामवचनसुनिकछुकजुडानै॥कहिकछुलषनवहुरिमुसकानै॥हसतदेषिनषसिषरिसव्यापी॥राम
तोरभ्राताबडपापी॥गौरसरीरस्याममनमाही॥कालकूटमुरवपयमुरवनाही॥सहजटेटअनुहरैनतोही॥नीचमीचसमदेषिनमोही॥दो॥लषन
कह्योहसिसुनिहिमुनिक्रोधपापकरमूल॥जिहिवसजनअनुचितकरहिविस्वगनहिप्रतकूल॥चौ॥मैतुम्हारअनुचरमुनिराया॥परिहरिकोपकरि
यअवदाया॥टूटचापनहिजुरैरिसानै॥वैठिअहोइहियाउपरानै॥जौअतिप्रियतौकरियउपाई॥जोरियकोउवडगुनीवुलाई॥वोलतलषनहिजनक
डराही॥मष्टकरहुअनुचितभलनाही॥घरथरकापहिपुरनरनारी॥छोटकुमारषोटअतिभारी॥भ्रगुपतिसुनिसुनिनिरभयवानी॥रिसतनजरैहो
इवलहानी॥वोलेरामहिदेइनिहोरा॥वचौविचारवंधलघुतोरा॥मनमलीनतनसुंवरकैसे॥विषरसभराकनकघटजैसे॥दो॥सुनिलषमनविह
सेवहुरिनयनतरेरेराम॥गुरुसमीपगवनेसकुचिपरहरिवानीवाम॥चौ॥अतिविनतीम्रदुसीतलवानी॥वोलेरामजोरिजुगपानी॥सुनहुनाथतुम
परमसुजाना॥वालकवचनकरयनहिकाना॥वररैवालकएकसुभाऊ॥इन्हैनविदुषविदुषहिकाऊ॥तिहिनाहीकछुकाजविगारा॥अपराधीमैनाथतुम्हारा
क्रपाकोपवधवंधगुसांई॥मोपरिकरियदासकीनाई॥कहियवेगिजिमिविधिरिसजाई॥मुनिनायकसोकरौउपाई॥कहिमुनिरामजायरिसकैसै॥अजौअ
नुजतवचितवअनैसे॥इहिकेकंठकुठारनदीना॥तौमैकहाकोपकरिकीना॥दो॥गरभस्रवहिअवहियरवनसुनकुठारगतघोर॥परसअछितदेषौजियतवे

रीभृपकिशोर ॥चौ॥ वहैंनहायदहैरिसछाती ॥ भाकुठारकुंठितनृपघाती ॥ भयोवामविधिफिरयो सुभाऊ ॥ मोरेहृदयदयाकसकाऊ ॥ आजदइवदु
खदुसहसहावा ॥ सुनिसौमित्रविहसिसिरनावा ॥ वाउकृपामूरतिअनुकूला ॥ वोलतवचनझरतजनुफूला ॥ जोपैकृपाजरहिमुनिगाता ॥ क्रोधभये
तनराषविधाता ॥ देषजनकहठवालकएहू ॥ कीन्हचहतजडयमपुरगेहू ॥ वेगिकरौकिनआषिनओटा ॥ देषतछोटषोटनृपढोटा ॥ विहसेलषन
कहीमनमाही ॥ मूदेआषिकतहुकोउनाही ॥दो॥ परसरामतवरामप्रतिवोलेउरअतिक्रोध ॥ शंभुशराशनतोरसठकरसिहमारप्रवोध ॥चौ॥ वंधु
कहैकटुसंमततोरै ॥ तूछलविनयकरसिकरजोरै ॥ करपरितोषमोरसंग्रामा ॥ नाहितछाडिकहाउवरामा ॥ छलतजिकरहिसमरशिवद्रोही ॥ वंधुस
हितनतमारौतोही ॥ भृगुपतिवकहिकुठारउठाये ॥ मनमुसकाहिरामसिरनाये ॥ गुनहलषनकरहमपररोषू ॥ कतहुसुधाइहुतेवडदोषू ॥ टेढजानिसं
कासवकाहू ॥ वक्रचंद्रमाग्रसैनराहू ॥ रामकह्योरिसतजिअमुनीसा ॥ करकुठारआगेयहसीसा ॥ जिहिरिसजायकरियसोइस्वामी ॥ मोहिजानिआप
नअनुगामी ॥दो॥ प्रभुहिसेवकहिसमरकसतजौविप्रवररोष ॥ वेषविलोकेकहतकछुवालकहूनहिदोष ॥चौ॥ देषिकुठारवानधनुधारी ॥ भईलरिकहिरि
सवीरविचारी ॥ नामजानिपैतुमहिनचीन्हा ॥ वंशसुभाइउतरतिहिदीन्हा ॥ जोतुमअवतेमुनकीनाई ॥ पदरजसिसुसिरथरतगुसांई ॥ छमहुचूकअनजा
नतकेरी ॥ चहियेविप्रउरकृपाघनेरी ॥ हमैतुमैसरिवरिकसनाथा ॥ कहोनकहाचरनकहामाथा ॥ राममात्रलघुनामहमारा ॥ परससहितवडना
मतुह्मारा ॥ देवएकगुनधनुषहमारै ॥ नवगुनपरमपुनीततुह्मारै ॥ सवप्रकारहमतुमसनहारे छमहुविप्रअपराधहमारे ॥दो॥ वारवारमुनिविप्रव

वा॰ का रकहारामसनराम॥ वोलेभृगुपतिसरुषहरितह्नूं वंधसमवाम॥चौ॥ निपटहिद्विजकरिजानहिमोही॥ मैजसविप्रसुनाउतोही॥ चापस्रुववासरआ
६५ हुतिजानू॥ कोपमोरअतिघोरकृशानू॥ समधिसेनचतुरंगसुहाई॥ महामहीपभयेपसुआई॥ मैइहिपरसकाटिवलिदीन्हे॥ समरयज्ञजगकोटिककी
न्हे॥ मोरप्रभाउविदितनहितोरे॥ वोलसिनिदरिविप्रकेभोरे॥ भंज्योचापदापवडवाढा॥ अहमितमनहुजीतिजगठाढा॥ रामकहामुनिकह्नविचारी
रिसअतिवडलघुचूककहमारी॥ छुवतहिटूटपिनाकपुराना॥ मैकिहिहेतकरौअभिमाना॥दो॥ जोहमनिदरहिविप्रवदिसत्यसुनहुभृगुनाथ॥ तौअस
कोजगसुभटजिहिभयवसनावहिमाथ॥चौ॥ देवदनुजभूपतिभटनाना॥ समवलअधिकहोउवलवाना॥ जोरनहमहिपचारैकोऊ॥ लरैसुखेनकाल
किनहोऊ॥ छत्रीतनधरिसमरसकाना॥ कुलकलंकतिहिपवहिजाना॥ कहौसुभावनकुलहिप्रसंसी॥ कालहुडरहिनरनरघुवंशी॥ विप्रवंशकी
असप्रभुताई॥ अभयहोइजोतुह्मैडराही॥ सुनिमृदुवचनगूढरघुवरकै॥ उघरेपटलपरसधरमतिकै॥ रामरमापतिकरधनुलेहु॥ षैचहुमिटैमोरसंदेहू॥
देतचापआपहिचलिगयेउ॥ परसरामसनविस्मयभयेउ॥दो॥ जानारामप्रभावतवपुलकप्रफुल्लितगात॥ जोरिपानिवोलेवचनहृदयनप्रेमसमात राम
चौ॥ जयरघुवंशवनजवनभानू॥ गहनदनुजकुलदहनकृशानू॥ जयसुरधेनुविप्रहितकारी॥ जयमदमोहकोहभ्रमहारी॥ विनयसीलकरुनागुण ६५
नसागर॥ जयतिवचनरचनाअतिनागर॥ सेवकसुखदसुभगसवअंगा॥ जयशरीरछविकोटिअनंगा॥ करौकहामुखएकप्रसंसा॥ जयमहेश
मनमानसहंसा॥ अनुचितवहौतकह्योअजाना॥ छमहुछमामंदरदोउभ्राता॥ कहिजयजयजयरघुकुलकेतू॥ भृगुपतिवनहिगयेउतपहेतू॥

अपभय कुटिल महीप डराने ॥ अमित प्रताप देष सकुचाने ॥ दो॥ देवन दीन्ही दुंदभी प्रभु पर वरषहि फूल ॥ हरषे पुर नर नारि सब मिटी मोह मय सूल ॥ चौ॥
अति गहगहे वाजने वाजे ॥ सबहि मनोहर मंगल साजे ॥ जूथ जूथ मिलि सुमुख सुनैनी ॥ करहि गान कल कोकिल वैनी ॥ सुख विदेह कर वरनि न जा
ई ॥ जनम दरिद्र मनो निधि पाई ॥ विगत त्रास भई सीय सुखारी ॥ जनु विधु उदय चकोर कुमारी ॥ जनक कीन्ह कौशिक प्रनामा ॥ प्रभु प्रसाद धनु
भंज्यो रामा ॥ मोहि कृतकृत्य कीन्ह दोउ भाई ॥ अव जो उचित सो कहिय गुसाई ॥ कहि मुनि सुनि नरनाथ प्रवीना ॥ रहा विवाह चाप आधीना ॥ टूटत ही ध
नु भयो विवाहू ॥ सुर नर नाग विदित सब काहू ॥ दो॥ तदपि जाय तुम करो अव यथा वंस व्यवहार ॥ पूछि विप्र कुल वृद्ध गुरु वेद विदित आचार ॥ चौ॥ दू
त अवधपुर पठवो जाई ॥ आनहि नृप दशरथ बुलाई ॥ मुदित राउ कहि भलहि कृपाला ॥ पठये दूत वोलि तिहि काला ॥ वहुरि महाजन सकल वुलाए ॥ आ
ई सब सादर सिर नाए ॥ हाट वाट मंदिर सुरवासा ॥ नगर सवारहु चारिहु पासा ॥ हरष चले निज निज ग्रह आए ॥ पुनि परिचारिक वोल पठाए ॥ रचहु विचि
त्र वितान वनाई ॥ सिर धरि वचन चले सचु पाई ॥ पठये वोलि गुनी तिन नाना ॥ जे वितान विधि सकल सुजाना ॥ विधिहि वंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा ॥ विरचे कनक
कदलि के षंभा ॥ दो॥ हरित मनिन के पत्र फल पदमराग के फूल ॥ रचना देषि विचित्र अति मन विरंचि कर भूल ॥ चौ॥ वेन हरित मनिमय सब कीन्हे ॥ (
सरल परव परपरहि न चीन्हे ॥ कनक कलित अहिवेलि वनाइ ॥ लषि नहि परै सपरन सुहाई ॥ तिहि के रचि पचि वंध वनाए ॥ विच विच मुक्ता दाम सुहाए ॥ मा
निक मरकत कुलिस पिरोजा ॥ चीरि कोरि पचि रचे सरोजा ॥ किये भृंग वहु रंग विहंगा ॥ गुंजहि कूजहि पवन प्रसंगा ॥ सुर प्रतिमा षंभनि गढि काढी ॥ मंगल (

वा॰का॰ ड्ब्यालियेसबवाढी ॥ चौकैंभांतिअनेकपुराये ॥ सिंधरमनिमयसहजसुहाये ॥ दो ॥ सौरभपल्लवसुभगसुटिकियेनीलमनिकोरि ॥ हेमचौरम
६६ रकतधवरिल्लसतपाटमयडोरि ॥ चौ ॥ रचेरुचिरवरवंदनवारे ॥ मनोमनोभवफंदसवारे ॥ मंगलकलसअनेकवनाए ॥ ध्वजपताकपटचमरसुहाए
दीपमनोहरमनमयनाना ॥ जाइनवरनिविचित्रविताना ॥ जिहिमंडपदुलहिवेदेही ॥ सोवरनैअसमतिकविकेही ॥ दूलहरामरूपगुनसागर ॥ सोवितान
तिहुलोकउजागर ॥ जनकभवनकीसोभाजैसी ॥ ग्रहग्रहप्रतिपुरदेषियतैसी ॥ जिहितिरहुतितिहिसमयनिहारी ॥ तिहिलघुलगेभुवनदशचारी ॥ यो
संपदानीचग्रहसोहा ॥ सोविलोकिसुरनाइकमोहा ॥ दो ॥ वसैनगरजिहिलछ्छिकरकपटनारिवरवेष ॥ तिहिपुरकीसोभाकहतसकुचहिसारदसेष ॥
चौ ॥ पहुचेदूतरामपुरपावन ॥ हरषेनगरविलोकिसुहावन ॥ भूपद्वारितिन्हषवरिजनाई ॥ दशरथन्रपसुनिलियेवुलाई ॥ करिप्रनामतिन्हपातीदी
न्ही ॥ मुदितमहीपआपउठिलीन्ही ॥ वारिविलोचनवाचतपाती ॥ पुलकगातभरिआईछाती ॥ रामलषनउरकरवरचीठी ॥ रहिगयेकहतनषाटीमी
ठी ॥ पुनिधरिधीरपत्रिकावांची ॥ हरषीसभावातसुनिसांची ॥ षेलततरहेतहासुधिपाई ॥ आएभरतसहितहितभाई ॥ पूछतअतिसनेहसकुचाई ॥ राम
तातकहांतेपातीआई ॥ दो ॥ कुशलप्रानप्रियवंधदोउअहहिकहोकिहिदेस ॥ सुनिसनेहसोनैंवचनवांचीवहुरनरेस ॥ चौ ॥ सुनिपातीपुलकेदो ६६
उभ्राता ॥ अधिकसनेहसमातनगाता ॥ प्रीतिपुनीतभरतकैदेषी ॥ सकलसभासुखलह्योविशेषी ॥ तवन्रपदूतिनिकटवैठारे ॥ मधुरमनोहरवचनउ
चारे ॥ भय्याकहौकुशलदोउवारे ॥ तुमनीकैनिजनयननिहारे ॥ स्यामलगौरधरेधनुभाथा ॥ वयकिशोरकौशिकमुनिसाथा ॥ पहचानौतुमक

हौसुभाऊ॥ प्रेमविवस पुनिपुनिकहराऊ॥ जादिनतेमुनिगयेलवाई॥ तवतेआजसाचसुधपाई॥ केहोविदेहकवनविधिजानै॥ सुनिप्रियवचनद्रूतमु
सकानै॥ दो॥ सुनौमहीपतिमुकटमणितुमसमधन्यनकोउ॥ रामलषनजाकेतनयविश्वविभूषनदोउ॥ चौ॥ पूछनजोगननतनयतुम्हारे॥ पुरुषसिं
हतिहुपुरउजियारे॥ जिनकेजसप्रतापकेआगे॥ शशिमलीनरविशीतललागे॥ तिन्हकौकहिअनाथकिमचीन्हे॥ देषियेरविकिदीपकरलीन्हे॥
सीयस्वयंवरभूपअनेका॥ सिमटेसुभटएकतेएका॥ शंभुशरासनकाहुनटारा॥ हारेसकलवीरवरआरा॥ तीनलोकमेयेभटमानी॥ सवकीसक
तिशंभुधनुभानी॥ सकैउठाइभुजासुसुमेरु॥ सोउहियहारगयोकरिफेरु॥ जिहिकौतिकशिवशैलउठावा॥ सोउतिहिसभापरामवुभावा॥ दो॥ तहा
रामरघुवंशमनिसुनिमहीमहिपाल॥ भंज्योचापप्रयासविनजिमिगजपंकजनाल॥ चौ॥ सुनिसरोषभृगुनायकआये॥ वहुतभांतितिन्हआंषिदि
षाये॥ देषिरामवलनिजुधनुदीना॥ करिवहुविनयगवनवनकीना॥ राजनरामअतुलवलजैसे॥ तेजनिधानलषनपुनितैसे॥ कंपहिभूपविलो
कनजाके॥ जिमिकरिहरिकिशोरकेताके॥ देवदेषितववालकदोऊ॥ अवनआषितरआवतकोऊ॥ दूतवचनरचनाप्रियलागी॥ प्रेमप्रतापवीररसपा
गी॥ सभासमेतराउअनुरागे॥ दूतनदेननिछावरलागे॥ कहिअनीतितेमूदहिकाना॥ धरमविचारसवहीसुखमाना॥ दो॥ तवउठिभूपवसिष्ठकौ
दीन्हपत्रिकाजाय॥ कथासुनाईगुरुहिसवसादरदूतवुलाय॥ चौ॥ सुनिवोलेगुरुअतिसुखपाई॥ पुण्यपुरुषकहुमहिसुखदाई॥ जिमिसरितासागरम
हुजाही॥ यद्यपिताहिकामनानाही॥ तिमिसुखसंपतिविनहिवुलाये॥ धरमशीलपैजाहिसुभाये॥ तुमगुरुविप्रधेनुसुरसेवी॥ तसपुनीतकौशल्यादे

बा॰का॰ वी॥ सुकृततुमसमानजगमाही॥ भयौनहैकोउहोननउन्नाही॥ तुमतेअधिकपुण्यवडकाके॥ राजनरामलषनसुतजाके॥ वीरविनीतिप्रेमव्रतधारी॥ गु
६७ नसागरवरवालकचारी॥ तुमकौसरवकालकल्याना॥ सजहुवरातवजाइनिसाना॥ चौ॥ चलौवेगिसुनिगुरुवचनभलहिनाथसिरनाई॥
नृपतिगवनैभवनतवदूतनवासदिवाइ॥ दो॥ राजासवरनवासवुलाई॥ जनकपत्रिकावाचिसुनाई॥ मुनिसंदेससकलहरषानी॥ अपरकथा
सवनृपवषानी॥ प्रेमप्रफुल्लितराजहिरानी॥ मनहुसिषिनिसुनिवारिदवानी॥ मुदितअसीसदेहगुरुनारी॥ अतिआनंदमगनमहिता-
री॥ लेहिपरसपरअतिप्रियपाती॥ हृदयलगाइजुडावहिछाती॥ रामलषनकीकीरतिकरनी॥ वारहिवारभूपवरवरनी॥ मुनिप्रसादक
हिद्वारसिधाए॥ रानिन्हतवमहिदेववुलाए॥ दियेदानआनंदसमेता॥ चलेविप्रवरआशिषदेता॥ सो॥ जाचकलियेहंकारदीनिनिछावरिकोटि
विधि॥ चिरुजीवहुसुतचारिचक्रवर्त्तिदशरत्थके॥ चौ॥ कहतचलेपहिरैपटनाना॥ हरषिहनेगहगहेनिसाना॥ समाचारसवलोगनपाये॥
लागेघरघरहोनवधाये॥ भवनचारुदसभराउछाहू॥ जनकसुतारघुवीरविवाहू॥ सुनिसुभकथालोगअनुरागे॥ सवग्रहगलीसवारनला राम
गे॥ यद्यपिअवधिसदैवसुहावनि॥ रामपुरीमंगलमयपावनि॥ तदपिप्रीतिकीरीतिसुहाई॥ मंगलरचनारुचिरवनाई॥ ध्वजपताकपटचामरचा ६७
रु॥ छावापरमविचित्रवजारु॥ कनककलसतोरनमनिजाला॥ हरददूवदधिअक्षतमाला॥ दो॥ मंगलमयनिजनिजभवनलोगनरचेवनाई॥ वी
थीसींचीचतुरसमचौकेचारुपुराइ॥ चौ॥ जहांतहांजूथनिमिलिभामिनि॥ सजिनवसप्तसकलदुतिदामिनि॥ विधुवदनीमृगसावकलोचनि॥ नि

जसत्रुपरतिमानविमोचनि॥गावहिमंगलमंजुलवानी॥सुनिकलरवकलकंठलजानी॥भूपभवनकिमजाइवषानी॥विश्वविमोहनरच्योविता
ना॥मंगलद्रव्यमनोहरनाना॥राजतवाजतविपुलनिसाना॥कितहुविरदवंदीउच्चरही॥कतहुवेदधनिभूसुरकरही॥गावहिसुंदरमंगलगीता॥लै
लैनामरामअरुसीता॥वहुतउछाहभवनअतिघोरा॥मानहुउमगिचलाचहुओरा॥दो॥सोभादशरथभवनकीकोकविवरनैपार॥जहासक
लसुरसीसमनिरामलीन्हअवतार॥चौ॥नृपभरतपुनिलियेवुलाई॥हयगयस्यंदनसाजहुजाई॥चलहुवेगिरघुवीरवराता॥सुनतपुलक
पूरेदोउभ्राता॥भरतसकलसाहनीवुलाये॥आयुसदीन्हमुदितउठिधाये॥रचिरुचिजीनतुरगतिनसाजे॥वरनवरनवरवाजिविराजे॥सुभग
सकलसुठिचंचलचरनी॥अयइवजरतधरतपगधरनी॥नानाजातनजाहिवषाने॥निदरिपवनजनुचहतउडाने॥तिन्हसवछैलभयेअसवारा॥भ
रतसरिससवराजकुमारा॥सवसुंदरसवभूषनधारी॥करसरचापतूनिकटिभारी॥दो॥छरेछवीलेछैलसवसूरसुजाननवीन॥जुगपदचरअसवा
रप्रतिजेअसुकलाप्रवीन॥चौ॥वांधेविरदवीररनगाढे॥निकसिभयेपुरवाहरठाढे॥फेरहिचतुरतुरगगतिनाना॥हरषसुनिसुनिपनवनिसाना
रथसारथिनविचित्रवनाये॥ध्वजपताकमनिभूषनलाये॥चवरचारुकिंकिनधनिकरही॥भानुजानुसोभाअपहरही॥सावकरनअगनितहय
होते॥तेतिन्हरथसारथिनजोते॥सुंदरसकलअलंकृतसोहे॥जिन्हैविलोकतमुनिमनमोहे॥जेजलचलहिथलहिकीनाइ॥टापनवूडवेगि
अधिकाई॥अस्त्रशस्त्रसवधरैवनाई॥रथीसारथिन्हलियेवुलाई॥दो॥चढिचढिरथवाहरनगरलागीजुरनवरात॥होतसगुनसुंदरसवहिजो

वा०का
६८

जिहिकारजजात॥चौ॥कलितकरिवरन्हपरीअंवारी॥कहिनजायजिहिभातिसवारी॥चलेमत्तगजघंटाविराजी॥मनहुसुभगसावनघनगाजी
वाहनअपरअनेकविधाना॥शिविकासुभगसुखासनजाना॥तिनचढिचलेविप्रवरवृंदा॥जनुतनधरेंसकलश्रुतिछंदा॥मागधसूतवं
दिगुनिगाइक॥चलेजानचढिजोजिहिलाइक॥वेसरऊटवृषभवहुभाती॥चलेवस्तुभरिअगनितभाती॥कोटिनकावरचलेकहारा॥विविधि
वस्तुकोवरनैपारा॥चलेसकलसेवकसमुदाई॥निजनिजसाजसमाजवनाई॥दो॥सवकेउरनिरभरहरषपूरतपुलकशरीर॥कवहिदेखिवे
नयनभरिरामलषनदोउवीर॥चौ॥गरजहिगजघंटाधुनिघोरा॥रथरववाजिहासचहुंओरा॥निदरिघनहिघुम्मरहिनिसाना॥निजपर
ईकछुसुनियनकाना॥महाभीरभूपतिकेद्वारे॥रजसमहोइपषानपवारे॥अटीअटारिन्हदेषहिनारी॥लियेआरतीमंगलथारी॥गावहिगीत
मनोहरनाना॥अतिआनंदनजायवषाना॥तवसुमंत्रदुइस्यंदनसाजी॥जोतेरविहयनिंदकवाजी॥दोउरथरुचिरभूपपहिआने॥नहिसार
दपहिजायवषानै॥राजसमाजएकरथसाजा॥दूसरतेजपुंजअतिभ्राजा॥दो॥तिहरथरुचिरवशिष्टकहुहरषिचढायनरेस॥आपच
ढेस्यंदनसुमरिहरिगुरगौरगनेस॥चौ॥सहितवशिष्टसोहनृपकैसे॥सुरगुरसहितपुरंदरजैसे॥करिकुलरीतिवेदविधिराऊ॥देषिसवहिसवभा राम ६८
तिवनाऊ॥सुमरिरामगुरुआयसपाई॥चलेमहीपतिशंखवजाई॥हरषेविवुधविलोकिवराता॥वरषैसुमनसुमंगलदाता॥भयोकोलाहलहयगय
गाजहि॥व्योमवरातवाजनेवाजहि॥सुरनरनारिसुमंगलगावई॥सरसरागवाजहिसहनाई॥घंटघंटिधुनिवरनिनजाई॥सरवकरहिपाइकफह

राई॥ करैविदूषककौतकनाना॥ हासकुशलकलगानसुजाना॥ दो॥ तुरगनचावहिकुवरवरअंकनिमृदंगनिसान॥ नागरनटचितवहि
चकितडिगहिनतालवधान॥ चौ॥ वनैनवरनतवनीवराता॥ होहिसगुनसुंदरसुभदाता॥ चाराचाषवामदिसिलेई॥ मनहुसकलमंगलकहिदेई॥ दा
हिनकागसुखेतसुहावा॥ नकुलदरससवकाहूपावा॥ सानकूलवहैत्रिविधिवयारी॥ सघटसवालआववरनारी॥ लोवाफिरिफिरिदरसर
दिषावा॥ सुरभीसनमुखसिसुहिपिवावा॥ मृगमालाफिरिदाहिनआई॥ मंगलगनजनुदीन्हदिषाई॥ छेमकरीकहछमाविशेषी॥ स्यामावामसु
तरूपरदेषी॥ सनमुखआएदधिअरुमीना॥ करपुस्तकदोइविप्रप्रवीना॥ दो॥ मंगलमयकल्यानमयअभिमतिफलदातार॥ जनुसवसांचेहो
नहितभएसगुनइकवार॥ दो॥ मंगलसगुनसुभगसवताके॥ सगुनब्रह्मसुंदरसुतजाके॥ रामसरससवरदुलहनिसीता॥ समधीदशरथजनकपु
नीता॥ सुनिअसव्याहसगुनसवसांचे॥ अवकीनेबिरंचिहमसाचे॥ इहिविधिकीन्हवरातपयाना॥ हयगयगाजेहनैनिसाना॥ आवतजानभानकु
लकेतू॥ सरतन्हजनकवधाएसेतू॥ वीचवीचवरवासवनाए॥ सुरपुरसरिससंपदाछाए॥ असनसयनवरवसनसुहाए॥ पावहिसवनिजनिजमनभा
ए॥ नितनूतनसुखलखिअनुकूले॥ सकलवरातनमंदरभूले॥ दो॥ आवतजानिवरातवरसुनिगहगहेनिसान॥ सजिगजरथपदचरतुरंगलैनच
लेअगवान॥ चौ॥ कुनककलसभरकोपरथारा॥ भाजनललितअनेकप्रकारा॥ भरेसुधासमसवपकवानै॥ भांतिभांतिनहिजायवषानै॥ फलअने
कवरवसतसुहाई॥ हरषिभेटहितभूपपठाई॥ भूषनवसनमहामनिनाना॥ षगमृगहयगयवहुविधिजाना॥ मंगलसगुनसुगंधसुहाये॥ वहु

बा०का० तभाँतिमहिपालपठाये॥दधिचौराउपहारअपारा॥भरिभरिकावरचलेकहारा॥अगवानन्हिजबदीषबराता॥उरआनंदपुलकभरगाता॥देषिबनाव

६९ सहितअगवाना॥मुदितबरातन्हहनेनिसाना॥चौ॥हरषपरसपरमिलन्हहितकछुकचलेबगामेल॥जनुआनंदसमुद्रदुइमिलतबिहायसुबेल॥

दो॥बरषसुमनसुरसुंदरगावहि॥मुदितदेवदुंदभीबजावहि॥बस्तसकलराषीन्हपआगे॥बिनयकीन्हतिन्हअतिअनुरागे॥प्रेमसमेतराउसबली

न्हा॥भइबकसीसजाचकन्हदीन्हा॥करिपूजामान्यताबडाई॥जनवासेकहुचलेलवाई॥बसनबिचित्रपाँवडेपरही॥न्पदशारथतापरपगधरही

देषिधनदमदपरहरहीं॥बरषिसुमनसुरजयजयकरही॥अतिसुंदरदीन्हेजनवासा॥जहसबकहसबभाँतिसुपासा॥जानीसियबरातपुरआई॥क

छुनिजमहिमाप्रगटजनाई॥हृदयसुमरसबसिद्धिबुलाई॥भूपपहुनईकरनपठाई॥दो॥सिधिसबसियआयुसअकनिगईजहाजनवास॥लिये

संपदासकलसुखसुरपुरभोगबिलास॥चौ॥निजनिजबासबिलोकिबराती॥सुरसुखसकलसुलभसबभाँती॥बिभवभेदकछुकोउनहिजाना॥

सकलजनककरकरहिबषाना॥सियमहिमारघुनाइकजानी॥हरषेहृदयप्रीतपहचानी॥पितुआगमनसुनतदोउभाई॥हृदयनअतिआनंदअ राम

माई॥सकुचिनेकहिनसकतगुरपाही॥पितदरसनलालचमनमाही॥बिस्वामित्रबिनयबडदेषी॥उपजाउरसंतोषबिसेषी॥हरषिबंधदोउहृदयलग ६९

गाये॥पुलकअंगअंबुकजलछाये॥चलेजहादशरथजनवासे॥मनोसरोवरतकेंपियासे॥दो॥भूपबिलोकेजबहिमुनिआवतसुतनसमेत॥उठेहर

षिसुखसिंधमेचलेथाहसीलेत॥चौ॥मुनिहिदंडवतकीन्हमहीसा॥बारबारपदरजधरिसीसा॥कौशिकराउलियेउरलाई॥कहिअसीसपूछीकुशला

ई॥पुनिदंडवतकरतदोउभाई॥देषनृपतिउरसुखनसमाई॥सुतउरलाइदुसहदुखमेटे॥मृतकशरीरप्राननजनुभेटे॥पुनिवशिष्टपदशिरतिन्हनाए॥प्रे
ममुदितमुनिवरउरलाए॥विप्रवृंदवंदेदुहुभाई॥मनभावतीअसीसैपाई॥भरतसहानुजकीन्हप्रनामा॥लियेउठाइलाइउररामा॥हरषेलषनदेषुदोउ
भ्राता॥मिलेप्रेमपरिपूरनगाता॥दो॥पुरजनपरजनजातिजनजाचकमंत्रीमीत॥मिलेयथाविधिसवहिप्रभुपरमकृपालविनीत॥चौ॥रामहिदेषिव
रातजुडानी॥प्रीतकीरीतनजाइवषानी॥नृपसमीपसोहहिसुतचारी॥जनुधनधर्मादिकतनुधारी॥सुतनसमेतदशरथहिदेषी॥मुदितनगरनरना
रिविशेषी॥सुमनवरषिसुरहनहिनिसाना॥नाकनटीनांचहिकरिगाना॥सतानंदअरुविप्रसचिवगन॥मागधसूतविदुखवंदीजन॥सहितवरा
तराउसनमाना॥आयुसमागिफिरेअगवाना॥प्रथमवरातलगनतेआई॥तातेपुरप्रमोदअधिकाई॥व्रह्मानंदलोगसवलहही॥दो॥रामसीयसो
भाअवधिसुकृतअवधिदोउराज॥जहतहपुरजनकहहिअसमिलिनरनारिसमाज॥चौ॥जनकसुकृतमूरतिवैदेही॥दशरथसुकृतरामधरि
देही॥इनसमकाहुनशिवआराधे॥काहुनइन्हसमानफललाधे॥इनसमकोउनभयोजगमाही॥हैनहिकेतहूहोनहूनाही॥हमसवसकल
सुकृतकीरासी॥भयेजगजनमजनकपुरवासी॥जिनजानकीराममछविदेषी॥कोसुकृतीहमसरिसविशेषी॥पुनदेषवरघुवीरविवाहू॥लेहुभ
लीविधिलोचनलाहू॥कहैपरसपरकोकिलवैनी॥इहिविवाहवडलाभसुनैनी॥वडेभागविधिवातवनाई॥नयनअतिथिहोइहिदोउभाई॥दो॥
वारहिवारसनेहवसजनकवुलाइहिसीय॥लेनआयहैवंधदोकोटिकामकमनीय॥चौ॥विविधिभांतिहोइहिपहुनाई॥प्रियनकाहिअससा

बा० का० सुरमाई ॥ तवतवरामलषनहिनिहारी ॥ होयसवैसुरलोगसुखारी ॥ सखिजसरामलषनकरजोटा ॥ तैसेइभूपसंगदोउढोटा ॥ स्यामगौरस
७० बअंगसुहाये ॥ तेसवकहैदेषिजेआये ॥ कहाएकमैआजनिहारे ॥ जनुविरंचिनिजुहाथसवारे ॥ भरतरामहीकीअनुहारी ॥ सहसालषिन
कहहिनरनारी ॥ लषनशत्रुसूदनइकरूपा ॥ नषसषतेसवअंगअनूपा ॥ मनभावहिमुखकहननजाही ॥ उपमाकोत्रिभुवनमैनाही ॥ छं
उपमानकोउकहदासतुलसीकतहुकविकोविदकहै ॥ वलविनयविद्यासीलसोभासिंधइन्हसेएइअहै ॥ पुरनारिसकलपसारिअंचलविधि
हिवचनसुवही ॥ व्याहियौचारिउभाईएहिपुरहमसुमंगलगावही ॥ सो ॥ कहैपरसपरनारिवारिविलोचनपुलकतन ॥ सखिसवकरवपुरारिपुन्यप
योनिधिभूपदोउ ॥ चौ ॥ इहिविधिसकलमनोरथकरही ॥ आनदउमगिउमगिउरभरही ॥ जेनृपसीयस्वयंवरआए ॥ देषिवंधसवहिनसुखपाए ॥
कहतरामजसविशदविशदविशाला ॥ निजनिजगेहगयेमहिपाला ॥ गयेवीतकछुदिनइहिभाती ॥ प्रमुदितपुरजनसकलवराती ॥ मंगलमूलल
गनदिनआवा ॥ हिमरितुअगहनमाससुहावा ॥ ग्रहतिथिनषतजोगवरवारू ॥ लगनसोधिविधिकीन्हविचारू ॥ पठैदीननारदसनसोई ॥ गुनीजनक राम
केगनकन्हजोई ॥ सुनीसकललोगनइहिवाता ॥ कहैजोतषीआहैविधाता ॥ दो ॥ धेनुधूरिवेलाविमलसकलसुमंगलमूल ॥ विप्रन्हकह्योविदेह ७०
मनजानिसगुनअनुकूल ॥ चौ ॥ उपरोहितहिकह्योनरनाहा ॥ अवविलंवकरकारनकाहा ॥ सतानंदतवसचिववुलाए ॥ मंगलसकलसाजिसवल्या
ए ॥ शंखनिसानवाजनवहुवाजे ॥ मंगलकलशसगुनसवसाजे ॥ सुभगसुआसिनिगावहिगीता ॥ करहिवेदधनुविप्रपुनीता ॥ लेनचलेसादरइहिभाती

गए जहा जनवासव राती॥ कौशलपति कर देषि समाजू॥ अति लघु लागति न्है सुरराजू॥ भयो समय अव धारिय पाऊ॥ इहि सुनि परानि सानन्नि याऊ॥
गुरुहि पूछि करि कुलविधि राजा॥ चले संग मुनि साधु समाजा॥ दो॥ भाग्य विभव अवधेस कर देषि देव ब्रह्मादि॥ लगे सराहन सहस मुख जानि जनम नि
जवादि॥ चौ॥ सुरन्ह सुमंगल अवसर जाना॥ वरषहि सुमन वजाइ निसाना॥ शिव ब्रह्मादिक विवुधव रूथा॥ चढे विमाननि नाना जूथा॥ प्रेम पुलक त
न हृदय उछाहू॥ चले विलोकन रामविवाहू॥ देषि जनकपुर सुर अनुरागे॥ निज निज लोक सव हि लघु लागे॥ चितहि चकित विचित्र विताना॥ र
चना सकल अलौकिक नाना॥ नगर नारि नर रूपनिधाना॥ सुघर सुधर्म सुसील सुजाना॥ तिन्है देषि सव सुर सुरनारी॥ भए नषत जनु विधु उ
जियारी॥ विधिहि भएउ आचरज विशेषी॥ निज करनी कछु कतहु न देषी॥ दो॥ शिव समुझाये देव सव जिन आचरज भुलाहु॥ हृदय विचारहु धीर
धरि सिय रघुवीर विवाहू॥ चौ॥ जिनकर नाम लेत जग माही॥ सकल अमंगल मूल नसाही॥ करतल होहि पदारथ चारी॥ तेइ सिय राम कह्यो का
मारी॥ इहि विधि संभु सुरन्ह समुझावा॥ पुनि आगे वरव सह चलावा॥ देवन्ह देषे दशरथ जाता॥ महामोद मन पुलकित गाता॥ साधु समाज संग महिदे
वा॥ जनु तनु धरे करहि सुर सेवा॥ सोहत साथ सुभग सुत चारी॥ जनु अपवर्ग सकल तनु धारी॥ मरकत कनक वरन वर जोरी॥ देषि सुरन भए प्रीति
न थोरी॥ पुनि रामहि विलोकि हिय हरषे॥ नृपहि सराहि सुमन वहु वरषे॥ दो॥ राम रूप नषसिष सुभग वारहि वार निहारि॥ पुलकगात लोचन सजल
उमा समेत पुरारि॥ ३४६॥ चौ॥ केकिकंठ दुति स्यामल अंगा॥ तडित विनिंदक वसन सुरंगा॥ व्याह विभूषन विविध वनाए॥ मंगलमय सव भांति सुहाए

वा॰का॰ सरदविमलविधुवदनसुहावन॥नयननवलराजीवलजावन॥सकलअलौकिकसुंदरताई॥कहीनजाइमनहींमनभाई॥बंधुमनोहरसोहहिं
७१ संगा॥जातनचावतचपलतुरंगा॥राजकुवरवरवाजनचावहि॥वंसप्रसंसकविरिदसुनावहि॥जेहितुरंगवररामविराजे॥गतिविलोकिषगनायकर
लाजे॥कहिनजाइसवभांतिसुहावा॥वाजिवेषजनुकामवनावा॥छं॥जनुवाजिवेषवनाइमनसिजरामहितअतिसोहइ॥आपनेवयवलरूपगु
नगतिसकलभुवनविमोहई॥जगमगतजीनजरायजोतिसोमोतिममिमानिकलगे॥किंकिनिललामलगामललितविलोकिसुरनरमुनिठ
गे॥दो॥प्रभुमनसहिलयलीनमनुचलतवाजिछविपाव॥भूषितउडगनतडितघनुजनुवरवरहिनचाव॥३४७॥चौ॥जेहिवरवाजिरामअसवारा॥
तेहिसारदउनवरनैपारा॥संकररामरूपअनुरागे॥नयनपंचदसअतिपियलागे॥हरिहितसहितरामजवजोहे॥रामसमेतरमापतिमोहे॥निरषि
रामछविविधिहरषाने॥आठैनयनजानिपछिताने॥सुरसेनयउरवहुतउछाहू॥विधितेवडअतिलोचनलाहू॥रामहिचितवसुरेससुजाना॥
गौतमश्रापपरमहितमाना॥देवसकलसुरपतिहिसिहाही॥आजुपुरंदरसमकोउनाहीं॥मुदितदेवगनरामहिदेषी॥नृपसमाजदुहुंहरषविशेषी॥ राम ७१
छं॥अतिहरषराजसमाजदुहुदिसिदुंदुभीवाजहिघनी॥वरषहिसुमनसुरहरषिकहिजयजयतिजयरघुकुलमनी॥एहिभांतिजानिवरातआव
तवाजनेवहुवाजहीं॥रानीसुआसिनिवोलिपरिछिनहेतुमंगलसाजहीं॥दो॥सजिआरतीअनेकविधिमंगलकलससवारि॥चलीमुदितपरिछ
नकरनगजगामिनिवरनारि॥चौ॥विधुवदनीमृगसावकलोचनि॥सवनिजतनछविरतिमदमोचन॥पहिरेवरनवरनवरचीरा॥सकलविभू

बनसजे सरीरा॥ सकलसुमंगलअंगबनाए॥ करहिगानकलकंठलजाए॥ कंकनकिंकिनिनूपुरबाजहि॥ चालविलोकहिकामगजलाजहि॥ बा
जहिबाजनविविधप्रकारा॥ नभअरुनगरसुमंगलचारा॥ सचीसारदारमाभवानी॥ जेसुरतीयसुचिसहजसयानी॥ कपटनारिवरवेषबनाई॥ मिली
सकलरनिवासहिजाइ॥ करहिंगानकलवानी॥ हरषविवससवकाहुनजानी॥ छं॥ कोजानकेहिआनंदवससवब्रह्मवरपरिछनचली॥ कलगा
नमधुरनिसानवरषहिसुमनसुरसोभाभली॥ आनंदकंदविलोकिदुलहसकलहियहरषितभई॥ अंभोजअंबकअंबुउमगिसुअंगपुलकावलि
छई॥ दो॥ जोसुखभासियमातुतनुदेषिरामवरवेषु॥ सोनसकहिंकहिकलपसतसहससारदासेष॥ चौ॥ नयननीरहटिमंगलजानी॥ परिछनकरहि
हिमुदितमनरानी॥ वेदविहितअरुकुलआचारु॥ कीन्हभलीविधिसवव्यवहारू॥ शंखसवदध्वनिमंगलगाना॥ पटपावडेपरहिविधिनाना॥ करि
आरतीअरघतिन्हदीन्हा॥ रामगवनमंडपतवकीन्हा॥ दशरथसहितसमाजविराजे॥ विभवविलोकिलोकपतिलाजे॥ समयसमयसुरवरष
हिफूला॥ सांतिपढहिमहिसुरअनुकूला॥ नभअरुनगरकोलाहलहोई॥ आपनपरकछुसुनैनकोई॥ एहिविधिराममंडपहिआए॥ अरघ
देइआसनबैठाए॥ छंद॥ बैठारिआसनआरतीकरिनिरषिवरुसचपावही॥ मनिवसनभूषभूरिवारहिनारिमंगलगावही॥ ब्रह्मादिसुरवरविप्रवे
षवनाइकौतुकदेषहि॥ दो॥ नाउवारीभाटनटराममनिछावरिपाइ॥ मुदितअसीसहिनाइसिरुहरषनहृदयसमाइ॥ ३५१॥ चौ॥ मिलेजनकदशरथ
अतिप्रीती॥ करिवैदिकलौकिकसवरीती॥ मिलतमहादोउराजविराजे॥ उपमाषोजिषोजिकविलाजे॥ लहीनकतहुहारहियमानी॥ इनसमयेउप ६

बा०का
७२

मा उर आनी॥ समधी देषि देव अनुरागे॥ सुमन बरषि जस गावन लागे॥ जग विरंचि उपजावा जब तै॥ देषे सुने व्याह बहु तब ते॥ सकल भाति सम
साज समाजू॥ सम समधी देषे हम आजू॥ देव गिरा सुनि सुंदर सांची॥ प्रीत अलौकिक दुहु दिसि मांची॥ देत पावडे अरघ सुहाये॥ सादर जनक मं
डपहि ल्याए॥ छं॥ मंडप विलोकि विचित्र रचना रुचिरता मुनि मन हरे॥ निज पानि जनक सुजान सब कहु आनि सिंहासन धरे॥ कुल इष्ट सरिस
वसिष्ट पूजे विनय करि आसिष लही॥ कौशिकहि पूजत परम प्रीति की रीति तौ न परै कही॥ दो॥ वामदेव आदिक रिषय पूजे मुदित महेस॥ दिए दि
व्य आसन सवहि सव सन लही असीस॥ चौ॥ वहुरि कीन्हि कौशलपति पूजा॥ जानि ईस सम भाव न दूजा॥ कीन्ह जोरि कर विनय वडाई॥ कहि निज
भाग्य विभव वहुताई॥ पूजे भूपति सकल वराती॥ समधी सम सादर सब भाती॥ आसन उचित दिए सब काहू॥ कहौ कहा मुख एक उछाहू॥ सकल
वरात जनक सनमानी॥ दान मान विनती वर वानी॥ विधि हरि हरु दिसिपति दिनराऊ॥ जे जानहि रघुवीर प्रभाऊ॥ कपट विप्र वर वेष वनाए
कौतुक देषहि अति सचु पाए॥ पूजे जनक देव सम जाने॥ दिये सुआसन विन पहिचाने॥ छं॥ पहिचान को केहि जान सवहि अपान सुधि भोरी भई
आनंद कंदु विलोकि दुलहु उभय दिसि आनंद मई॥ सुर लषे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दए॥ अवलोकि शील सुभाव प्रभु कौ विवुध मन राम
प्रमुदित भए॥ दो॥ रामचंद्र मुख चंद्र छवि लोचन चारु चकोर॥ करत पान सादर सकल प्रेम प्रमोद न थोर॥ चौ॥ समय विलोकि वशिष्ट वुलाए॥ साद ७२
र शतानंद मुनि आए॥ वेगि कुवरि अव आनहु जाई॥ चले मुदित मुनि आयस पाई॥ रानी सुनि उपरोहित वानी॥ प्रमुदित सषिन समेत सयानी॥ विप्र

वधूकुलवृद्धबुलाई॥करिकुलरीतिसुमंगलगाई॥नारिवेषजेसुरवरवामा॥सकलसुभायसुंदरीस्यामा॥तिन्हहिदेखिसुखपावहिनारी॥बिनपहिचान-
प्रानतेप्यारी॥वारवारसनमाननहिरानी॥उमारमासारदसमजानी॥सीयसवारिसमाजवनाई॥मुदितमंडपहिचलीलवाई॥छं॥चलीलवाइसीतहिस
खीसादरसजिसुमंगलभामिनी॥नवसतसाजेसुंदरीसवमत्तकुंजरगामिनी॥कलगानसुनिमुनिध्यानत्यागहिकामकोकिललाजही॥मंजीरनूपु
रकलितकंकनतालगतवरवाजही॥दो॥सोहतवनितावृंदमहुँसहजसुहावनसीय॥छविललनागनमध्यजनुसुखमातियकमनीय॥चौ॥सियसुं
दरतावरनिनजाइ॥लघुमतिबहुतमनोहरता॥आवतिदीषिवरातिन्हसीता॥रूपरासिसवभातिपुनीता॥सवहिमनहीमनकिएप्रनामा॥देखिराम-
भयेपूरनकामा॥हरषेदशरथसुतन्हसमेता॥कहिनजाइउरआनंदजेता॥सुरप्रनामकरिवरिसहिफूला॥मुनिअसीससुनिमंगलमूला॥गा
ननिसानकुलाहलभारी॥प्रेमप्रमोदमगननरनारी॥एहिविधिसीयमंडपहिआई॥प्रमुदितसंतपढहिमुनिराइ॥तिहिअवसरकरविधिव्य
वहारू॥दुहूकुलगुरुसवकीन्हअचारू॥छं॥आचारुकरिगुरुगौरिगनपतिमुदितविप्रपुजावही॥सुरप्रगटपूजालेहिदेहिअसीसअतिसुख
पावही॥मधुपर्कमंगलद्रव्यजोजिहिसमयमुनिमनमहुँचहै॥भरेकनककोपरकलससोसवलिएहिपरिचारकलहै॥कुलरीतिप्रीतिसमेतर
विकहिदेतसवसादरकिए॥एहिभांतिदेवपुजाइसीतहिसुभगसिंहासनदिए॥सियरामअवलोकनिपरसपरप्रेमकाहुनलखिपरै॥मनिबुद्धिवरवानी
अगोचरप्रगटकविकैसेकरै॥दो॥होमसमयतनुधरिअनलअतिसुखआहुतिलेहि॥विप्रवेषधरिवेदसवकहिकहिविवाहविधिदेहि॥चौ॥जन-

बा०कां कपाटमहिषीजगजानी॥सीयमातुकिमिजायबषानी॥सुजससुकृतसुखसुंदरताई॥सबसमेटिबिधिरचीबनाई॥समउजानिमुनिबरन्हबोलाई
७३ सुनतसुआसिनसादरल्याई॥जनकबामदिसिसोहसुनयना॥हिमगिरिसंगबनीजनुमयना॥कनककलशमनिकोपररूरे॥सुचिसुगंधमंगल
जलपूरे॥निजकरमुदितरायअरुरानी॥धरेरामकेआगेआनी॥पढहिवेदमुनिमंगलवानी॥गगनसुमनझरिअवसरजानी॥वरुविलोकिदंपति
अनुरागे॥पायपुनीतपषारनलागे॥छं॥लागेपषारनपायपंकजप्रेमतनपुलकावली॥नभनगरगाननिसानजयधुनिउमगिजनुचहुदिसिच
ली॥जोपदसरोजमनोजअरिउरसरसदैवविराजही॥जेसुकृतसुमरतविमलतामनसकलकलिमलभाजही॥जेपरसिमुनिवनतालहीगतिर
हीजोपातकमई॥मकरंदुजिन्हकोसंभुसिरसुचिताअवधिसुरबरनई॥करिमधुपमनमुनिजोगिजनजेसेइअभिमतगतिलहै॥जेपदपषार
तभागभाजनजनकजयजयसबकहै॥बरकुंअरिकरतलजोरिशाषोचारदोउकुलगुरुकरै॥भयोपानिग्रहनुबिलोकिबिधिसुरमनुजमुनि(
आनंदभरै॥सुखमूलदूलहदेषिदंपतिपुलकतनहुलस्योहियो॥करिलोककन्यादाननृपभूषनकियो॥हिमवंतजिमिगिरिजामहेशहिह
रिहिश्रीसागरदई॥तिमिजनकरामहिसियसमरपीविश्वकलकीरतिनई॥क्योकरैविनयविदेहुकियोविदेहमूरतिसांवरी॥करिहोमविधिवतगांठ राम
जोरिहोनलागीभावरी॥दो॥जयधुनिवंदीवेदधुनिमंगलगाननिसान॥सुनिहरषहिवरषहिविबुधसुरतरुसुमनसुजान॥चौ॥कुअरिकुअरिकल ७३
भावरिदेही॥नयनलाभसबसादरलेही॥जाइनबरनिमनोहरजोरी॥जोउपमाकछुकहौसोथोरी॥रामसीयसुंदरपरिछाही॥जगमगातिमनिषंभ

न्हिमाही॥मनहु मदनरतिधरिवहुरूपा॥देषतरामविवाहअनूपा॥दरसलालसासकुचनथोरी॥प्रगटतदुरतवहोरिवहोरी॥भएमगनसवदे
षनहारे॥जनकसमानअपानविसारे॥प्रमुदितमुनिन्हभावरीफेरी॥नेगसहितसवरीतिनिवेरी॥रामसीयसिरसेंदुरदेही॥सोभाकहिनजातिविधिकेही॥
अरुनपरागजलजभरिनीके॥ससिहिभूषअहिलोभअमीके॥वहुरिवशिष्टदीन्हिअनुशासन॥वरदुलहनिवैठेएकआसन॥छं॥वैठेवरासनराम
जानकिमुदितमनदशरथभए॥तनपुलकपुनिपुनिदेषिअपनेसुकृतसुरतरुफलनए॥भरिभवनरहाउछाहरामविवाहभासवहीकहा॥किहिभातिव
रविसरातिरसनाएकयहमंगलमहा॥तवजनकपाइवशिष्टआयसुव्याहसाजुसवारिकै॥मांडवीश्रुतिकीरतिउर्मिलासवकुवरिलइहंकारिकै॥
कुशकेतुकंन्याप्रथमजोवनशीलसुखसोभामई॥सवरीतिप्रीतसमेतकरिसोव्याहिनृपभरतहिदई॥जानकीलघुभगिनीसकलसुंदरिशिरो
मनिजानकै॥सोजनकदीनीव्याहलषनहिसकलविधिसनमानिकै॥जेहिनामश्रुतकीरतिसुलोचनिसुमुखसवगुनआगरी॥सोदईरिपुसू
दनहिभूपतिरूपशीलउजागरी॥अनुरूपवरदुलहिनिपरस्परलषिसकुचिहियहरषही॥सवमुदितसुंदरतासराहहिसुमनसुरगनवरषहि॥
सुंदरीसुंदरवरन्हसहसवएकमंडपसाजही॥जनजीवउरचारिउअवस्थाविभुन्हसहितविराजही॥दो॥मुदितअवधिपतिसकलसुतवधुन्हसमे
तनिहारि॥जनुपायेमहिपालमनिक्रियन्हसहितफलचारि॥चौ॥जसिरघुवीरव्याहुविधिवरनी॥सकलकुवरव्याहेतिहिकरनी॥कहिनजाइकछुदा
इजभूरी॥रहाकनकमनिमंडपपूरी॥कंवलवसनविचित्रपटोरे॥भातिभातिवहुमोलनथोरे॥गजरथतुरगदासअरुदासी॥धेनुअलंकृतकामदुहासी॥

बा॰का॰ बस्त्र अनेक करि येकि मिले षा॥ कहि न जाइ जा नहि जिन्ह देषा॥ लोकपाल अवलोकि सिहाने॥ लीन्ह अवधिपति सब सुख माने॥ दीन्ह जाच
७४ कहि जो जिहि भावा॥ उबरा सो जनवासहि आवा॥ तब कर जोरि जनक मृदु वानी॥ बोले सब बरात सनमानी॥ छं॥ सनमानि सकल बरात आदर
दान बिनय बडाइ कै॥ प्रमुदित महामुनि हृंद वंदे पूजि प्रेम लडाय कै॥ सिर नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट किए॥ सुर साधु चाहत भाव
सिंधु कि तोष जल अंजलि दिए॥ कर जोरि जनक बहोरि बंधु समेत कौशलराय सौ॥ बोले मनोहर बयन सनि सनेह सील सुभाय सौ॥ सनबंध
राजन रावरे हम बडे अब सब बिधि भए॥ एहि राज साज समेत सेवक जानि बे बिनु अथ लये॥ ए दारिका परिचारिका करि मानबी करुनामई
अपराध छमबो बोलि पठए बहुत हौ ढीठी दई॥ पुनि भानकुल भूषन सकल सनमान निधि समधी किए॥ कहि जा ति नहि बिनती परस्पर
प्रेम परिपूर न हिए॥ बृंदारका गन सुमन बरिसहि राव जनवासहि चले॥ दुंदभी जयधुनि बेदधुनि नभ नगर कौतुहल भले॥ तब सखी मंगल(
गान करत मुनीस आयसु पाइ कै॥ दूलह दुलहिनि सहित सुंदर चली कोहबर ल्याइ कै॥ दो॥ पुनि पुनि रामहि चितब सिय सकुचति मन सकुचै न राम
हरत मनोहर मीन छबि प्रेम पियासे नैन॥ चौ॥ स्याम शरीर सुभाय सुहावन॥ सोभा कोटि मनोज लजावन॥ जावक जुत पद कमल सुहाए॥ मुनि मन(७४
मधुप रहत जिन्ह छाए॥ पीत पुनीत मनोहर धोती॥ हरति बाल रबि दामिनि जोती॥ कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर॥ बाहु बिशाल बिभूषन सुंदर॥(
पीत जनेउ महाछबि देई॥ कर मुद्रिका चोरि चित लेई॥ सोहत ब्याह साज सब साजे॥ उर आयत बर भूषन राजे॥ पियर उपरना कांषा सोती॥ दुहु आ

चरन्हिलगेमनमोती॥नयनकमलकलकुंडलकाना॥वदनसकलसौंदर्यनिधाना॥सुंदरभ्रकुटिमनोहरनासा॥भालतिलकरुचिरतानिवा
सा॥सोहतमोरमनोहरमाथे॥मंगलमयमुकतामनिगाथे॥छं॥गाथेमहामनिमौरमंजुलअंगसवचितचोरही॥पुरनारिलाजनिवारिवरहिविलो
किसवतिनतोरही॥मनिवसनभूषनवारिआरतिकरहिमंगलगावही॥सुरसुमनवरिसहिसूतमागधवंदिसुजससुनावही॥कोहवरहिआ
नेककुवरिसुआसिनिन्हसुखपाइकै॥अतिप्रीतिलौकिकरीतिलागीकरनमंगलगाइकै॥लहकौरिगौरिसिषावरामहिसीयसनसारदकेहै
रनिवासुहासुविलाससरसवसजन्मकोफलसवलहै॥निजपानिमनमहुदेषिप्रतिमूरतिसरूपनिधानकी॥चालतिनभुजवल्लीविलोकनिविरहवस
भयजानकी॥कौतुकविनोदप्रमोदप्रेमनजाइकहिजानहिअली॥वरकुवरसुंदरसकलसखीलवाइजनवासेहिचली॥तिहिसमयसुनियेअसीस
तहातहानगरनभआनंदमहा॥चिरजियहुजोरीचारुचारिउमुदितमनसवहीकहा॥जोगींद्रसिद्धमुनीसदेवविलोकिप्रभुदुंदुभीहनी॥चलेहरष
षिवरषिप्रसूननिजनिजलोकजयरघुकुलमनी॥दो॥सहितवधूटिन्हकुवरसवतवआएपितुपास॥सोभामंगलमोदभरिउमगेजनुजनवास॥
चौ॥पुनिजिवनारिभईवहुभाती॥पठएजनकवोलाइवराती॥परतपावडेवसनअनूपा॥सुतन्हसमेतगवनकियोभूपा॥सादरसवकेपाइपषा
रे॥यथाजोगपीढनवैठारे॥धोएजनकअवधपतिचरना॥सीलसनेहुजाइनहिवरना॥वहुरिरामपदपंकजधोए॥जेहरहृदयकमलमहु
गोए॥धोएजनकचरननिजपानी॥आसनउचितसवहिनृपदीन्हे॥वोलिसूपकारीसवलीन्हे॥सादरलगेपरनेपनवारे॥कनककीलम

ब्रा॰ कां॰ निपानसवारे॥दो॰॥ सूपोदनसुरभीसरपिसुंदरस्वादपुनीत॥छिनमहुसवकेपरसिगेचतुरसुआरविनीत॥चौ॰॥ पंचकवलकरिजेवनलागे॥गारिगा
७५ नसुनिअतिअनुरागे॥भातिअनेकपरेपकवाने॥सुधासरिसनहिजाइवषाने॥परसनलगेसुआरसुजाना॥विंजनविविधनामकोजाना॥
चारिभांतिभोजनविधिगाई॥एकएकविधिवरनिनजाई॥छरसरुचिरव्यंजनवहुभाती॥एकएकरसअगनितजाती॥जेवतदेहिमधुरिधुनिगा-
री॥लैलैनामपुरुषअरुनारी॥समयसुहावनिगारिविराजा॥हसतरावसुनिसहितसमाजा॥एहिविधिसवहीभोजनकीन्हा॥आदरसहित
आचमनदीन्हा॥दो॰॥ देइपानपूजेजनकदशरथसहितसमाज॥जनवासेहिगवनेमुदितसकलभूपसिरताज॥चौ॰॥ नितनूतनमंगलपुरमा
ही॥निमिषसरिसदिनजामिनिजाही॥वडेभोरभूपतिमनिजागे॥जाजकगनगुनगावनलागे॥देषिकुवरवरवधूनसमेता॥किमिकहिजात
मोदमनजेता॥प्रातक्रिपाकरिगेगुरपाही॥महाप्रमोदप्रेममनमाही॥करिप्रनामपूजाकरजोरी॥वोलेगिराअमियजनुवोरी॥तुम्हरीक्रपासुनहुमु
निराजा॥भएउंआजमैपूरनकाजा॥अवसवविप्रवुलाइगोसाई॥देहुधेनुसवभातिवनाई॥सुनिगुरकरिमहिपालवडाई॥पुनिपठएमुनिवृंदवोलाई॥ राम
दो॰॥ वामदेवअरुदेवऋषिवालमीकजावालि॥आएमुनिवरनिकरतवकौशिकादिमुनिशालि॥चौ॰॥ दंडप्रनामसवहिनृपकीन्हे॥पूजिसप्रे ७५
मवरासनदीन्हे॥चारिलछवरधेनुमगाई॥कामसुरभिसमशीलसुहाई॥सवविधिसकलअलंक्रतकीन्ही॥मुदितमहिपमहिदेवनदीन्ही॥करत
विनयवहुविधिनरनाहू॥लहेउंआजजगजीवनलाहू॥पाइअसीसमहीपअनंदा॥लियेवोलिपुनिजाचकवृंदा॥कनकवसनमनिहयगज-

सोइदिन॥ दिए सुनि रुचि रविकुल नंदन॥ चले पढत गावत गुन गाथा॥ जय जय जय दिनकर कुल नाथा॥ एहि विधि राम विवाह उछाहू॥ शकै न
वरनि सहस मुख जाहू॥ दो॥ वार वार कौशिक चरन सीस नाइ कह राव॥ इह सुख सव मुनि राज तव कृपा कटाछ प्रभाव॥ चौ॥ जनक सनेहु सील क
रतूती॥ नृप सव रात सराह विभूती॥ दिन उठि विदा अवधिपति मागा॥ राषहि जनक सहित अनुरागा॥ नित नूतन आदर अधिकाई॥ दिन प्रति सहस भांति
पहुनाई॥ नित नव नगर अनंद उछाहू॥ दशरथ गवन साहाय न काहू॥ वहुत दिवस वीते एहि भांती॥ जनु सनेह रज वंधे वराती॥ कौशिक शतानंद
तव जाई॥ कहा विदेह नृपहि समुझाई॥ अव दशरथ कहु आयसु देहु॥ यद्यपि छाडि न सकहु सनेहु॥ भलहि नाथ कहि सचिव वोलाए॥ कहि जय जीव
सीस तिन्ह नाए॥ दो॥ अवधनाथ चाहत चलन भीतर करहु जनाव॥ भए प्रेमवस सचिव सुनि विप्र सभासद राव॥ चौ॥ पुरवासी सुनि चलहि वराता
वूझत विकल परस्पर वाता॥ सत्य गवन सुन सव विलषाने॥ मनहु सांझ सरसिज सकुचाने॥ जहा जहा आवत वसे वराती॥ तहा तहा सीध चला वहु
भांती॥ विविध भांति मेवा पकवाना॥ भोजन साजन जाय वषाना॥ भरि भरि वसह अपार कहारा॥ पठए जनक अनेक सुचारा॥ तुरग लाष रथ सहस प
चीसा॥ सकल सवारे नष अरु सीसा॥ मत्त सहस दश सिंधुर साजे॥ जिन्हहि देषि दिशिकुंजर लाजे॥ कनक वसन मनि भरि भरि जाना॥ महषी धेनु वस्तु
विधि नाना॥ दो॥ दाइज अमित न शकिय कहि दीन्ह विदेह वहोरि॥ जो अवलोकत लोकपति लोक संपदा थोरि॥ चौ॥ सव समाजु एहि भाति वनाइ॥ ज
नक अवधपुर दीन्ह पठाई॥ चलहि वरात सुनत सव रानी॥ विकल मीनगन जनु लघु पानी॥ पुनि पुनि सीय गोद करि लेही॥ देइ असीस सिषावन दे

वा०कां ७६

ही॥ होइहु संतत पियहि पियारी॥ चिर अहिवात असीस हमारी॥ सासु ससुर गुर सेवा करहू॥ पति रुष लखि आयसु अनुसरहू॥ अति सनेह वस सखी
सयानी॥ नारि धरम सिषवहि मृदु वानी॥ सादर सकल कुवरि समुझाई॥ रानिन्ह वार वार उर लाई॥ वहुरि वहुरि भेटहि महतारी॥ कहहि विरंचि रची
कत नारी॥ दो॥ तिहि अवसर भाइन्ह सहित राम भानु कुल केतु॥ चले जनक मंदिर मुदित विदा करावन हेत॥ चौ॥ चारिउ भाई सुभाइ सुहाए॥ नग
र नार नर देषन धाए॥ कोउ कहै चलन चहत हहि आजू॥ कीन्ह विदेह विदा कर साजू॥ लेहु नयन भरि रूप निहारी॥ प्रिय पाहुने भूप सुत चारी॥
को जानै किहि सुकृत सयानी॥ नयन अतिथि कीन्हे विधि आनी॥ मरन शील जिमि पाव पिऊषा॥ सुरतरु लहै जन्म कर भूषा॥ पाव नारकी हरिप
दु जैसे॥ निरषि राम शोभा उर धरहू॥ निज मति फनि मूरति मन करहू॥ एहि विधि सवहि नयन फल देता॥ गए कुवर सव राजनिकेता॥ दो॥ रूप सिंध

इन्ह कर दरसनु हम कहँ तैसे

सव वंधु लषि हरषि उठे रनिवासु॥ करहि निछावरि आरती महा मुदित मन सासु॥ चौ॥ देषि राम छवि अति अनुरागी॥ प्रेम विवस पुनि पुनि पद
लागी॥ रही न लाज प्रीति उर छाई॥ सहज सनेहु वरनि किमि जाई॥ भाइन्ह सहित उवटि अन्हवाए॥ छरस असन अति हेतु जेवाए॥ वोले राम सु
अवसर जानी॥ शील सनेहु सकुच मय वानी॥ राव अवधपुर चहत सिधाए॥ विदा होन हम इहा पठाए॥ मातु मुदित मन आयसु देहु॥ वालक जानि
करव नित नेहु॥ सुनत वचन विलषेउ रनिवासु॥ वोलि न सकै प्रेम वस सासु॥ हृदय लगाइ कुवर सव लीन्ही॥ पतिहि सोपि विनती अति कीन्ही॥ छं॥
करि विनय सिय रामहि समरपि जोरि कर पुनि पुनि कहै॥ वलि जाउ तात सुजान तुम्ह कहु विदित गति सव की अहै॥ परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रान

राम ७६

प्रियसियजानवी॥तुलसीसुशीलसनेहुलषिनिजकिंकिरीकरिमानवी॥सो॥तुम्हपरपूरनकामजानिसिरोमनिभावप्रिय॥जनुगुनगाह
न करामदोषदलनकरनायतन॥चौ॥असकहिरहीचरनगहिरानी॥प्रेमपंकजनुगिरासमानी॥सुनिसनेहसानीवरवानी॥वहुविधिरामसासुस
नमानी॥रामविदामागतकरजोरी॥कीन्हप्रनामवहोरिवहोरी॥पाइअसीसवहुरिसिरुनाई॥भाइन्हसहितचलेरघुराई॥मंजुमधुरमूरतिउरआ
नी॥भइसनेहसिथिलसवरानी॥पुनिधीरजधरिकुवरिहंकारी॥वारवारभेटहिमहितारी॥पहुचावहिफिरिमिलहिवहोरी॥वढीपरस्परप्रीतनथोरी॥
पुनिपुनिमिलतसषिन्हविलगाई॥वालवछजिमिधेनुलवाई॥दो॥प्रेमविवसनरनारिसवसषिनसहितरनिवासु॥मानहुकीन्हविदेहपुरक
रुनाविरहनिवासु॥चौ॥सुकसारिकाजानकीज्याए॥कनकपिंजरन्हिराषिपढाए॥व्याकुलकहहिकहावैदेही॥सुनधीरजपरिहरैनकेही॥भए
विकलषगमृगजेहिभाती॥मनुजदशाकैसेकहिजाती॥वंधसमेतजनकतवआए॥प्रेमउमगिलोचनजलछाए॥सीयविलोकिधीरताभागी॥
रहेकहावतपरमविरागी॥लीन्हिरावउरलाइजानकी॥मिटीमहामरजादज्ञानकी॥समुझावतसवसचिवसयानै॥कीन्हविचारअनअवसर
जाने॥वारहिवारसुताउरलाई॥सजिसुंदरपालकीमगाई॥दो॥प्रेमाविवसपरिवारसवजानिसुलगननरेस॥कुवरिचढाईपालकिन्हसुमरेसिद्धि
गनेस॥चौ॥वहुविधिभूपसुतासमुझाई॥नारिधरमकुलरीतिसिषाई॥दासीदासदेषेवहुतेरे॥सुचिसेवकजेप्रियसियकेरे॥सीयचलतव्याकुलपुरवासी
होहिसगुनसुभमंगलरासी॥भूसुरसचिवसमेतसमाजा॥संगचलेपहुचावनराजा॥समयविलोकिवाजनेवाजे॥रथगजवाजिवरातिन्हसाजे॥सुनिगह

बा० कां गहे बाजने बाजे ॥ दशरथ विप्र बोलि सब लीन्हे ॥ दान मान परिपूरन कीन्हे ॥ चरन सरोज धूरि धरि सीसा ॥ मुदित महीपति पाई असीसा ॥ सुमिरि ग
७७ जानन कीन्ह पयाना ॥ मंगल मूल सगुन भए नाना ॥ दो ॥ सुर प्रसून्न वरषहि हरषि करहिं अपछरा गान ॥ चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइ
निसान ॥ चौ ॥ नृप करि विनय महाजन फेरे ॥ सादर सकल मांगने टेरे ॥ भूषन बसन बाजि गज दीन्हे ॥ प्रेम पोषि ठाढे सब कीन्हे ॥ बार बार विरुदावलि भा
षी ॥ फिरे सकल रामहि उर राषी ॥ बहुरि बहुरि कौशलपति कहहीं ॥ जनक प्रेम बस फिरै न चहहीं ॥ पुनि कहि भूपति बचन सुहाए ॥ फिरिय महीश दूरि बडि
आए ॥ राव बहोरि उतर भए ठाढे ॥ प्रेम प्रवाह विलोचन बाढे ॥ तब विदेह बोले कर जोरी ॥ बचन सनेह सुधा जनु बोरी ॥ करो कवन विधि विनय बनाई ॥
महाराज मोहि दीन्हि बडाई ॥ दो ॥ कौशलपति समधी सजन सनमाने सब भांति ॥ मिलन परस्पर विनय अति प्रीति न हृदय समाति ॥ चौ ॥ मुनि मं
डलिहि जनक सिर नावा ॥ आसिरवाद सबहि सन पावा ॥ सादर पुनि भेटे जामाता ॥ रूप शील गुन निधि सब भ्राता ॥ जोरि पंकरुह पानि सुहाए ॥ बोले
बचन प्रेम जनु जाए ॥ राम करौं किहि भांति प्रसंसा ॥ मुनि महेस मन मानस हंसा ॥ करहि जोग जोगी जिहि लागी ॥ कोह मोह ममता मद त्यागी ॥ व्या राम
पक ब्रह्म अलष अविनासी ॥ चिदानंद निर्गुन गुन रासी ॥ मन समेत जेहि जान न बानी ॥ तरकि न सकहि सकल अनुमानी ॥ महिमा निगम नेति क ७७
हि कहई ॥ जो तिहु काल एकरस रहई ॥ दो ॥ नयन विषय मो कह भयेउ सो समस्त सुख मूल ॥ सब इ सुलभ जग जीव कहु भए ईश अनुकूल ॥ चौ ॥ स
बहि भांति मोहि दीन्हि बडाई ॥ निज जनु जानि लीन्ह अपनाई ॥ होहि सहस दश सारद शेषा ॥ करहि कलप कोटिक भरि लेषा ॥ मोर भाग्य राउर गुन गाथा ॥ क

हिनसिराहिसुनकु रघुनाथा॥ मैकछुकहौएकवलमोरे॥ तुम्हरीऊकृसनेहसुठियोरे॥ वारवारमागौकरजोरे॥ मनुपरिहरैचरनजनिभोरे॥ ४
मुनिवरवचनप्रेमजुपोषे॥ सरनकामरामपरितोषे॥ करिवरविनयससुरसनमाने॥ पितुकौशिकवशिष्टसमजाने॥ विनतीवहुतभरतसनकीन्ही
मिलिसप्रेमपुनिआसिषदीनी॥ दो॥ मिलेलषनरिपुसूदनहिदीन्हिआसीसमहीस॥ भएपरस्परप्रेमवसफिरिफिरिनावहिसीस॥ चौ॥ वारवा
रकरिविनयवडाई॥ रघुपतिचलेसंगसवभाई॥ जनकगहेकौशिकपदजाई॥ चरनरेनशिरनयनन्हिलाई॥ सुनिमुनीशवरदरसनतोरे॥ अग
मनकछुप्रतीतिमनमोरे॥ जोसुषसुजसलोकपतिचहही॥ करतमनोरथसकुचनअहही॥ सोसुखसुजससुलभमोहिस्वामी॥ सवसिधितवदृ
रसनअनुगामी॥ कीन्हिविनयपुनिपुनिसिरुनाई॥ फिरेमहीसआसिषापाई॥ चलीवरातनिसानवजाई॥ मुदितछोटवडसवसुखदाई॥ रा
महिनिरषिग्रामनरनारी॥ पाइनयनफलहोहिसुखारी॥ दो॥ वीचवीचवरवासकरिमगलोगन्हसुखदेत॥ अवधसमीपपुनीतदिनपहुची
आइजनेत॥ चौ॥ हनेनिशानपनववरवाजे॥ भेरिशंखधुनिहयगजगाजे॥ झांझिनफीरीडिमडिमीसुहाई॥ सरसरागवाजहिसहनाई॥ पुरज
नआवतजानिवराता॥ मुदितसकलपुलकावलिगाता॥ निजनिजसुंदरसदनसवारे॥ हाटवाटचौहटपुरद्वारे॥ गलीसकलअरगजासिचाई
जहातहाचौकैचारुपुराई॥ वनावजारनजाइवषाना॥ तोरनकेतुपताकविताना॥ सफलपुंगफलकदलिरसला॥ रोपेवकुलकदंवतमाला॥ लगे
सुभगतरुपरसतधरनी॥ मनिमयआलवालकलकरनी॥ दो॥ विविधभांतिमंगलकलसगहगहरचेसवारि॥ सुरब्रह्मादिसिराहिसवरघुवरपु

बा०कां० रीनिहारि॥चौ॥भूपभवनतिहि अवसरसोहा॥रचनादेषिमदनमनमोहा॥मंगलसगुनमनोहरताई॥रिधिसिधिसुरवसंपदासुहाई॥जनुउछा
१८ हमवसहजसुहाए॥तनुधरिधरिदशरथग्रहछाए॥देषनहेतुरामवैदेही॥कहहुलालसाहोइनकेही॥जूथजूथमिलिचलीसुआसिनि॥निज
छबिनिदरहिमदनविलासनि॥सकलसुमंगलसजेआरती॥गावहिजनुवहुवेषभारती॥भूपतिभवनकोलाहलहोइ॥जाइनवरनिसमउसु
रवसोई॥कौशल्यादिराममहतारी॥प्रेमविवसतनदशाविसारी॥दो॥दिएदानविप्रङ्कविपुलसजिगनेसपुरारि॥प्रमुदितपरमदरिद्रजनुपाइ
पदारथचारि॥चौ॥मोदप्रमोदविवससवमाता॥चलहिनचरनसिथलभयेगाता॥रामदरसहितअतिअनुरागी॥परिछनसाजसवलागी॥विविधवि॰ सजन॥
धानवाजनेवाजे मंगलमुदितसुमित्रासाजे॥हरददूवदधिपल्लवफूला॥पानपुंगफलमंगलमूला॥अक्षतअंकुररोचनलाजा॥मंजुलमंजरितुल
सिविराजा॥छुहेपुरटघटसहजसुहाए॥मदनसकुनजनुनीडवनाए॥सुमनसुगंधनजाहिवषाना॥मंगलसकलसजहिसवराना॥रचीआ
रतीवहुतविधाना॥मुदितकरहिकलमंगलगाना॥दो॥कनकथारभरिमंगलन्हिकमलकरनि लिएमातु॥चलीमुदितपरिछनकरनपुलक राम
प्रफुल्लितगात॥चौ॥धूपधूमनभमेचकुभयेउ॥सावनघनघमंडजनुठयेउ॥सुरतरुसुमनमानसुरवरषहि॥मनहुवलाहकअवलिमन १८
करषहि॥मंजुलमनिमयवंदनवारे॥मनहुपाकरिपुचापसवारे॥प्रगटहिदुरहिअटन्हपरभामिनि॥चारुचपलजनुदमकहिदामिनि॥दुंदुभि॰
धुनिघनगरजनघोरा॥जाचककचातककदादुरमोरा॥सुरसुगंधसुचिवरषहिवारी॥सुखीसकलशशिपुरनरनारी॥समयजानिगुरुआयसदीन्हा॥

पुरप्रवेशरघुकुलमनिकीन्हा॥ सुमरिशंभुगिरिजागनराजा॥ मुदितमहीपतिसहितसमाजा॥ दो॥ होहिसगुनवरषहिसुमनसुरदुंदुभीव
जाइ॥ विबुधवधूनाचहिमुदितमंजुलमंगलगाइ॥ चौ॥ मागधसूतवंदिनटनागर॥ गावहिजसतिहुलोकउजागर॥ जयधुनिविमलवेदव
रवानी दशादिशिसुनियसुमंगलसानी॥ विपुलवाजनेवाजनलागे॥ नभसुर [illegible] नगरलोकअनुरागे॥ वनेवरातीवरनिनजाई॥ महामु
दितमनसुखनसमाई॥ पुरवासिनजवरावजोहारे॥ देषतरामहिभएसुखारे॥ करहिनिछावरिमनिगनचीरा॥ वारिविलोचनपुलकसरीरा
हि आरतिकरहिमुदितपुरनारी॥ हरषिनिरषिकुवरवरचारी॥ शिविकासुभगओघारउघारी॥ देषिदुलहिनिन्हहोहिसुखारी॥ दो॥ एहिविधिस
वहीदेतसुषआएराजदुआर॥ मुदितमातुपरिछनकरहिवधून्हसमेतकुमार॥ चौ॥ करहिआरतीवारहिवारा॥ प्रेमप्रमोदकहैकोपारा॥ भूषनम
निपटनानाजाती॥ करहिनिछावरिअगिनितभांती॥ वधूसमेतदेषिसुतचारी॥ परमानंदमगनमहतारी॥ पुनिपुनिसीयरामछविदेखी॥ मुदितस
फलजगजीवनलेखी॥ सखीसीयमुखपुनिपुनिचाहहि॥ गानकरहिनिजसुकृतसराहहि॥ वरषहिसुमनछिनेछिनदेवा॥ नाचहिगावहिलावहिसेवा
देखिमनोहरचारिउजोरी॥ सारदउपमासकलटटोरी॥ देतनवनहिनिपटलघुलागी॥ एकटकरहीरूपअनुरागी॥ दो॥ निगमरीतिकुलरीतिकरि
अरघपावडेदेत॥ वधुनसहितसुतपरिछसवचलीलवाइनिकेत॥ ३८८॥ चौ॥ चारिसिंहासनसहजसुहाए॥ जनुमनोजनिजहाथवनाए॥ तिन्हपरकुवरि
कुवरिवैठारे॥ सादरपायपुनीतपखारे॥ धूपदीपनैवेद्यवेदविधि॥ पूजेवरदुलहनिमंगलनिधि॥ वारहिवारआरतीकरही॥ व्यजिनचारुचमरसिरढरही

बा॰का॰ ७९ वत्सा अनेक निछावरि होंही॥भरी प्रमोद मातु सब सोही॥पावा परमतत्व जनु जोगी॥अम्रत लहेउ जनु संतत रोगी॥जन्म रंक जनु पारस पावा॥अंध

हि लोचनु लाभ सुहावा॥मूक वदन जनु सारद छाई॥मानहुं समर सूर जय पाई॥दो॥एहि सुख तें शत कोटि गुन पावहि मातु आनंद॥भाइन्ह सहित विवा

हि घर आए रघुकुल चंद॥३५०॥चौ॥दोहा॥लोकरीति जननी करहि वर दुलहिनि सकुचाहि॥मोद विनोद विलोकि वड राम मनहि मुसुकाहि॥३५१॥चौ॥

देव पितर सजे विधि नीकी॥पूजी सकल वासना जी की॥सवहि वंदि मागहि वरदाना॥भाइन्ह सहित राम कल्याना॥अंतरहित सुर आसिष देही॥मुदित मातु

अंचल भरि लेही॥भूपति वोलि वरातिन्ह लीन्हे॥जान वसन मनि भूषन दीन्हे॥आयसु पाइ राखि उर रामही॥मुदित गए सव निज निज धामही॥पुर नर ना(

रि सकल पहिराए॥घर घर वाजन लगे वधाए॥जाचक जन जाचहि जोइ जोई॥प्रमुदित राउ देहि सोइ सोई॥सेवक सकल वराती य नाना॥पूरन किए दान स

नमाना॥दो॥देहि असीस जोहारि सव गावहि गुन गन नाथ॥तव गुर भूसुर सहित ग्रह गवनु कीन्ह रघुनाथ॥३५२॥चौ॥जो वसिष्ट अनुशासन दीन्हा॥

लोक वेद विधि सादर कीन्हा॥भूसुर भीर देखि सव रानी॥सादर उठी भाग वड जानी॥पाय पखारि सकल अन्हवाए॥पूजि भली विधि भूप जेवाए॥आदर दा(

न प्रेम परितोषे॥देत असीस चले मन पोषे॥वहु विधि कीन्ह गाधिसुत पूजा॥नाथ मोहि सम धन्य न दूजा॥कीन्ह प्रसंसा भूपति भूरी॥रानिन्ह सहित ली राम ७९

न्ह पग धूरी॥भीतर भवन दीन्ह वर वासू॥मन जोगवत रह न्रप रनिवासू॥पूजे गुर पद कमल वहोरी॥कीन्ह विनय उर प्रीति न थोरी॥दो॥वधुन्ह समे

त कुवर सव रानिन्ह सहित महीस॥पुनि पुनि वंदहि गुर चरन देहि असीस मुनीश॥३५३॥चौ॥विनय कीन्ह उर अति अनुरागे॥सुत संपदा राखि सव

आगे॥नेगमागिमुनिनायकलीन्हा॥आसीरवादबहुतविधिदीन्हा॥उरधरिरामहिसीयसमेता॥हरषिकीन्हगुरगवननिकेता॥विप्रवधूस
वभूपवोलाए॥चैलचारुभूषनपहिराए॥वहुरिवोलाइसुआसिनिलीन्ही॥रुचिविचारिपहिरावरिदीन्ही॥नेगीनेगजोगसवलेही॥रुचिअनुरूपभू
पमनिदेही॥एयपाहुनेप्रज्यजेजाने॥भूपतिभलीभांतिसनमाने॥देवदेषिरघुवीरविवाहू॥वरषिप्रसूनप्रसंसिउछाहू॥दो॥चलेनिसानवजाइसु
रनिजनिजपुरसुखपाइ॥कहतपरसपररामजसप्रेमनहृदयसमाइ॥३५४॥चौ॥सवविधिसवहिएजनरनाहू॥रहाहृदयभरिपूरिउछाहू॥जहंर
निवासतहांपगुधारे॥सहितवधूटिन्हकुंवरहंकारे॥लिएगोदकरिमोदसमेता॥कोकहिसकैभएउसुखजेता॥वधुनसमेतगोदवैठारी॥वारवारहि
यहरषिदुलारी॥देषिसमाजमुदितरनिवासू॥सवकेउरआनंदकियवासू॥कहेउभूपजिमिभएउविवाहू॥सुनिसुनिहरषहोतसवकाहू॥जनक
राजगुनसीलवडाई॥प्रीतिरीतिसंपदासुहाई॥वहुविधिभूपभाटजिमिवरनी॥रानीसवप्रमुदितसुनिकरनी॥दो॥सुतन्हसमेतनहाइनृपवोलिवि
प्रगुरजाति॥भोजनकीन्हअनेकविधिघरीपांचगइराति॥३५५॥चौ॥मंगलगानकरहिवरभामिनि॥भइसुखमूलमनोहरजामिनि॥अचैपानस
वकाहूपाए॥स्रकसुगंधभूषितछविछाए॥रामहिदेषिरजायसुपाई॥निजनिजभूवनचलेसिरुनाई॥प्रेमप्रमोदविनोदवडाई॥समउसमाजम
नोहरताई॥कहिनसकहिश्रुतिसारदसेसू॥वेदविरंचिमहेसगनेसू॥सोमैकहौकवनविधिवरनी॥भूमिनागसिरधरैकिधरनी॥नृपसवभांतिसवहि
सनमानी॥कहिमृदुवचनवोलाइरानी॥वधूलरिकनीपरघरआई॥राषहुनैनपलककीनाई॥दो॥लरिकाश्रमितउनीदवससयनकरावहु

वा॰कां जाइ॥असकहिगएविश्रामग्रहरामचरनचितलाइ॥३५६॥चौ॥भूपवचनसुनिसहजसुहाए।जटितकनकमनिपलँगडसाए॥सुभगसुरभिपय
८० फेनसमाना॥कोमलकलितसुपेतिनाना॥उपवरहनवरवरनिनजाही॥स्रकसुगंधमनिमंदिरमाही॥रतनदीपसुठिचारुचदोवा॥कहतनवनैजान
जिहिजोवा॥सेजरुचिररचिरामउठाए॥प्रेमसमेतपलंगपौढाए॥आग्यापुनिपुनिभाइनदीन्ही॥निजनिजसेजसयनतिन्हकीन्ही॥देषिस्यामम
दुमंजुलगाता॥कहहिसप्रेमवचनसवमाता॥मारगजातभयावनिभारी॥केहिविधितातताडिकामारी॥दो॥घोरनिशाचरविकटभटसमरगनहिन॥
हिकाहु॥मारेसहितसहायकिमिखलमारीचसुवाहु॥३५७॥चौ॥मुनिप्रसादवलिताततुम्हारी॥ईशअनेककरवरैटारी॥मखरषवारीकरिदुहुंभाई॥
गुरुप्रसादसवविद्यापाई॥मुनितियतरीलगतपगधूरी॥कीरतिरहीभुवनभरिपूरी॥कमठपीठिपविकूटकठोरा॥नृपसमाजमहंशिवधनुतोरा॥विश्व
विजयजसुजानकिपाई॥आएभवनव्याहिसवभाई॥सकलअमानसकरमतुम्हारे॥केवलकौशिककृपासुधारे॥आजुसुफलजगजनमहमारा॥दे
षितातविधुवदनतुम्हारा॥जोदिनगएतुमहिविनुदेषे॥तेविरंचिजनिपारहिलेषे॥दो॥रामप्रतोषीमातुसवकहिविनतीवरवैन॥सुमिरिशंभुगुरविप्रपद राम
किएनीदवसनैन॥३५८॥चौ॥नीदहूवदनसोहसुठिलोना॥मनहुंसांझसरसिरुहसोना॥घरघरकरहिजागनरनारी॥देहिपरसपरमंगलगारी॥पु ८०
रीविराजतिराजतिरजनी॥रानीकहहिविलोकहुसजनी॥सुंदरवधुसासुलैसोई॥फनिकन्हजनुसिरमनिउरगोई॥प्रातपुनीतकालप्रभुजागे॥अरुन
चूडवरवोलनलागे॥वंदीमागधन्हिगुनगनगाए॥पुरजनद्वारजोहारनआए॥वंदिविप्रसुरगुरपितुमाता॥पाइअसीसमुदितसवभ्राता॥जननीन्ह॥

[illegible] सादर बदन निहारे॥ भूपति संग द्वार पगु धारे॥ दो॥ कीन्ही सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ॥ प्रातक्रिया करि तात पहि आए चारिउ भाइ॥३
९९॥ चौ॥ भूप बिलोकि लिए उर लाई॥ बैठे हरषि रजायसु पाई॥ देषि राम सब सभा जुडानी॥ लोचन लाभु अवधि अनुमानी॥ पुनि वसिष्ट मुनि कौसि
क आए॥ सुभग आसनन्हि मुनि बैठाए॥ सुतन्ह समेत पूजि पद लागे॥ निरषि राम दोउ गुर अनुरागे॥ कहहि वसिष्ट धरम इतिहासा॥ सुनहि म
हीस सहित रनिवासा॥ मुनि मन अगम गाधिसुत करनी॥ मुदित वसिष्ट विपुल बिधि बरनी॥ बोले बामदेव रिषि सोची॥ कीरति कलित लोक ति
हुं मांची॥ सुनि आनंद भयउ सब काहू॥ राम लषन मन अतिहि उछाहू॥ दो॥ मंगल मोद उछाह नित जाहि दिवस एहि भांति॥ उमगी अवधि आ
नंद भरि अधिक अधिक अधिकाति॥४००॥ चौ॥ सुदिन सोधि कल कंकन छोरे॥ मंगल मोद बिनोद न थोरे॥ नित नव सुख सुर देषि सिहांही॥
अवधि जन्म जाचहि विधि पांही॥ विस्वामित्र चलन नित चहही॥ राम सप्रेम विनय वस रहही॥ दिन दिन सयगुन भूपति राउ॥ देषि सराह महा
मुनि राउ॥ मागत विदा राउ अनुरागे॥ सुतन्ह समेत ठाढ भए आगे॥ नाथ सकल संपदा तुम्हारी॥ मै सेवक समेत सुत चारी॥ करब सदा ल[illegible]रिक
न पर छोहू॥ दरसन देत रहब मुनि मोहू॥ अस कहि राउ सहित सुत रानी॥ परे चरन मुख आव न बानी॥ दीन्ह असीस विप्र बहु भांती॥ चले सप्रीति क
हि यन हि जाती॥ राम सप्रेम संग सब भाई॥ आयसु पाइ फिरे पहुचाई॥ दो॥ राम रूप भूपति भगति ब्याह उछाह आनंद॥ जात सराहत मनहि मन मुदित
गाधिकुलचंद॥४०१॥ चौ॥ बामदेव रघुकुल गुर ज्ञानी॥ बहुरि गाधिसुत कथा वषानी॥ सुनि मुनि सुजसु मनहि मन राउ॥ वरनत आपन पु

प्रथम सोपान) बाल काण्ड

बा०कां० ८१

न्यप्रभाउ॥ बहुरे लोगरजायसु भयउ॥ सुतन्ह समेत नपति गृह गयउ॥ जहतहराम ब्याह सब गावा॥ सुजस पुनीत लोक तिहुं छावा॥ आये ब्या
ब्याहिराम घर जब तें॥ बसे आनंद अवध सब तब तें॥ प्रभु विवाह जस भए उछाहू॥ सकहि न बरनि गिरा अहि नाहू॥ कवि कुल जीवनु पावनु जा
नी॥ राम सीय जस मंगल षानी॥ तेहि ते मैं कछु कहा बषानी॥ करन पुनीत हेतु निज बानी॥ छंद॥ निज गिरा पावन करन कारन राम जस तुल
सी कह्यो॥ रघुवीर चरित अपार बारिधि पार कवि कौने लह्यो॥ उपवीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जो सादर गावही॥ वैदेहि राम प्रसाद ते जन स
र्वदा सुख पावही॥ सोरठा॥ सिय रघुवीर विवाह जे सप्रेम गावहि सुनहि॥ तिन्ह कहं सदा उछाह मंगलायतन राम जस॥ ४०२॥ इति श्रीरामचरि
त्रे मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने अविरल भक्ति संपादिनी नाम प्रथमो सोपानः समाप्तम्॥ ॥श्रीराम॥ संवत १८३५ आषाढ सुक्ल १२ भौमवार
लि० रामरत्न द्विजेन हंसदास वैस्नव पठनार्थं॥ ॥ ॥श्रीराम॥ ॥ ॥श्रीराम॥ ॥ ॥श्रीराम॥ ॥ ॥श्रीराम॥ ॥. ॥श्रीराम॥ ॥ ॥श्रीराम
रामायनमः॥ ॥ ॥रामायनमः॥ ॥ ॥रामायनमः॥ ॥ ॥रामायनमः॥ ॥ ॥रामायनमः॥ ॥ ॥रामायनमः॥ ॥ ॥रामायनमः राम ८१
राम॥राम
राम॥राम
रामायनमः॥रामायनमः॥रामायनमः॥रामायनमः॥रामायनमः॥रामायनमः॥रामायनमः॥रामायनमः॥रामायनमः॥रामजीसहाय॥श्रीराम